॥कवित्त॥सज्जनजेजगदीसरचे तिनकौ... ॥
९ ...वटै॥सीलसुभाउगहैंसरुजेंयतनु ऊपरकैहैं
द्रूहियेउकैपैटै॥नेहुकरैसुखरोगहरोऊनरूपक्लो
सुनक्योंहूघटै॥चोलकेरंगनिचो... नरगो... सोवृन
रपेफटैहूफटै॥... ॥ ... ॥कलकुचातनेहापियकेउ
ारकताअधिकार॥वहसाञवोरातुहै ... तनोउरउरज
...॥यहपरस्ताविककविकीउक्ति...नुसेनातिनिके
धतूरासीनोदोऊयेजरावतहैंसो...का॥यहनाइका
कसरसतुहै॥कोहुकविकसवाहिचखिकेसोतिनुकोदु
नेरविनिरखिजोईजतितरसतुहै...नेहै॥कवित॥ता
कोधतूरेतेसरसमदयहतोप्रतह्रै...तोजतिप्यारो
तुहै॥ताहिजवबाइतववोराईप्रकासे...तेवातैयहज
तयाहिजोईपरसतुहै॥...॥ ... ॥इ...रितोउरभै
पेरवूडेवेहरुजार॥कितेनञयेगुनज...तेसासउ
नेचढतोवार॥टीका॥यहपरस्तावि...तर॥टीका
...कि अन्याक्तिहूसभवे॥कवित्त॥येकन...नेक
सेचहलैंईभोंजिगयेइकवूडिगयेहैं॥येकवैञाति
तेनकीनलहीसुधियेकानिधीरजछोडिदयैजौं

जि नाइकानेरैनैनसेकैनेचन्हु
सों किना इकनेसेजो गुनतिने [illegible]
गुहेदे [illegible] दैसेयतिसें गुनते
तुननविलिनिरैं सोतुसरसातुई
[illegible] नहुकहिसातुसेहीसेंतवैनये
[illegible] तुहे [illegible] कोजेउच्चतिमुहेद
[illegible] तिपुक्कतिवैं नाकरनतुहे क
[illegible] जोनवे [illegible] नयहेवि
देखितातुहे [illegible] करतन
[illegible] तुगननलोगु तोनिरवोवैनि
[illegible] सपरत्वाविज
केदेयातुतिसेंनसवल्ल
[illegible] पुरो नतिनिनचुनेनहेहेनदें क
[illegible] जानविरिनवातजानननवकल
नितेनहे विपुरजागेनसेंसपातक
वैदेवानिनोहेजेसेवांधेनेननहें जर
नहोंवोनेनचनतुजरहेदेनबलाहेनुते
[illegible]
बोहुवेडनेहूसेवेन [illegible]
देरपेदेहिननेनकहेहुसानिनिहरेनेन
परल निननविकेडकि [illegible] जे
रचेहोंहिनाइवेनसेरहेसेपदेनवेहुना घ

हलोञ्चा ... सुसखीभाइको ... ॥

वित॥पीनपयोधरभूधरसेतियतोउरऊपरकेहैं
जेवे॥कोवासीहैपीयकेउरभामिनिसुंदररूपके
भूपतवे॥नेकविलोचनलोलभएनवजोवन
ज्योतिजगीयेसवे॥तेउकसेउरजातनहींपियकेउ
रतेंउकसांईसवे॥११॥दोहा॥वाढततोउरउरज
भरुभरुतरुनईविकासु॥वोऊनुसोतिनिकै
होयोग्यावतिसधीउसास॥टीका॥यहनाइका
नवजोवनभूषिताहैयाकौदेखिकेंसोतिनुकोदु
खुहोतुहैसखीनाइकासौंकहतिहै॥कवित॥ते
रीतुहींरमनीकमनीयभयोवसतोअतिप्यारो
विहारी॥वैसाविलासुजग्योजवतेंतवतैंयहऔ
तवातनिहारी॥वाढतुहैनवनागरितोउरमैं
उरजातनुकौभरुभारी॥ताभरसौंतिनिसासउ
सतिपीरहीसौंहियहोतिदुखारी॥१२॥टीका
रो॥मानहुंमुहदिखरावनीदुलहिनिक
अनुराग॥सासुसरनुमनुललनहूंसोति
यौसुहाग॥टीका॥यहना

...बसबाधोसुमुकु राइ व... वटजलागे
बीसबीसैंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ नेननिकोवटवा
रिलहैचितचातुरीकौउमगाअधिकाई ॥ चातुरीको
अधिकाईलखातवैनेननिकोनगहीसरसाई ॥ कोम
कैहैवुरुवांध्योहृनिइतपरदोसमनोजकोपाई ॥ हो
डोयहोडांचलेवटिमानोविलोचननिकोचितको
चतुराई ॥ दोहा ॥ निरखिनवोढानारितनछुट
तलरिकईलेस ॥ भोप्यारोप्रीतमुतियनुमनोचलि
तुपरदेस ॥ टीका ॥ यहनाकानवोढाहैयाकोजोव
नुआवतदेखिसोतिनिरासभईसुसबीसबीसैंकह
तिहै ॥ १९ ॥ कवित्त ॥ कुंदनसीदिपदेहकोदीपतिमे
मलैनिजुसैंहनीघालतु ॥ छूटतिसीलरिका
कहूतैसजापनुरंगतरंगउछालतु ॥ बालवधूत
नजोवनुआवतुसोतिनुवैउरसूलसोसालतु ॥ प
ननुतैंअतिप्यारोगयोहरिमानोकहूंपरदेसकोंच
लतु ॥ १० ॥ दोहा ॥ गाटेगाठेकुचनुढेलिकोपीय
हीयठहराइ ॥ उकसौंहेईतोहियेदईसबैउकसा
इ ॥ टीका ॥ यहनाइकानवोढाहैनाइकाया

सखीसखीसोंकहतिहै॥७॥ कवित्त॥ प्यारेन
दलालवहवालचलवेली नवजोवनकीजोतिदि
नेहूंकैतेंभरतिहै॥ दंपतिचरित्रचित्रमुरिचितवन
लागीकामकीकहानीकछुकाननुधरतिहै॥ रच
कउरोजनुकीकोरउकसोंहीभईनैनकुलजोंही
ताचितोनिहूंटरतिहै॥ सवकीवचाइदीठिमिजुद्ध
ीवारवारगुंजाहारमिसुकरिकरिवोकरतिहै॥७॥
अथनवोढा॥ दोहा॥ अपनेअंगकेजानिकेंजोव
ननृपतिप्रवीन॥ स्तनमननैननितंवकोवडोइजा
फकीन॥८॥ टीका॥ यहनाइकानवजोवनमुग्धा
वीकोवचनसखीसों॥८॥ कवित्त॥ जोवनभूप
हापरवीनविचछनलाताइहरीतिठईहै॥ राजुलहो
लातनकोकटिसत्रुकीसंपतिलूटिलईहै॥ दूरिकी
सेसुताकेसहाइकचातुरताचितचारमईहै॥ नैन
तंवउरोजनुकोअपनेगनिकेंवढवारिदईहै॥८॥ दे
॥ अरतेंटूरतनवरफेरदईमुरकमनुमैन॥ हांडीहो
वाटिचलेचितचतुराईनैन॥९॥ टीका॥ यहनाइ

का ॥ ५ ॥ कवित ॥ कैसो सुहाई लल्लालरि काइ मैं जो व
न जो तिल सो हों भई है ॥ वाल विनोद नु सो उचटी
है चु काम कल्लासर सों हों भई है ॥ वाहि विलोकि रि
हाति सखी वतीयां निकी वां निह सो हों भई है ॥ ज
जु हीकाज़ मे वाल वधू की कछू छतीया उकसों हैं
भई है ॥ ५ ॥ दोहा ॥ हेरि हिंडोरें गगन ते परी
सी रहटि ॥ धरी धाइ पिय बीच ही करी वरी रलल
टि ॥ ६ ॥ टीका ॥ यह नाइ का मुग्धा है नाइ क कों देखि
हिंडोरे ते त्रास कमई रहटि परी सु सखी को वचन
सखी सैं ॥ ६ ॥ कवित ॥ वाल छबी लो सखी निके
संग वनी ठनी झूलति रंग हिंडोरें ॥ नंद लले ल
खिकें चै नेर टि परी ज्यों परी अति ला जनि होरें ॥ प
न पिय रै वे बीच ही धाइ करी रसनूटि लई भरि
रें ॥ चाले की चूनरी चारु कसूं भी सुरंग सनी रमके
त नगोरें ॥ ७ ॥ ज्ञातयौवना ॥ दोहा ॥ भाव
भरी हैं भये कछू परस्यौ मन्त्र आइ ॥ सो पहार के
सहियो विसु दिन हेरत जाइ ॥ टीका ॥ यह नाइ
का मुग्धा ज्ञात जोवना सखी नाइका सों कहति है

याकौजोवनुदेखिनाइकुयाहीकेवसभयोगोरा
सोतिनुकौसुहागुइनिलौनोसुसखीसखीसौं
कहतिहै॥कवित्त॥गोनेआईदुलहनिलोनेतन
नारीमानोजगरमगरहातुभवनकोभागुहै॥विधि
नेसवांरीगुनचातुरीकीसींवजाकेरूपत्र्यागेरति
कोरतीकुहूनलागुहै॥मेरजानेमुहरिवरावनी
कोनेगुजानित्र्यापुहीतेसैंपिदीनोकोनोत्र्यनुरा
गुहै॥सासुनेसरनुदीनोप्यारेलालमनुदीनोत्र्य
रुप्रीतिपनुदीनोसोतिनुसुहागुहै॥१३॥दोहा॥दुल
हुलहियाकोवढेज्योंज्योंजोवनजोति॥त्योंत्योंल
खिसौतैंसवैवदनुमलिनदुतिहोति॥टीका॥य
नाइकानवोढानवजोवनभूखितारेयाकोजो
वनुत्र्यावतदेखिसौगतिनुकेमुहफीकेपरतेहैंसु
सखीसखीसौंकहति॥कवित्त॥मंथरगौनगहैप
गपंकजमननगयंदनुदूखनलागे॥त्योंवृषभानल
लीतनुजोवनुजातिकेलछनभूखनलागे॥मैं
नकेटौनासेवैनभयेतिनकेसमऊखमयूखल
नलागे॥ज्योंज्योंविलोकिभईमलिनीरतिसौ
तिनुकेमुहसूखनलागे॥१४॥दोहा॥

जोवनु जेठ दिन कुच मिति अति अधिकाइ॥
छिन नाहिं जकटि छिपा छीन परति निति जाइ॥ टी
का॥ यह नाइका जोवन आरूढ़ जोवन है जैसे कुच व
ढ़त हैं कटि घटति है सखी सखी सों कहति है॥ क
हि ता॥ तातन रूप की बासिल सैं तिहूं लोक मैं गु
र हैं ती कलही कीनि॥ बालिक वेस लुनाई विलो
कि वै तो रति बार ही वार हित् तीन॥ जो दिन जेठ
हि बाढ़त ज्यों ज्यों उरोजनि कौ परिमानु बढ़ै
नो॥ त्यों ही त्यों है लागी कटि कत्व छपा को
छीन परी दिन ही दिन॥ ७५॥ दोहा॥ नवना
रि तनु मुकुल हि जोवनु आमिल जोर॥ घटि
हि तैं बाढ़ै परि रह्म करी करोर को ओर॥ टीका॥
यह नाइका तन मैं जोवन आये अंग घटि है न व
ढ़ि गये बाढ़ि है ते घटि गये यह आमिल को प्रसंग व
रि सखी सों कहति है सखी को वचन नाइका सों स
न है॥ दोहा॥ सुवरन बेली कौ सी नवेली को
ललित तनु राजतु सुदेस ज्यों तिसो भासर सांझौ है
पायो है इहि छुहि पान मीन केतन को जोवनु
प्रबल तहां आमिल कै आयो है॥ और हीतें और री
ती रकम बनाइ कीनी कमलु जगायो सबही के

मनभायौहै॥घटिहैतेवटिकौनैवटिलैघटाइदीने
कौहैकविकसेव्रैसौचलनुचलायौहै॥१६॥अथ
मध्या॥दोहा॥मेटतवनतनभावतोचितुतरसतुच
तिप्यार॥धरतिलगाइलगाइउरभूषनवसनहथ्या
र॥टीका॥यहमध्यानाइकालाजकामसमानहैस
षीसौंकहैहै॥कवित॥प्यारीकौनैहलग्योपीयप्या
रेसौंध्यानमेप्रानरहैदिनराती॥मेटिवेकौनउपाउ
वनैपुरलोगनिकेउपहासमकाती॥जानिकैप्रीतम
केतनकेतिनिकेमिलिवेकौहियेंअकुलाती॥भू
षनवासअवासकेकौनमेंवारहींवारलगावतिछा
ती॥१७॥दोहा॥छुटतिनलाजनलालचौप्योलषिने
हरगेह॥सटपटातलोचनषरेभरेसकोचसनेह॥
टीका॥यहमध्यानाइकालाजकामसमानहैसुस
षीसषीसौंकहतिहै॥कवित॥माइकेमेमनभावन
कौंलषिप्यारीनिसंककैदेषिसकैना॥देषिवेकौत
रसेहियरादिवसाधलगीचितचैनलहैना॥छूटै
नलाजअरूहैटैनलालचलोकफौलीकउलांघै
परैना॥तासौंसनेहसकोचभरेअकुलातषरेज
लजातसेनैना॥१८॥दोहा॥समरसमरसकोचव
सविवसनईअकुलाइ॥फिरिफिरिउझकातिफिरिद

रैदुरिदुरिउझकतिजाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाम
हैलाजकामसमानैहैसखीकोवचनसखीसों ॥ दु
हिता ॥ पांखनुमाऊवसीपीयमूरतिनैननुमाऊस
कोचविवेको ॥ जांकिजरोषादुरैफिरिजांकेउ
रोहैरातिनएको ॥ त्रासुइतौगुरलोगनुकोउन
लेचुलालनकेलाखविवैको ॥ लाजछोकामछेवाम
डुवौचपरीयेचलाचलिहालुहीयेको ॥ दोहा
नईलगनिकुलकीसकुचविकलभईअकुलाइ ॥
दुहुंओरऐंचीफिरैफिरकीलौंदिनुजाइ ॥ टीका ॥ य
हनाइकामधालाजकामसमानैहैपरकीयाहहेर
नईलगनिकुलकीसकुचयापदहैसखीकहतिहै ॥ क
हिता ॥ नईलागीलगनिरासिकामननैमोहनसौउरझ्रमि
लाषनुउमगभरतिहै ॥ कुलकीसम्हारकीसुरतिआ
ऐसीरहैतिआतिहौविकलजीयुकलनधरतिहै ॥
दोखिवेकौरटतिडरतिगुरजनहीमननेभरतिउसासप
छतानकरतिहै ॥ चाहकुलकानिदोउफिरकी
लौंवालद्यूइतउतऐंचीऐंचीफिरिवोकरतिहै
दोहा ॥ छलछैलीलेलालकौनवलनेहलकिन
रि ॥ चाहतिघूमतिलाइउरपहरतिधरतिउतारि ॥
टीका ॥ यानाइकाकौसनेहनाइककेमेबहुतहेसुवा

कैछुलाकौपाइवाकेमिल्लेकोसुषमानतिहैलाजतें
मिलिवेकोप्रियासोंनाहींकरतिनाइकामध्यापरकि
साऊ होइतौहोइ सखीसखीसौंकहतिहै॥ कवित्त॥
नागरसौंनवहेलनेहलखोनवनागरिआलिनिहूंसौं
दुरावै॥देखिवेकौंआकुलातिहीयैअतिलाजनु
तैवनिपेनहींआवै॥नैरलालकौढूंलालहिकैत
कितहिरहैनिमेषलगावै॥चूमतिछ्वावतिआं
खिनिसोकवहूंपाहैरैकवहूंउरलावै॥२१॥दोहा॥
चालेकीवातैचलीसुनतेसखीनुकेटोल॥आपुहू
लोरूनहसतविहसतजातकपोल॥टीका॥
यहनाइकामध्याहैसखीकोवचनसखीसौं॥क
वित॥सोहैसखीनुसमाजमेसुंदरिजाहिलखैर
तिरूपज्याइयो॥एकहीवैससवैगुणआगरिवै ले
परिवेलुमहावरनिआयो॥चालेकीवातचली
तवहींसुनिकैमोहीआंचरभौनेदुरायो॥नैन
नुलाजकपोलनुहांसीदुहूंमिलिअतिरंगु कै
देखायो॥२२॥दोहा॥उरउरज्योचितचोरसों
गुरगुरजनकीलाज॥
संहीयै

कीयें मनोरथ है काज ॥ टीका ॥ यह नाइका मध्या

सखी को वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ नंद किसोर के

पलस्यो चित्त यौं उरझौ सु मुरैन हि मोरे ॥ संक हि

यें गुरलोगन कीयें है काज करे अति लाज निहो

रे ॥ नैन मरू रनु सौं मुरझाति कछू नव साति पसी

वि वि झौरे ॥ वा मृगलोचनि कों दिन द्वै ते चढयौ वि

तचात विचारि हिंडोरें ॥ २३ ॥ सवैया ॥ सटपटाति

सी ससि मुषी मुख घूंघट पट ढांकि ॥ पावक झ

रसी जमकि कै गइ झरोषा झांकि ॥ टीका ॥ यह नाइ

का मध्या लाज काम समान है सो नाइका सखी सों

जैसी भांति देषी है तैसी अवस्था कहतु है सखी को

वचन सखी सों है ॥ कवित्त ॥ मोहनी सी मुरली

कीयें निसु निस्रवनन लुकै तिहि आइ या पिय सखी सी

सटपटैसी नैस कु उझकि व्याजन अवलोकिवे

कैं डर दावि लीनो आनन लजाइ पट पटसों

कहै केतिकै कुसुम वाल जातिकी निकाइ देषिवे

कौं द्रगन कुलात मदन चटपटसो दीपति

कीतिरपक्षरपाकिधौंपावककीजकिगईजमाकिज
रोषाऊपटऊपटसे॥४०॥प्रौढा॥दोहा॥विह
सिबुलाइ विंकिउतप्रौढातीयरसघूमि॥पुलकिप
सीजतिपूतकोपीयचूम्योमुहचूमि॥टीका॥यह
नाइकाप्रौढाहैसुसनेहकौअधिकाईतेपीयनेचू
म्योयहीपूतकोमुहचूमिकैआनंदमानतिहैसात्त्वि
कभावहैहोइवातसत्यहै॥कवित्त॥पूरनप्रेमउमा
हतेप्यारीफिरैसबमाझहीयेंहुलसाती॥पूतकोआ
ननचूम्योपीयातीयचूमतिजातिमहारसमा
ती॥चाहिउतेमुसक्याइबुलाइहीयेंसुखपाइल
गावतिछाती॥आनपसीजिसनेचितहोतिभईगुरु
रागकेरंगभेमाती॥४१॥दोहा॥कोरिजतनकीजे
तऊनगरकीतपतिनजाई॥जोलौंभीजेचीरसौरहै
नपीलपटाई॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाहैकामको
अधिकारसेनाइकाकोवचनसखीसे॥कवित्त॥
कीयेंकोटिजतननतनकीतपतिजाइआत
कीपीरआतिउरसरसातिहो॥दूरितेविलोकि
कोचितचोगुनोउमगेचाउउठिमोओयेंमेटिवे
कौललितबुलातिहो॥लीजीयेंजुजानिनरि

कीजोहैलल्यादैक्यौंहूंजोबहुसुप्रत्तजेल
हियोहेलदातिहै॥औलेपटकेसोभातिप्राव
पातिघालैजोमूरैहैलपटालोछातीतोहालै
लिरातिहै॥१४॥दोहा॥छिलकुउघारातिहि
लुहूवातिरामातिहिछिलकुछिपाइ॥सबहिनयो
ग्यवंछैनछपरदरपकुदैबातजाइ॥चौपई॥यह
नाइकाप्रौढाहैलाइकौआसनेहेज्युधिकेयहल
इकोनाइकुकेकताहैहैसुन्नैकेचिंन्हकोमन
लगावतिहैसखीकौवचनसखीसौं॥कवि
त॥रातिरातिरंगपतिसंगमिलिकैनीचंग
चंगसनसखकीतेरंगरंगवरसे॥मौरभयेव
नेसजलिगनमैबैठीबेलिसोंकीबातसुनि
रिसुप्रिरीजौयतरसे॥प्यारेकेरसनभेछध
परचिंन्हनाहिज्योरसौलैवारवारदेखेरसव
रसै॥कवहूंउघारैकेहेरौफिरावैअनुराग
रसलैउमंगिपानिपल्लभरसौपरसै॥१७॥दोहा॥दु
विसाइकुचरचावकीज्यालनज्ञाननग्यान
लगीरहतिहैकौहियेकाननकाननकान
चौबै॥यहनाइकाप्रौढानाइकाकौवचन

सखीसौंपरकियाहूहोइ॥कवित्त॥लालमनभा
वनसौंमिलिकरिआपुरसकेलिकेमनोरथवि
विधिबहुमानहीं॥ऊसपानप्यारोनेकमेरे
औरटु स्यौताकोचहचरुमेरेईचवावनुको
ठौनहीं॥कुंजवनवीथीमृकाहिरकौकिवारह
रत्नागोरहैंनिसुदिनटु कादियेंकौनहीं॥रे
सोमाईइनिदुविहाइनिकेऊलटजुआनन
आननप्रतिआनचरचानहीं॥स्यादोहा॥
मोहोंचतिरनऊठिसुभरलोरोकिसकेसव
नाहि॥लाघनुहूकोभोरमेंचांपिउहांचलि
जाहि॥टीका॥यहनाइकापोटापराकियान
इकानाइककोआवेदेविसपीसखीसोंकह
तिहै॥कवित्त॥भोरभईसुभकाजसमाजमेंलो
गनुआनजुरेनरनारी॥दोऊनुकेउमगेचित
चाहसौंप्रेमकेभारभरेअतिभारी॥काहूकी
रोकीचितोनिरहैनविलोकतिआपुसमें
पियप्यारी॥दीठिउहोंठहरातिभरसवतें
कछूप्रीतिकीरीतिहीन्यारी॥दोहा॥सो
व्रतलाषमनमानुधरिटि-

३।२हैसुपनकौमिलाविमिलिपीयहौयं
पटाइ।दोहा।।यहनाइकापैठामानवते
सोइहैनाइकैटिंगआइसोयोसुसुपनकौमि
टीका।मिलुकौरिलपटाइगईमानुहैराख्योसद
होसोवहरतिहै।टीका।दोहा।।मानुकीयोतियन
नवेनुसुग्यालौरहौवहुभांतिननाइकैं।सोइ
हौरिसहैजीयमेधारिसोइरह्योटिंगमोहनु
हेवैं।सोसहमैसवरसांधोरस्यौकहतेनवनेजु
होइविहाइहैं।।वालकधूसपनेमेसुनाइ
पीयकेहिसोलपटाइकैं।दोहा।।आपु
जातिवोलीयकेहानिहोवेतोहि तुम्हारे
सोजीयकौमोजीयप्यारेमोहि।टीका।यह
इकापैठाहैआपनेजीयकौविवस्थानाइकौ
कहतिहैकितेरेविनुदेषेमेरोजीयरहतुनां
आपनेजीवदेराखिवेकौंतोसोंवोलतिहौं
दोहा।आपने आपने प्रानसवहीकोंप
होतजातैंभांतिराखिवेसवहिचहीयतुहै
होसोकहुंनिज्यानिपटीमेरेपांवनुकैं
होहैंदेषेतोलौंजोलौंचेहुंलहीयतहै।क

तिउपाउहैंतौतिनिहींकै॥विवेकौंकछपराप्यारेकितरपारेरहेछनुहैं॥तौतैंलालवौलीयतुछपनीयेंगरजनुताकौकछुतुमसौंनिहोरेकहीयतुहै॥३०॥दोहा॥जौंसयानछयानेकेवैठगकाहिठगैंन॥कौलल्लचाइनलालकैलधिल्लचौंहैंनैन॥टीका॥यहनाइकाप्रौढहैसषीसौंछादेतिहैकैवेनेनदेषिकौलल्लचातुनाहोंसनेहकौअधिकारसषीकोवचनसषीसौं॥कबित्त॥कौनरहैठगमूरिसीवाइकैभूलतुकौनविवेककलै॥कहिकौंहैनवेविसरावेसवैसुधिमोहैंनवेकाहिकाछवलै॥होतसयानछयानसवैचतुराईअनेकनएकचलै॥सुआलीरीकैमोहनलालकेलोलविलोचनदेषतकैनछलै॥३१॥दोहा॥परकिया॥इंहिंकाटैमोपाइलगिलीनीमरतजिवाइ॥प्रीतिजनावतभीतसौंमीतजुकाढेंआइ॥टीका॥यहनाकियाकोवचनुसषीसें॥कबि॥जादिनतैंमिलिमेनकौमूरिसीडारिगयेनतेग्रेवलातहैंलौ

चलहैसोवेसोकौंरहाउनपायो॥ मोपगमेमन
मेगाटैकैरहेकोंटेनेच्यारुंचमोवरसायो॥
तिजलावतुपेभयमोतसोंमोहनमोतजुका
लख्यायो॥छं॥दोहा॥कौनेहकोरिकजलनु
वेकाहेकोंटेकौना॥ मोमन मोहनरूपमिलि
पानीमेमेलोंन॥टीका॥यहनाइकाऊढा
परकियाहै आपनेचितकोवृत्तकिसखीसों
कहतिहै॥ कवित्त॥ जाहिनेतैंवनवालिक
लिरख्योवल्लवीरकालिंदीकेतीर ॥ताहि
नेसुहातुकछुसुधिकोलवहै
मे॥ कैवनिनिमोजवसोवहमूरतिजाइपच्यै
मनुयोंकविमोरमे॥ कोटिउपाइकियेकटै
सोविलाइगयोसखीनोनज्योंनीरमे॥ऽ॥दो॰
कोरवरसाउराववेकतआवनुहैगेह॥कैवा
लख्योसखीलखैलगेघुरहरादेह॥टीका॥य
नाइकापरकियाहैतुमुग्धानाइकाकोंदेखिसाति
लमयोहैतिनिकोंसखीसोंडुराइवोकहतिहै॥
कवित्त॥आपुनेरंगोगरेतिरितिकैरराधेकै
ठवेकोंकारौटुककामरीयेहैविसाति सोस
रफेरतएकुपीरोसोझमेहिवांध्योनतापेएक

वरहीकीपषीया कहेराति॥ मटाकिचलतुडर
पावनेसोस्वांगुकीयेजवइतऔरैआवतुग्रही
रजातिहै॥ तवतवदेषिसवीकेऊ वारदेयौया
हेदैषेंडरलागेदेहपुलाकिपहेराति॥३४॥दो
हा॥ पुरकियांगुमालो॥ केसरिकेसरिकुस
मकेरहेअंगलपटाइ॥ लगेजांनिनवअनषु
लीकतवोलतिअनुषाइ॥ टीका॥ यहनाइ
कापरकियामृतसुरतगुप्तानाइकाकोवचनुस
षीसोंजोनाइकाकेप्रतछसषीनाइकासोंकहै
सोवडितारहसंनेवै॥ कवित्त॥ तोहितोवावानि
परीअनषैवेकीअैसेहोकैयोंअनषाहठुठांने॥
कीजियेतोनिरधारकछूकिधोंमोहचटाइकै
वोलवषानै॥ केसरिसोंउवसैतनुसोकहूकेस
रिकैकेररहेलपटांनै॥ आउरीतोहिवतांऊंज
लीकहैवावरीतेंवेनवझतजानै॥३५॥ पुरकि
यावाकुविदग्धाहोहा॥ रह्योमोहमिलनौर
ह्योयोंकहिगहैमरोर॥ उतदैसषिहिउराहनो
इतचितईमोओर॥ टीका॥
यावाकुविदग्धाजकिमोकरिरै

सखीसोंकहतुहै॥ कवित्त॥ जादिनतैंनहगवा
लिगलीमेंमिलीहतीकान्हिगइचितचोरिकै
एकहीबारकरीइकठौरमनोविधिरूपकोरा
सिवटोरिकै॥ छांडोरयाकारिकेमिलिवोउपरो
सीलिलोंकहोंमोंहमरोरिकै॥ योंसजनीसोंउ
राहनोदेपरिमोतनहेरिगई मुहमोरिकै॥७॥
कियाविदग्धाहोवा॥ पूसमासघुनिसखिपै
सांईचलनसवार॥ लैकेरवीनप्रवीनतियरा
ग्योरागमल्लार॥टीका॥ यहनाइकापरकिया
कियाविदग्धासुलेपाऊहेइतोसमैरें॥ खाद
ना॥ सीतसमैपरदेसकोंपीयपयानसुन्योवहरा
वनलगी॥ यारितुमेंहारिक्योंहरहैघरदेवता
पूजिमनावनलागी॥ औरउपाउकहूनतको
तवसाजिकेवीनवजावनलागी॥ प्यारोप्र
भैरसुरमेघकेरागमल्लापिकैगावनलागी॥
टीका॥ फेरुकछूकरिपोरिथेंफिरिचितईसु
ताइ॥ आईजोमनुलैनजीयनैहेचली
टीका॥ यहनाइकापरकियाकियाविदग्धा
वेगमकरिगईसुनाइ॥ कुसखीसोंकहतुहै॥ टी
कवित्त॥ वेलीलीयेंकरआइअचानकके
वेलीसीवालसाकेलीलो॥ जोवनजोतिज

जवैतैर तिकीदु तिलै जिहि पाइ निपेली॥ उरम
सौंमुरि कैं चितई सुमनै मुसक्या निमैं मोहनी
मेली॥ जं मनु लेरस जामनु दे सु गई जियनेहज
माइ नवेली॥ ३४॥ दोहा॥ न्हाइ पहरि पटु डटि कौ
यौ वैंदी मिस परिनामु॥ दृग चलाइ घर कौं चली
विदा कीये घनस्यामु॥ टीका॥ यह नाइका परकि
या कौ या विदग्धा सखी को वचन सखी सो॥ काव
॥ न्हाइ पट पहरि [illegible] ही चारु चातुरी सों उठि
मन भावन कौं मुरि मुसिकानी है॥ कञ्जकें वें
दी के सुधारिवे कौं मिसु करि कीनों प्रनाम तिन्ह
तिहि त सुष सांनी है॥ कहा कहैं स्याली वचू भर
त वैनैन क्यौं हूं जैसी उहि सरस सनेह री तिठांनी
है॥ [illegible] घर को चलत चारु लोचन चलाच
लवें चातुरी सों चाहि विदा की नीरधि रांनी है
[illegible]॥ पूछें क्यौं रूषी परति स
गिवगि रही सनेह॥ मन मोहन छवि पर कटी क
है कटयांनी देह॥ टीका॥ यह नाइका लहिता
है सषाई करि सषी सों दुराव ति है पेह सी रोमांच

देखितसखीसखीसोंप्रगटकरतिहैंसखीकोवच
नेनाइत्यासों [illegible] पूछैतेक्योंवहराव
तिवातकहातेक्योंनाबीयूं [illegible] तितठानी पा
रेकेप्रमनेपाणिरहीतजवहांकोहमुजरहमा
[illegible] क्योंउरवरनकीहैप्रीतिनकेनीरीति
रहेनहींहोंनी [illegible] तुमनमोहनकोछविपैंकेटी
तुमहेसुदेहैकेदोनों [illegible] औरक्याप
कीतिनकेकिगलीयकोसिरताज [illegible] मनीथ
केतेहकोवकोछनोपरलाज [illegible] य
[illegible] डकाल छिंतासबोंवचननाइकासोंनाइ
कोहैतयासोंप्रिकहैसुनेवनुकोसोना
रहोहेथापरतेप्रमगरविताहै [illegible]
लिकलोलकेंगमेसुंदरिप्रीतमसंगरमोरज
नीहै [illegible] ोदरसातेमेंद्भुआरसातैप्रना
नरसातियनीहै औरइसोमेदुगंतनचौपच
[illegible] निकोसिरमेरगनीहै कान्हकेप्रेमकी
[illegible] कोपरकाजमेचाहतहैं [illegible]
[illegible] प्रेमकेदोलदुलेननहींमुहवानेका
[illegible] चितवनिकोमूरतितैसीचितवनिमाह

॥टीका॥यह नाइक परकिया सनेह लछि
नषी को वचन नाइका सैं॥कवित्त॥वोलै
तूइ तो अनवाइ कै हेतु कहा अवसाधे स
धुचिर प्रेम की वानि सुजानि परी
दुरै नहु रोई।तू हरि के हिय माझ वसी सु भि
रोइ नाउर है सुषदाई॥प्यारे की मूरति तो
चित माझ वसी जु चितौनि मै रति रियाइ॥३॥
दोहा॥रुषरूषी मिस रोष मुष कहति रुषौहै
नेह चौके ने नैन॥टीका॥
यह नाइका परकिया लछिता रुषाई करि सषी
सौं दुरावति है पै प्रीति के नेन रे मिस षीसो क
॥कवित्त॥भृकुटी मरोरि मुह मोरि रोस
मिसु कोरि ऊपर रुषाई साधि कहै रुषे वैन है॥
॥लैनु को यहै पनु प्रीति ही को धरै तनु केसे
ऊ दुराउ कढ़ै निसौं दुरै नहै॥हरि के सनेह
सानी केसे धीर हति दीनी के हेरति प्रगट छै
न॥रुषो रुषु करि रुषीवा
निठानि वैठी परि रुषे केसे होत नेह चौके पै

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हाग्रवत्यौरीतेरेरें॥जैसेकोयेकहिकेसेहुरेरहरि
प्यारेकोप्रेमुचटेनोचिततेरे॥४६॥दोहा॥रहिमु
हफेरिकिहरिउत हितसमुहोंचितुनारि॥डी
ठिपरसउठिपीठिके पुलकतक हतपुकारि॥
टीका॥यहनाइकापरकीया सषीकोदेषि
पीठिदैवैठीदुराइवेकोपेरोमांच देषि पीठि
पीकहतिहेनाइकालक्षिता॥कवित॥
हितकोनिरषिपनुहरषेहितूकोमनुहमतो
चरोइतनुप्रेमकोंप्रतीतिको॥तिनेतूदुरावति
हैवातवहरावतिहेकाहेकोदुरावतिनवेलीने
हुनीतिको॥लावेइतेहरिमावेरहिमुहफेरि
तेरोचितसनमुषवीसविसेरसरीतिको॥दी
ठिकेपरससोतेंउठयहपीठिपेपुकब्यातिप्र
गटकहततेरीप्रीतिको॥४७॥अथकुलटादो
॥लषिलोनेलोइनुनकेकोइनुहोइनआ
जु॥कोनगरीवनिवाजिवोंकितसूमोरतिराजु॥

नःकापरक्रियक्षुलिटकै नारीवेजि
जिवैायापरतेवहुतनाइफनिकैःक्ष्णौतिमहतेचूँ
ववतनाइक्षातिः ... सरसीलहबँननमी
कुरंगफनाइकीमतजेहरवैः हतेननरवाहे
वनहुतैनहवोरवलवलिकैनोवैः कि
रतिनायसनायमेयोदहेःहुत्राजिहिपं
गनहुरलोःचननेनहे लाबैनानपैब्राजु
कैवैः ... लैरेहिरिमतदवैयैः
वलैनेकहैन फनालेकैननखनलजी
नेनः ... फनाहकानखेयहुलयबैने
कनः नीलक्सयापवैबह्नर रहुवैयबैः विन
सवैलेवचनुनइक्षोरैः ... क्रानहु
नेकृतरेतंकहुविहनोःकांहुनैनरउरैचिहुवे
हुलैलवै नपानिमनाउक्षाम्रवसब लैनःह
हेइमनकुनउरफलःफेलय द्भहहैः वे
हेपः नहोनैलेिहैरनतहैःवेयमनेवैः
नये चवलजाइसानियखैः नैहैः
हलनहनःहीनानये ... वैःननः

धूपैअलिभटैचतुरअहेरीमार॥काननचारीलैन
नुसिकार॥टीका॥यहनाइकापर
॥कयाकुलटासखीकोवचननाइकासोंनागरन
रनुसिकारयापरतैंवहुतनाइकनुप्रतीतिभई॥क
वित्त॥काननचारीकहावैइतेपरदौरकैरपुरमेंमृग
जाये॥औरअमेडिगचूकहैजेगुनआगरजानिकैमा
गिराये॥घाइलकैफिरिलैतिसुध्योलपलौंनघ
कैअतिकौतिकहाये॥नीकेमनोजप्रवीनकरैल
नैनैनकुरंसिषाये॥५०॥मुदितानाइका॥च
भारसुनिऊहौंपरोसीजाह॥तसीत
मासेकीइगनिहांसीआंसुनिमाह॥टीका॥यह
वसन्ततांकीहांसीभईसखीकोवचनसखीसौं॥क
वित्त॥देखिपरोसीकोचीकनीचारुनिप्यारीहीयें
परीप्रेमकीफांसी॥त्योंपीयजातविदेसलख्यो॥विल
निसांसी॥त्योंलसीअ
तुजबैनीकेनैननुआंसुनुमाजतमासेकीहांसी॥५१॥

[illegible]॥ सलसूक्यौ वौ तैसौ व
सौ लई उधारि॥ हरी हरौ अरहरि क्यों धरै धरह
जौ सनारि॥ टीका॥ अथ कवित्त॥ यनानाइका संकेत कौ
बौर जाति जातें सो चकरति है सवी समाधा
है पुस्तुतर॥ कवित्त॥ वौनलफूलसे हस्तौ केस
लौ मग लौ चकिमैर भरी है॥ केलि पलौ उज
खरलौ कि उसास भरी अलि सौं उचरी है॥ वीति
यौ वनलसू वैवा सनौ अस उ वौ ऊवारि लई
क्यों हहरौ मति धीर धरौ अवहौं तौ अवारा हरि प्या
हरी है॥ पर॥ दोहा॥ फिरि फिरि विलषी है लेषि
रि फिरि लेति उसास॥ सांईं सिर कच सेत सों वीते
चुनति कपास॥ टीका॥ यह नाइका अनुसयना स
की है रवी तौ जो निविलषाति है सु लषी सवी सौं कह
है॥ कवित्त॥ वालम के सिर के सिरोरह ज्यों सेत है
सै लैतौ चुनि चुनि सिर सुरझाति है॥ वौ नति हतूल
पेहल के सलत है ये मानि दुष मूलफूला जिमि कु
लाति है॥ वारवार कहति जु लौ सौं वै सी भली री
को लै विलस की पली यौं चलौ जाति है॥ विला

लखिकैंउसासैंलेइनवलवधूलखिवलुवीलोमन
अतिअकुलातिहै॥५३॥अथपच्छनेकल्हनाइकाको छ
नहिहरिलौंहियरांधरौंनहिहरलौंअरधंग॥एकत
हैंकरिराखियेअंग [illegible] अंगप्रतिअंग॥टीका॥यहना
इकाअनकल्लहैसुनाइकेमनकोविचारजांनीयें॥
कवित्त॥राखीयेजोहरिलौंहियरांधरिऔरसबैगें
गहोतदुखारी॥तोहरलौंधरियेअरधंगतोएकहौ
री॥तातैंयहजियआवतिहैकरीयेन
नोवहन्यारी॥अंगमेंअंगमिलाइकैएक
हैकरिराखियेप्रांणपियारी॥५४॥दच्छिणानाइ
दोहा॥जोपिनुसंगनिसिसरदकीरमतरसिकर
न॥टीका॥यहनाइकादच्छिणाहैसुरासमेंआपनी
चतुरईकरिकैंसबकोंप्रसन्नराख्योएकमेंआधीनकौ
नैनजांन्योसखीकोवचनसखीसौं॥कवित्त॥ज
मुनाकीपुलिनिसुहाईद्वैविछाईतैसीसरदरयनिजो
रविसदविलासहै॥अवलानेकनिमेंकीनीनंद
लालकहूअद्भुतचातुरीकीकलायोंप्रकाशहै॥जो

पिकानि संगर सरंग कौ उमंग रै मैर सिकल्म न मोहु
रम्यहु रसरास्तै ।। सव ही कौ वा हूग म्है सव ही के सं
नाच्यौ सव नि विल्लौ क्यौ कान्ह सव ही के पास है
न्ह्यु घर सहै नाइ ष्वै दोहा ।। वेई गाडि गाडै परौ उपर्यु
हार है यैन ।। ज्ञान्यौ मोरि मतंगमनु मारि गुरजुन
नो ।। टीका ।। यह नाइक सखी सौ कहै विनु गुन हार के चैन
सौ टीवा तन्हाहि दुरावत है नाइक को वु चनु नाइको
सौं तो नाइकु नाइका सौ कहै तो खंडिता है ।। टि
पिका ।। आजु मन मोहन मया के मेरे च्यो ये लोल से
हनु सिंगार रच्यौ ति मेरे मन माल्यो है ।। ज्ञालस वलि
हूगहूं मतलोलित गाति सि घल कोलित तन पु नोर
नी सौं साल्यौ है ।। कृष्ण प्रान प्यारे रहो उर पै
पटि वह विनु गुन हार रच्यौ रगर जानु जो ल्यो है
वेई गडि गाडै परौ हटि जो मतंगमनु मदनगुर
सौं नुमारि मोरि ज्ञान्यौ है ।।५।। दोहा ।। वाल्मकौ
लालौ नई कोइ नुलो रसु मार ।। लालानु
हूगनु की परी हुगानि में हहा है ।। टीका ।। यह पसु

नरनाइकुसठनाइकाखंडिता॥कवित्त॥चारनि
कारीलखेंजिनिकोरदलागतिओपरतोपुलको
है॥वेदनकोहुविसंदकरीत्यिदरीदुतिविदुमकेद
लकोहै॥प्रानपियारीकहारिबिनेननुओजुल्ल्ल
ईइतोललकोहै।लोचनलातुम्हारलखतिनको
इतओनिप्रभाउलकोहै॥पु॥दोहा॥सकतनतू
नोतवचनमोरसकोरसघाइ॥विनुधिनुओटेघारत्यों
रोसवादिलुहोइ॥टीका॥यहनाइकसठसापराधआ
योहेसुनाइकाकोअसेकटुवनकहतिहेतासोमीठवच
नकहिनिवारनुकरतुहेनाइकाअधीराज्ञानियेनाइका
कोवचननाइकासे॥कवित्त॥काहेतेभोंहतनेनेनीन
ईतियकोनेपेकीजतुकोपइतीको।तेरेतोनातेउवाल
ोहायेतेमोरमहातमेंगावतजीको॥कोरिकरोविनि
गमिनिकेसंऊहांतोनहोतुहेमारसहीको॥ज्योंईमै
ोरुघरोवरोओटोयेत्योहोत्योहोतुसवादिलुनीको
धूदनाइकदोहा॥मोरोमनुहरितूभरीगास्योवरी
मिठाइ॥वाकोअतिअनवाहटोमुसिपाहटवि

इ॥टीका॥ यहजाइकथहैजाइकेकौवचनसबैसैं
है यातेगुनकथनजीकेसंभवतुहैवाकौयापदतेपरछ
कौपूतीतिमे॥वार्त्तिका॥ मोरतोफूलनिकौद्वीरव
सौंते मधुहारिय्रेकेजनावे॥गारिस्यौंदेइकहाव
हौयै मधुराईइतौकयुमीकतपावे॥वारतिमूरतिको
सतराहटमेहौयैद्युतिमोरवढावे॥सोलसुभाग
सुहागिलकौरसहूहसिहौंरिसहूहसिग्यावे॥४॥
सो॥टीका॥ लरिकौलेवेकौमिसनुलेगरमोटिगयाइ॥
गयोग्रुचानकगोपुलीछातीछैलुछिवार॥टीका॥
यहजाइकुधहैजाइकेकौवृतान्तनानाइकासवै
सोंकहतिहै॥वार्त्तिका॥ गोरसदैमिसवेकिरहवु
गैलनहांडतुहैलुचवाई॥मैनमेरमैकहाकहौ
सोकरीजसुधाकेललालगावाई॥मोटिग्याइ
रैकहूकौलौसनेहसलौग्रीतिकौचतुराई॥छैहै
वैकेजेठमघाइग्रुचानकऊगदीछातीछुवाई
प्रतिउपमालिहौं॥कुंजभवनतजिभवनकौ
मैनंदकिसोर॥फूलतिकलीगुलावकीचट
टचहूहोर॥टीका॥ यहजाइकासुकीयाहूहो

कोवचननाइकसों॥कवित्त॥मुकिलनकलीज
ज्ञातकोकछुकनईभौंरनुकौगुंजमंजुश्रवनसुनि
रीये॥फूलतेगुलाबुकलिकानुकोसुगंधपानुचिर
सरूमदुमोदुउरधारीये॥कलधुनिकरतशुनिदय
वृंदनिश्रनंतछविलसतिविहारीयोविहारीये॥जाग
विभातकोविलोकियेविहारीलालसुंरनिकुंजन
सदनसिधारीये॥८५॥अथरूपनिवेदननाइकाते
॥समएकसो॥रहीलटकुलालहौंलखिवहूवाल
नूप॥कितोमिठासदईदयाइतेसलोनेरूप॥कवि
॥जेसोजहांचाहोयतितेसोतहांवनोविधिविधिहू
अहिरकेन्याइवनिआईहै॥सुघरसुराईकोपेवरनी
ताईजातिरतिहूनेताकोतिलसमतानपाईहै॥वा
छविढाईतामेश्रोरअधिकाईदईदईयालुनाईमा
कितनीमिठाईहै॥सुंदरकन्हाईहोतोविरचिवि
काईवहरूपकीनिकाईमानोदेहधरिआईहै॥दक्षानी
रकेकोरूपनिवेदननाइकासोंदोहा॥मोहिभरो
सोरीझिहेंउझकिझांकिइकवार॥रूपुरिझावनहा
रवहयेनेनारिझवार॥टीका॥यहनाइकेकोरूपु

निवेदनुसखीनाइकासौंकहतिहैसखीकोप्रयोजनपी
कराइवो ॥ कवित्त ॥ सुंदरजोकहीयेतौतिहूंपुरमैरू
कहेदेखलोरोईहै ॥ यामैंकहाकहलावतिहैकछूप्रेमकै
पंथलियोरोईहै ॥ नेकजरोकाढि ॥ जोंकिवला लों
हिमेरोसोतिहारोईहै ॥ रिझवारहैतोइहगेरोजोहि
रूपुरिझावनहारोईहै ॥ ८३ ॥ गातवरनन सोरठा ॥
रीझिलखिरीझिहैछविहिछबीलेलाल ॥ सोंनजुही
सीहोतिदुतिमिलतमालतीमाल ॥ टीका ॥ यह
इकाकेगातवर्ननसखीनाइकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥
नीकीलसैवृषभांनललीनवजोवनजोतिजगीअं
गअंगहि ॥ ताहिविलोकिललामनमेरेतोभाइर
हीरीझतरंगहि ॥ छैलछबीलेपैछविरीझिकैक्यौं
नहियेरसभावउमंगहि ॥ मालतीमालतनेदुतिसौं
मिलिसोंनजुहीकेप्रकाशतिरंगहि ॥ ८४ ॥ दोहा ॥
अंगअंगजगमगतिदीपसिखासीदेह ॥ दीयैवढायेपै
रहेवडोउजारोगेह ॥ टीका ॥ यहनाइकाकोदेह
कोछविसखीनाइकसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ दीपकी
सीलोइकैसीदूसरीनकोइरहीदुगनिसमाइमानौ

तिहै॥जरितजवाहरकेभूषनललितअं
लितजगजोतिसीजगतिहै॥दीपकवेहै

:पकवं।

है॥दीपतिकीदुतिभरिनवनअंमिलजा
वाहिंकोऔरउकतिहै॥५५॥दोहा॥र
लोइनन्लगेकौनजुवतिकीजोति॥जोभत
हटिगजोन्हछांहसोहोति॥टीका॥य
ाकोदेहकोदीपतिसबीनाइकसोंनिवेद
तैहैऔरजोनाइकुसषीसोंकहैतौगुनका
संभवे॥कवित्त॥आजिद्धविआगरीवि
ावुजनागरीकेअंगअंगरूपकीतरंगउमग
॥करूपपुंराप्यारेवरनतनवनैंक्योंहूंजोव
नगीजोतिजोतिसीजगतिहै॥कोहूहैसीऔ
यसुरनरलोगपुरवाकेआंगेजाकीदुतिदुगनि
गतिहै॥जाकेलोंनेतनकीललितपरछांहपरस
दजुन्हाईपरछांईसीलगतिहै॥५६॥दोहा॥भईसुद्ध
तनवसननिमिलिवरनिसकेसुनिवैन॥अंगऔप
गौदुरीआंगीअंगदुरैन॥टीका॥यहनाइकाकी

मोहनीलसतिहै॥जटितजवाहरकेभूखनललितग्रं
गग्रंगनिमिलितजगजोतिसीजगतिहै॥दीपकवैड़ो
हमैयेंदेहकोउजासुहातुवडोईप्रकाशचकचोंधी
सीलगतिहै॥दीपतिकीदुतिभरिमवनग्रखिलजा
लरंधुनिहूवाहिकोग्रारउमकतिहै॥४४॥दोहा॥
वाहिलखैलोइनलगैकोनजुवतिकीजोति॥जोभत
नकोछांहटिगजोनहछांहसोहोति॥टीका॥य
हनाइकाकोदेहकोदीपतिसषीनाइकसोंनिवेद
नुकरतिहैग्ररुजोनाइकुसषीसोंकहैतोगुनक
थनुवहुसंभवे॥कवित्त॥ग्राजिदुविग्रागरीवि
लोकीवृजनागरीकेग्रंगग्रंगरूपकीतरंगउमग
तिहै॥कहमप्रांगणप्यारेवरनतनवनैक्योहूजोव
नैकोजगीजोतिजोतिसीजगतिहै॥कोहैऐसोग्रे
रतियसुरनरनागपुरवाकेग्रांगेजाकीदुतिदृगनि
वगतिहै॥जाकेलोंनैतनकीललितपरछांहपरस
रदजुन्हाईपरछांईसीलगतिहै॥४५॥दोहा॥भईसुद्ध
वितनवसनमिलिवरनिसकैसुनिवेन॥ग्रंगग्राप
ग्रांगीदुरीग्रांगीग्रंगदुरेन॥टीका॥यहनाइकाकी

सोभासखीनाइकसौंनिवेदनुकरतिहै ॥ कवित्त ॥
हरिकंचनवेलीसोंबालकीदेहकीदीपतिकोबरने
कविहै ॥ असताहिमिलीवहकंचुकीकेसुअनूपमभो
परहीपकविहै ॥ कछूजातिनहीकहीअंगप्रभाअरुची
रामिलेसुभईछविहै ॥ वहआंगिगईदविअंगकोरा
पमेंअंगोमेअंगुकहादविहै ८७ ॥ दोहा ॥ सोंनजु
हीसीजगमगातिअंगअंगजोवनजोति ॥ सुरंगक
संभीनीकंचुकीदुरंगदेहदुतिहोति ॥ टीका ॥ यह
नाइकाकेअंगकीसोभासखीनाइकसोंवरननुक
रतिहै ॥ कवित्त ॥ सुवरनबेलीकीललितछविजो
वनकीजोतिमिलिअतिसरसातिहै ॥ चुहचुहीचून
रीमेंगहगहीगातकीगुराईनदुरतिरंगरसवरसाति
है ॥ रूपकीतरंगअंगअंगतेंउमंगिसोभाहोतिवहुरं
गलखिसोतिअरसातिहैं ॥ कंचुकीकसूंभीप्यारीप
हेंसुरंगतऊमिलिअंगरंगसोंदुरंगदरसातिहै ८८
दोहा ॥ कहिलहिकौनसकैदुरीसोंनजाइमेंजाइ ॥
तनकीसहजसुवासवनदेतीजोनवताइ ॥ टीका ॥
यहनाइकाकेतनकीदीपतिअरुसहजसुवासुता

सषीसषीसौंकहैहै॥कवित्त॥घिलतचोरमिहूच
नीषेलुदुरीतियसौंनचमेलीमेंजारकै॥रंगमेरंगुर
ह्यौमिलिकैसुकहूंविधिरंचनहोतिलषाइकै॥भौंरनु
कौऋवलीचहूंघोरसुगंधकलीभरहीमडराइकै॥कौ
लहतौउहिकुंजमेवारिजोदेतीनग्रंगुसुवासुवता
इकै॥दोहा॥दषीसोनजुहीफिरतसौंनजुहीसंग्रं
ग॥दुतिलपरनुपटसतहूंकरतवठौरंग॥टीका
यहनाइकाकेग्रंगकीगुराईसषीनाइकसौंनिवरनु
करतिहै॥कवित्त॥सहजसिंगारदुतिलसतिग्रपा
रलषिमनहूंकेमनभाउउपजेग्रनंगकै॥ग्रतिसु
कुमारियातेलचकतुलांकुमारुसहिनसकतुविवि
उरजउतंगकै॥रूपकीरशालतुमरेषीसोनवार
ललालकहाकहौंवानकवनकताकेग्रंगकै॥चा
रुतनसुषपटपहिरतघनवाहितउदुतिमिलि
होतुकेसरीयारंगकै॥७॥दोहा॥दीठिनपरतिस
मानदुतिकनककनकुसोगात॥भूषनकरकरक
सलगतपरसिपिछांनजात॥टीका॥यहनाइका
ग्रंगकीदीपतिजाइकसौंकहतिहैनाइकहूंसषी
सौं

सोंकै हैं तो संभवै ॥ कवित्त ॥ आजु लाल व्रजवाल
कमैं विलोको जा को ललित लुनाईलं
गातैं हैं ॥ साजति सिंगार रचि पचिकै प्रवीन आली
निहकै चित सब हरत हिरातैं हैं ॥ करत विचार पै न हो
गिरधार कछु तैसो ई कनक तैसो कनक के गातै हैं
बेर बेर कै वितान पहिचानीयत कर परसें तें आ
य न जानि जाते हैं ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ करतु मलिन आछी
छविहि हरतु जु सहज विकासु ॥ अंगरागु अंगनि ल
ग्यो ज्यों आरसी उसासु ॥ टीका ॥ यह नाइका के अंग
के सरि लगी है नाइका कौ इतनौ हू अंतराय सुहात ना
हीं भावत यह जानि सखी नाइका सों कहति है नाइ कु
नाइ का सों कहै तो संभवै ॥ कवित्त ॥ मैन की सी हवेली
सी ललित न्याइ ही मोहन जौ फिरहै सपागे ॥ जोवन
प सुहाग सनी ललि सोतिनु के उर दाह बदागे ॥ के स
रि लागै तें अंग लसात ज्यों आरसी दीस उसास के
लागें ॥ उजरै लागे न और कछू जर न नागरि तेरी गु
राई के आगें ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ पहिरत ही भूषन कनक के
कहि आवतु इहि हेत ॥ दरपन के से मोरचा देह दि

धाई है॥ टीका॥ यह सषी नाइका के अंग की गुराई कहति है जो भूषन नु के अंतराय न जानि नाइक नाइका सौं कहै तौ वनतु है॥ कवित्त॥ हित की तौ बात हि तहाँ सौं कहि आवति है तातें तौसौं कहति छबीली प्रेम पारिकै॥ तेरी समिता कौं रति रंभा उरबसी है न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अनुरागि कै॥ लोंग तेरे तन नुतामें सोनेके गनैं तूक तपद र तिरन्ह्य वहीं तें त्यागि कै॥ नीके नीके तन पर फीके फीके लागत हैं मोर चार है मानों मुकर में लागि कै॥ ७३॥ दोहा॥ कंचन तन घन वरन वर रह्यो रंग मिलि रंग॥ जानी जाति सुवासु ही केसरि लाई अंग॥ टीका॥ यह नाइका के अंग की गुराई देषि सषी नाइक सौं कहति है अथवाले चलिवे की उत्साहत अंग कौ निवारन करति है अंतराइ नु जानि नाइ कु नाइका सौं कहतु है॥ कवित्त॥ जो कछू तौं न न मैं तन की सुरतीन लैरै रति रूपुनि काई॥ ता पर जोवन जोति जगे कवि कोविद ने छवि कौ सरसाई॥ रंग में रंग समौ

रंगयौनवकंचनसेलनमेघासिलाई॥अंगपलुंगपरि
कौनलेहैसारिकेसरिवासुहौलैलखिपाई॥७॥टि
का॥केवपूरमनिमेरहौमिलितनदुतिमुकतालि
छिनछिनवरीविजहैनेरहतिछाइतिनुचालि॥
टीका॥अंगरागपैकोतिकाईसखीनाइकसोंकहति
सखीहूसोंकहैतोहोइ॥कवित्त॥कुंदनसेगातजरा
तसेनयूनजावोदीपतिजुन्हाईसीभवननमाफेवर
सौ॥कंचनकोचोकीपरबैठिवरवालसाजसकल
सिंगारजोतिजगमगवैरहो॥मोतिनिकोमालसज
नीनेपहराईसुतौतनदुतिमिलितकपूरकोसीफेर
ह्यौ॥एकअखीलीचतुरजकोसीचकिरहीएकअकरिवे
कोनेहैयौतिनूकोहाथलेरहौ॥७॥दोहा॥सोहत
धोतीसेतमेकनककरनतनुबाल॥सारदवारिदवी
जुरीभारदकीजातिलाल॥टीका॥यहनाइकाकीयु
राईसखीनाइकसोंकहति॥कवित्त॥कंचनवरन
तनबलकअनूपमालोरूपकोअवधिमनमथकी
रसालहै॥एकधोतीसेतमेकनककविदेतिवाल
मानोहंसमंडलीमेचंपककीमालहै॥सरदघटानु

मध्यरा मिनिलसति कि धौं है रसिंधुमाज वडवान
लकी ज्वाल है॥ सुरसरि सेतमें सुधानिधि की कल
कि धौं संकर के गंकलसैं पारवती वाल है॥ ७५॥ ट
जाकी उजराई लखें आषि उजरी होति॥ टीका॥ य
ह नाइका की उजराई सषी नाइक सों कहति है नाइ
कु हू के रतौ सन वे॥ कवित्त॥ वालवनी वरवानि
कवेस दई विधि तेसी यै सुंदरताई॥ फूलन की दुति
तूल न होति अतूलप्रभा अंग अंग निकाई॥ चेतकी
चांदनी चारु किते अरु आरसी हू रती जोति नपा
ईभाइ है उजरो होति है आंषि निहारत वा तन
की उजराई॥ ७७॥ दोहा॥ वरन वासु सुकुमार ता
सव विधि रही समाइ॥ पषुरी लगी गुलाव की गात
न जानी जाइ॥ टीका॥ पहनाइका को सहजसुगंध
अरु जोवन की अरुनाई सुकुमार ता सषी नाइक
सौं निवेदनु करति है जो नाइक की सज को पाषुरी
वा निसषी नाइका सौं कहै तो लछिता होइ॥ कवि
॥ वीनति फूल भरे उर फूल प्रभा न समें सुषसजैं

जागी॥ आसोतहांमनमोहनप्यारोप्रभा…नखिरी
ठिरहोअनुरागी॥ वेसोईकोसुगंधहूवेसोयेवेसिये
कोमहनतारसपागी॥ कौनहूंभांतिसोंजानिपरीनगु
नावकोपांवुरीगातसोंलागी॥७॥ टीका॥ रंचन
नखियतपहिरीयोकंचनसेतनवालनु॥ कुंभिलानी
जानीपरतिउरचंपेकीमाल॥ टीका॥ यहनाइकाके
अंगकीगुराईऐसीहैसुचंपेकीमालजानीनाहीजातिसु
सखीनाइकसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ लाई॥ वनाईफूली
नअलीनवचंपकमालसुगंधभरीहै॥ लैअपनेक
मैनवनागरिकंठकेहउरमेंपहरीहै॥ कंचनसेतन
कीदुतिमांऊगाईमिलिरंचनहींउघरीहै॥ याहिरही
सजनीचकिसोंकुम्हिलाइगईतवजानिपरीहै॥ ७॥
दोहा॥ लिखनवैठिजाकीसवीगहिगहिगरवगरू
रभयेनकेतेजगतकेचतुरचितेरकूर॥ टीका॥ य
हनाइकाकीनिकाईसखीनाइकसोंकहतिहैअरू
प्रगटकरतिहैकिवाहिदेखिसात्विकभावहोतुहैजोवे
संधिकहोयेतोऊसमभैयातेचितेरनुपकैयाहैलिखवा
वनतुनाहीं॥ कवित्त॥ रूपकोअवधिऐसीयेस

के

वनाईविधिजाँलिषिवेकोंभालरेवनमनाइवो॥ ताकीसोभालिषिवेकोंवेठतगरचुकारिआंनत हेमनहोतुघूमिघननाइवो॥ऐसीभांतिआइआ इकूरकहवाइगयचतुरचितेरतिनेकहालेग नाइवो॥कवप्रागाप्यारेवहचित्रलोविचित्रग तिकारूपेनवन्पोवाकेचित्रकोवनाइवो॥५॥ दोहा॥अंगअंगछविकोलपटउपटतिजातिय देह॥घरीपातरीउतऊलगैभरीसीदेह॥टीका यहनाइकाकीनाजुकताअरुशेपतिसखीनाइक सोंकहतिहै॥कवित्त॥कंचनकेजेकलालिषि केवुकोभारसुभाइहरीसी॥तानवनागरिकी तिसिद्योसरहैदुतिनेननुमांऊधरीसी॥अंग तिअंगउमंगेअछेहप्रभाकीतरंगसरंगभरीसी॥ पातरीवाकीअगोठितअंछविपुंजलुलागतिदे हभरीसी॥५॥दोहा॥अंगअंगप्रतिविंवपरिदर पनसेसवगात॥दुहेरतिहेरचोहरभूषनजाने जात॥टीका॥यहनाइकाकेअंगनुकीउजराई सषीनाइकसोंकहैसषीसोंनाइकुनाइकासों

कोहेसखीसोंकहेसोसबभांतिसंभवतुहेजोना
इकासखीसोंकहेतोरूपगरबताहोइ॥ कवित्त
बदनुबिलोकिससिसमताले हेनकैयांहूलोचन
निहारेंजलजातहलजातहे॥ नागरिनवेलीनव
सिखलोंनिकाईभरीबांनिकुविचित्रलखिले
चनसिरातहे॥ कह्योप्रांणप्यारेग्रतिउजले
सलताके मुकरसेगातमहासोभासरसातहे॥ ग
गप्रतिबिंबपरिकैउठोरयेकयेकयेकोंमनै
लैकजानैजातहे॥ ८४॥ दोहा॥ वालद्धबीलोगि
यनुमेबैठीग्रापुछिपाइ॥ प्रगटहोपानूससीपर
गटहोतिलषाइ॥ टीका॥ यहनाइकाकेग्रंगकीदी
पतिसषीनाइकसोंनिवेदनुकरतिहेनाइकुहरके
तोसंभवे॥ कवित्त॥ तेनेतनवारीवननारीमेंवि
हारीप्यारीयुभिरहीवाकीउजियारीमेरेमनमेंक
हेकविकमलग्रैसीललितलुनाईलखैमेरेजान
रामिनीहूरीहेजाइघनमें॥ हू विसेंहूवीलीगु
नारिनुकोसकुचेतेंबेठीग्रापुग्रंगनिदुराइतिं
गनमें॥ घूंघटमेंघूरघूरगटहोतिपरगदीपक

लौजोतिजगमगिरहीअलिनोमवनमें॥ आहार
नोनहूंविधितनअहाढ्वविस्सहराषिवेकाजा॥ रू
पगपोंढनकोंकोयमूषणपाइंदाजा॥ टीका॥ यू
हनाइकाकेतनकोढ्वविसषीनाइकसोंकहति
हैअरुसषीकोवचनसषीसोंनाइककोवचनना
इकाहूसोंहातुहै॥ कवित्त॥ तुहींतीन्योंलोककी
लुनाईलूटिलाईदेषैरूपकीनिकाईनंदलालल
लचायेहै॥ तेरद्युतिआगेआलीकंचनकेगहनेय
सेफिकलागेजैसेगातेढ्वविढायेहै॥ डीठिकपरस
हीतेमलहोतअगअसोउज्जलतासहितविरंचि
नेवनायेहै॥ तनकोनिकाईस्वहराषिवेकेहतुय
तोदृगनिकोंमानोंपगपोढ्ना॥ ३॥ विढायेहै॥
दोहा॥ पत्राहींतिथिपाईयतिवाघरकेचहूपास॥ नि
नप्रतिपून्योंईरहतिआननओपउज्जास॥ टीका॥
यहनाइकाकोमुषकोप्रकाशसषीनाइकसोंबिवे
दनुकरतिहैनाइकहूसषीसोंकहैतोसुमिरनज
नियें॥ कवित्त॥ यतेमानआननकीओपकोउजा
सुरहैग्रेहआसुपासअतिचादनीविहारिके॥ ति

षि निरधार करिवे कौं केते सुघर गन कवि वोलिवु
ऊवेऊ रहत विचारि कैं॥ पचायो लिदक्षिनां मुति
षि कौं वताबैं फिरि पुन्यौं कहत बहु कोमु दैनिह
रिकैं॥ कवहूं कपचारै वैक वहूं वदन प्रभाकहित स
कुचतु से कवात निरधारि कैं॥ ८० ॥ दोहा ॥ लीनें
साहस सहस कीनें जतन हजार॥ लोइन लौं इन
सिंधुतन पैरि न पावत पार॥ टीका॥ यह नाइका के
अंगकौ सुंदरता रेषिकें नाइके नेत्रप किनके रहत
हैं सु नाइक सषी सौं कहै सषी नाइक सौं कहै सषी स
षी सौं कहै॥ कवित्त॥ जातन कौं ह्वै कि कौं कविंद व
तके ते किती उपमा लुवता वन॥ तातन कौ ह्वै विदे
षिवे कौं नवैने न लगे नइ ते उत धावत॥ साहस को
रिसयान घने वहु भांति अनेक उपाउ वनावत॥ सो
भा के सागर माझ परे अव पैरत कैसे हूं पार न पा
वत॥ ८१॥ दोहा॥ सहज सचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगंध सुकुमार
तिह्वै विहोगति॥ जटिचारदके दीपति लौं जगमगाति तन जोति
टीका॥ या नाइका के तन की दीपति सषी नाइक सौं कहै मा
इक हूं सषी सौं कहै तौ पूर्वानुराग जानियै जो नाइका सषी सौं
कहै तौ रूपगरवता होइ॥ कवित्त॥ कनक वरन तन नव वन

कविचित्रवालवालमकेउरवीजज्ञानद केवोतिहै॥वाके
आंगेंग्रौरतुकेगातकीनिकाईलोगेमनिकेनिकरधेरेलाग
तिज्योंपोतिहै॥जवपहिरतिपचतोरियाकीसारीतवतन
कीयेोसरजजगमगतिजेोतिहै॥कबसप्रांराप्यारेछविद्ध
मतिविसालजलचादरिकेदीपतिज्योंपरगटजोतिहै॥८७
स्वपनदरसन॥दोहा॥देखेंजागितौवेसियेसांव
रलगीकपाट॥कितह्वेआवतजातभजिकोजांनेकिहिंवा
ट॥टीका॥यहस्वपनदरसनुनाइकासखीसेंकहति
है॥कवित्त॥रंचकनींदपेरेजवहींतवहींटिगआनि
टिकेवगिकें॥हेरिहंसेरसकोंवरसेवतराइमहारिससेंप
गिकें॥जागेंतोडीठिपेरेनकछूअसत्योंहींकपाटरहेल
गिकें॥यहजांनेकोआवतुधोंकितह्वेपुनिजातुकवेकित
ह्वेभगिकें॥८८॥दोहा॥सोवतसपनेंस्यामघनहिलिमि
लिरहतवियोग॥तवहींटरिकितहूंगईनींदोनींदनजो
ग॥टीका॥यहस्वपनदरसनुनाइकासखीसेंकह
तिहैनीरकीसिंराकरतिहै॥कवित्त॥आलीविद्ध
हुभयोतवतेंछुतियाजहुभांतिवियोगतईरी॥औजुल
लामनमोहनसोंसपनेमेंअचानकभेंटभईरी॥मैसुंवि

सै

पावहराइवेकौंहिलिकैं ... हियसौंरसकेलिठई ॥ जौंदहूं
जौरविलाइकेरैतवहींकहूंभाजिगईसुगई ॥ ४९ ॥ साक्षा
तदर्सन नाइकानाइककौ ॥ दोहा ॥ लटकिलटकिल
टकतुचलतुडटतुमुकटकीछांह ॥ चटकभरस्योनटुमिलि
गयोअटकभटकवटमांह ॥ टीका ॥ यहसाक्षातदरसनु
जैसीछविसौंदेख्योहैनाइकुतैसैंहीनाइकासखीसौंकहति
है पूर्वानुराग ॥ कवित्त ॥ लटकिलटकिचलिनिरखिमुख
वारफेरिफेरिगीवांछांहमंजुलमुकटकी ॥ केसरिकीखौ
रिपीतकालिंदरुचिरभालकुंडिललसौंहैंवनमाल
टटकी ॥ कैगईविपनमगअटकभटकतवहीतैंनैननिमें
कुरीसोभामोहललानटकी ॥ भूलीसुधिघरकीरीलोक
लाजसटकीरीअटकीहियेमेंफहरानिपीरेपटकी ॥ ५० ॥
साक्षातदर्सननाइककौ ॥ दोहा ॥ सु
न्दरीस्यांमसतारननमुखससिकीउनहारि ॥ नेहदवाइ
तुजौरलौंजिरधिलिसासीनारि ॥ टीका ॥ यहसाक्षात
दरसनुजैसेंनाइकादेख्यौहैतैसैंसखीहैतैसैंहींनाइकुस
खीसौंकहतुहै ॥ कवित्त ॥ उन्नतपीनउरोजनुकोब
नुकीछविमारहसुपावतुहै ॥ मुखसोमहतुसौंमुजुन्हेयार
सौंदुतिदीपकौमोदुबढावतुहै ॥ कविकास्वैराजतिचू

नरीस्पांमसतारकबैंमुलपावतुहै॥वरजामिनीसी नवनागरिदेषतनीरजैंनैरदवावतुहै॥ ११॥दोहा॥दृ ष्टानुरागुनाइकाकौ॥सनिकज्जलचषजवल गनुउपज्योसुदिनसनेहु॥क्यौंनन्रपतिह्वैभोगवैलहिसुदेसुसवुदेहु॥टीका॥यहदृष्टांतुरागुहैनाइकाकेनैनजंजनसहितदेषिनाइकेकंनुरागुउपज्योसुसषीनाइककेअनुरागउपज्योदेषिनाइकासोंकहतिहैनाइकापरकियानाइकुहूसषीसोंकहैतोसंभवै॥कवित्त॥देषीयेकवनिताविचित्रवरवांनिकसैंजाकीजोतिहीसैंजगिमगिरह्योगेहुहै॥विहसिविहसिमुखवोलतिसरसवांनीवरसतुमानोअमीवूंदनुकोमेहुहै॥कैहैकविकसबैंनन्रपतिह्वैभोगकैरेरजधांनीसफलसुदेसुपाइदेहुहै॥नैनमीनलगनपेअंजनुलसतुसनिअैसैंसुभजोगसनैउपज्योसुनेहुहै॥ १२॥दूसानुरागुनाइकको॥दोहा॥ माहूसोंतजिमोहुदृगचलेलागिउहिगैल॥छिनकुछाइ छविगुरडरीछ्लेछवीलेछैल॥टीका॥यहदूसानुरागुहैनाइककेदेषिनाइकाकौअनुरागुउपज्योहैसुनाइकासषीसोंकहतिहैनाइकापरकियाऊढा॥कवित्त॥

न्या घु रीतें मोहनीकों मंत्रु डारि दीनौ उन रूपकी मिठाई ता-
घरीतें कलमलें हैं ॥ ज्यौं ज्यौं रहु करिरै गिरावी ग्रोट ग्र च
न कीत्यौं त्यौं वलु करि उतही कौं लेहैं ॥ मोहूसौं जुहुतौ
नातौ पलकमें कारि हुंतौ छोडि सव तांतौ वाकौं गेलल
गि चलेहैं ॥ नंदकौ कुमार ग्वालिनीवी सविसेट गुहेरी देवत
हौं दीठि मेरी उनैन छूले हैं ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ चितवनि ग्रौर
भाइकौ गोरे मुह मुसक्यानि ॥ लगनि लगी ग्वालीग रचि
त घटकति नित ग्रानि ॥ टीका ॥ यह नाइकाकी चेष्टा ना
इकु सखीसों कहतु है पूर्वानुरागु है ग्ररुद सग्रवस्याके
भेरमें सुमिरनु जानियें ॥ कवित्त ॥ भूलति न क्योंहू वृषभा
ननयाकी वानि वह ग्रंगरानि ग्रंगुरीनि चटकाइवौ व
ह गोरे वदन की मुसिकानि वह चह चही चितवनि
ग्रौरे भाइ कौ ॥ घूंघट करनि कर कमलु उसारि वह लटकनि
मिलनि सजनी सौं लपटाइवौ ॥ ऐसी भांति जव तें मैं निर
खी हौं तव ही तें पलपल मांज घटकति चित ग्राइवौ ॥ ९४ ॥
दोहा ॥ इती भीर हूमे दिवैं कितहूं कैं इत ग्राइ ॥ फेरे डीठि
जुरि डीठि सौं सवकी डीठि वचाइ ॥ टीका ॥ यह नाइकाके
चितेवे की चतुराई सखी सखी सौं कहै तौ होइ नाइका परकि
या ॥ कवित्त ॥ सौ कैसे गात दु हाई सौ वेस सनेह सनी रस

कहा लौं कही व
कौं वरसावै॥ चाह के चाइनु की चतुराई कहा लौं कही वरे को
हतैं नही आवै॥ भीर भई अति भारी तऊ मन भायो करे को
ऊमे दुन पावै॥ घात गहैं जु रिडीठि सौं डीठि फिरै सब कौ न कहू
ऊ मेदुन पावै॥ डीठि वचावै॥ ८५॥ दोहा॥ गडी कुटम की भीर में रही वैठि
डीठि वचावै॥ ८५॥ दोहा॥ गडी कुटम की भीर में रही वैठि दै पीठि॥ तऊ अनेक परि जाति इत सलज हंसौं हीं डीठि॥
टीका॥ यह नाइका के सनेह की निकाई अरु चितेवे की चतुराई नाइकु कहतु है नाइका परकिया॥ कवित्त॥ प्यारी प्रवीन सनेह सनी न घते सिव लौं सुव की निधि त्यों हीं॥ चौंरके सैं ऊ मो ऊरतैं न टरै जु चुभी चित चाह जिनेरनि चौंहीं॥ वैठी वधू गुर नारिनु मैं जऊ नारि नवाइ घरी सकुचौहीं॥ लालप गी पलयेक तऊ परि जाति इतै वह डीठि हसौंहीं॥ ८६॥ दोहा॥ नहि नचाइ चितवति दृगनि नहि वोलति मुसिकाइ॥ ज्यों ज्यों रुष रुषो करे त्यों त्यों चितु चिकनाइ॥ टीका॥ यह नाइका की चेष्टा नाइकु सषी सौं कहतु है कि वह रुषाई मेरे चित कौं चिकनावति है॥ कवित्त॥ जो रति न लोचनन चाइ नेह चाइ भेर मृदु मुसिकानि के न भाउ दरसातु है॥ वोलति न कहूं मन मैं मोहन मधुर वैन मोरति न भृकुटी मरोरति न गातु है॥ केहू कवि कथ्य ताकी गरवीली वानि व

ए ग व

नजो न्यो जातु है॥ ज्यौं हीं त्यौं रहति प्यारी राधा रूप छकी सी
करि त्यौं हीं त्यौं खरोई खरो चितु चिकनातु है॥ उदाहरन
चितई ललचौंहैं चख डटि घूंघट पट मांह॥ छल सौं
चली छुवाइ कै छिनकु छबीली छांह॥ टीका॥ यह ना
इका परकिया है चेष्टा जु कारि गई सु नाइकु सखी सौं कह
तु है॥ कबित्त॥ पूरन सुधानिधि सो बदनु दिखाइ की
घूंघट की ओट कीं कै चकचौंध जाइ कै॥ घूंघट के पट मैं दै
निरखौ निसंक चितवनि ललचौंहीं चाहि चौकनी ज
ताइ कै॥ कहै कवि कृस्न हु मुलकि अली की ओर च
ली काहू छल सौं छबीली छांह छुवाइ कै॥ हाहा बाहि
कौ ही जा हियें छबि सौं ही वह मोही तें न टरति रही जु
री ज छुवाइ कै॥ दोहा॥ छबीली नाभि दिखाइ कै रसि
रे टि किस छिन समाहि॥ गली अली की ओट दै चली
भली बिधि चाहि॥ टीका॥ यह नाइका परकिया की जु
चेष्टा देखी है सु नाइकु सखी सौं कहतु है॥ कबित्त॥ ग्री
जु मैं अचानक बिलोकी ब्रजबाल येक वाकी दुति रही मे
रे उर मैं बिहारि कै॥ दामिनी लौं हेल चारु चातुरी कलाइ
तो कका मह कौ कामिनी करोर डारौं वारि कै॥ छबीली
उघारि कै दिखाइ कै गंभीर नाभि घूंघट निहटि की नो सकु

चली
चिसम्हारिकैं॥भांतिभलीसांकरीगलीमेगजगामिनी
ग्रलीकीग्रोटगैहँगईयोनिहारिकैं॥९६॥दोहा॥गेड
कुडिगतिसीचलिठठुकिचितईचलीनिहारि॥लि
येंजातिचितचोरटीयेहगोरटीबारि॥टीका॥यहन सों
इकाकीचेष्टासखीनाइकुकहतुहै॥कवित्त॥मनम
थवांमसीचपलग्रलियारेचषचग्रधरचसनदुतिग्रति
रसातिहै॥सोनेसुदेसतनलोनेसेउरोजव नैकौन
कोनमतिलषिवेकौंललचातिहै॥डगयेकडिगतिसी
चलीफिरिठाडीभईवहुरिविलोकिचलीमुरिमुसिका
तिहै॥जोवनमरोरभरीगोरटीगयंदगौनकौनयहचो
रटीचुरायेंचितुजातिहै॥१००॥दोहा॥भौंहउचैग्रांच
रुउलटिमोरमोरिमुहमोरि॥नीठिनीठिभीतरगईडी
ठिडीठिसोंजोरि॥टीका॥यहनाइकाजुकियादेषीहैसु
नाइककेचितमेवसीहैसुवारवारसखीसोकहतुहैनाइ
कापरकिया॥कवित्त॥रूपकोग्रपारराधाठाढीनिजु
ग्रहद्वारजाकीद्युतिपररतिवारियेकरोरिकें॥मोहिदै
रिकें॥मोरिमोरिमुहुजमुहांनीग्रंगिरानीपुनि

ग्वालसनललितनैनवड़रारे टोरि कैं ॥ नौ ठिनी ठिगई भौं
नभीतरसरोजमुषी डीठि सौं मिलाइ डीठि नीकें नेहु जोरि
कै ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ ऐंचति सी चितवनि चितै भई ओट अल
साइ ॥ फिरि उझकनि कौं मृगनयनि दृगनि लगनियां
लाइ ॥ टीका ॥ यह नाइका की चितवनि देषि नाइक
के चित में वसी है सु नाइक सषी सौं कहतु है कै वसेंई फि
रि चितवै यह अभिलाष है ॥ कवित्त ॥ षिरकी उघारि ल
षागारि निहारी इत ठाडौ वनवारी मनमथ छवि छाइ कै ॥
ऐंचति सी चितवनि मोहनि मरोरि करि लगनि लगाइ चि
तु लै गई चुराइ कै ॥ कहै कवि कृष्ण इंदवधू कौं लषिं दल
लरहो ठग की सी मूरि षाइ कै ॥ उन चितवे तु सव काज विस
राइ कै सु फिरि अवलोकिवे कौ आस उरलाइ कै ॥ १०२ ॥ दो
हा ॥ नेठ हारे हू मदाह उत जलकन बुझे वडवागि ॥ जाही सौं
लाग्यो हियौ ताही के उर लागि ॥ टीका ॥ यह नाइक कौं या
लिंगन करति है सु सषी प्रगट कहति है नाइका सौं ॥ क
वित्त ॥ आगम मरोरि भुजा भरि भेंटति मो सौं कहाइ ठला
तिहै ठाली ॥ पानी कौ आगि सिराति जु पानी सौं रीति
लीकवतेयह चाली ॥ याह उते उमदाह मती विधि ठाड़ो
है देषि वेहे वनमाली ॥ जाही सौं तेरो लग्यौ हियकौ हितु
ताके हियैं कि लिला गति आली ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ देष्यौ जे
नदेष्यौ कियौ अंग अंग सवे दिषाइ ॥ वैठति सौतन में स

कुचिवैठीचितैलजाइ॥टीका॥यहनाइकापरषि
याकौंचितैकैलाजकरिवोदेष्योसुनाइकुसषीसेंक
हतुहै॥कवित्त॥सोहतिसरूपसनीवैठीहीं
द्वैलीराधाहैंहूंतहांनिकस्योअचांनकहींआइकैं॥
मेरीओरदेषिउनिदेष्योगनदेष्योकरिमुसकांनीअं
गअंगसकलदिषाइकैं॥पैठतिसीतनमेंसकुचिम
नकैंचतिसीचितवनिचाहिवैठीसिमटिलजाइ
कैं॥वहमुसकांनिचितवनिसकुचनिक्योंहूंटरति
नरहीमेरहियैंमडराइकैं॥१०४॥दोहा॥चिलकचि
कनईचटकसौंलफतिसटकलौंआइ॥नारिसलौं
नौसांवरीनागिनिलौंडसिजाइ॥टीका॥यहना
इकाकोसांवरोरूविदेषिनाइकुआसक्तभयोसुस
षीसैंकहतुहै॥कवित्त॥चिलकतिचारुचिकन
ईकीचटकभरीचलतिलफतिजैसैंलगलचकति
है॥सांवलीसलौनीअतिलौनीअजौंहौंनीवेसतो नि
भासनीसीसमैंसहितलसतिहै॥कुटिलसुभाइचि
तवनिप्रेंमविषभरीनागिनिज्योंइहिव्रजनागरि
वसतिहै॥मनकैंडसतिअरुतनकौंलहरिआवेलो ल
गतुनजंत्रमंत्रअरभुतगतिहै॥१०५॥अथनेनलगनि
दोहा॥मेहौंजान्योलोइननुजुरतवाढिहैजोति॥

कोहोजांनतुडीठिकौंडीठिकिरिकिरीहोति॥टीका॥य
हनाइकाअपनेनेननुकीआसक्तिसषीसौंकहतिहेअ
नुयहकहतिहेकेजबतेआंषिदेषीतबतेऔरकछूसू
झतुनांहीं॥कवित्त॥जादिनातेंआलीतेंकहीकिमन
मोहनकेलोचनसलौंनेदेषेअतिहितुवाटिहै॥ता
दिनातेंमेंहूंजांनींचारियहनेनमयेजोतिकोप्रकाश
कछूचषिकाईचोटिहै॥जोरतहींनेनविघातनमेंबं
गारिगईमरनहुतासनुबरतुजातिजातिहै॥कौनु
यहजांनतुहैंडीठिहींकौंडीठिपीरहोतिकिरिकिरीके
उसकतुनकाटिहै॥१०६॥दोहा॥त्यौंत्यौंप्यासेईर
हतज्यौंज्यौंपियतअघाइ॥सुगुनसलौंनेरूपको
जुनचषनतृषाबुझाइ॥टीका॥यहनाइकाकेनेन
लगेहेंसुसषीसौंकहतिहै॥कवित्त॥हरिमुषच
न्दतोंचकोरह्वैरहतजोनिलोचनकमलगतिभौं
रकीगहतेहे॥देषतहीदेषनरहतिदिषसाधलागी
होतअनमेषयोंविसेषउमहतहैं॥टोनोकछूक
लपांनप्यारेकोसलौनोरूपतातेंनवुझतितेषा
कलनलहतेहै॥तृपतनहोतक्यौंहूंमाईरीनयन
मेरेपियतअघारतौत्यौंप्यासेईरहतेहैं॥१०७॥दो॥

हा॥ अलिइनलोइनसरनुकोषैरोविषमसंघात॥
लगैलगायेयेकसेदोउनुकरतसुमात॥ टीका॥
यहलोकाेअपनेनेत्रनुकीअवस्थासषीसोंकहतहैना
इकाकेहेवानाइकुकोहे॥ कवित्त॥ सरसजोकैलागे
ताहिसुधिनरहतिकछूजोहनतुताकेउररचकवि
धानहे॥ तिनतेअधिककुसमायुधकेपांचोवान
जिनकेलगेतेटरैमुनिनुकेध्यानहै॥ कस्पप्राणप्या
रेकीहुहाईजियजानिअलीसवहीतेविषमविसेषवे
नवानहे॥ दुहुनिविकलकरंजतहूलौकजानदुहू
भांतिगेहूनत्यागेहूसमानहे॥ १०४॥ दोहा॥ दृगनु
लगतवेधतहियहिविकलकरतअंगआन॥ येतेर
सवतेविषमईक्षरातीछनवान॥ टीका॥ यहना
इकाकेनेत्रदेषिनाइककोंविकलतानईसुसषी
नाइकासोंकहतिहेअथवानाइकुनाइकासोंकहतु
हे॥ कवित्त॥ भौंहकमानविनाजिहितेंछुटिटुटे
चलेदुहूओरकनेरे॥ जेननुआनिअचूकलगेहि
ये भेरतक्योंहफिरैनाहिफेरे॥ औरसवेअंगव्याकुल
कैसरसातविथाघहलातघनेरे॥ रीतिगहेसवतेंविष
मेंविसमेसरतीछनईक्षरातेरे॥ १०५॥ दोहा॥ सार

॥ठा॥ कोडा ग्रं सूवृंद ॥ कसि सांकर वरुनी सजल कौ
नैवरुको निमूंद ॥ दृगमलंग डोरैं रहत ॥ टीका ॥ यह
नाइकको देखि नाइका के नेत्र विवस भये हैं सु परत
है सखी सखी सों कहति है सखी नाइका सों कहै ॥ कवि
त्त ॥ तें तव तें त्रवभान सुता हरि के दृग नैं कनिहारि है
रहैं ॥ वे तव तें न हलैं न चलैं रहे वाही चितौनि को चा
हनें रहैं ॥ कोडा किये सु वानि को वृंद जंजीर वडी व
तु रुनी जकरे हैं ॥ नैन ग्रवैनि को सुधि लहु मलिंग म
नौ मुहमुंद परे हैं ॥ ११९ ॥ दोहा ॥ कहत सवैक विकम
लसैं सो मत नैन पखान ॥ मतर कुक नइ नवीय लग
त उपजत विरह कसान ॥ टीका ॥ यह नेत्र लगनि है
यह वचन नाइका कहै तौ वनैं नाइका कहै तौ सनै नें
॥ कवित्त ॥ वरनि वरनि दृग कहत सकल कविं
लकु रंग मीन खंजन समान हैं ॥ कहै को विंक सरि
पषि चतुरानन नेनों चलये पाहन वनाये मेरे जा
है ॥ कमलसों कमल लगाइ देषौ केयो वर येक यांव
क्यो हूं उपजतु कसानें है ॥ लागत हीं वियनैं नतव
उपजि उठे लगनि अगनि याते प्रगट समान है ॥ ११
दोहा ॥ सवही त्यों समुहाति छिनु चलति सवनु दे पी

ठि॥वाहीत्यौंठहरातियहकविलनरालैंडीठाटी
का॥यहनाइकालछितासखीनाइकासोंकहतिहै
सखीकोवचनसखीहूसोंहोइ॥कवित्त॥लालमन
गहनेकीछविपरतूंतोवलिरीझिरहीमोहिवहरा
नतिहैमोरीज्यों॥प्रीतिउरअंतरकीप्रगटविलोकि
घतिसोंहकियेंकैसेंनिवहतिचोराचोरीज्यों॥स
वसोंलखतिमिलैकाहूसोंनतेरीडीठिपीठिदैचल
तेपुनिसवहीकीओरीज्यों॥२तउतेहेरिचितचोर
हांकीओरआइरहतिठहराइमैंनकीकटारीज्यों॥ हे
॥११२दोहा॥टरैंठारतेंहींटरततूजोटारटरैंन॥
क्योंहूंआननआनसोंनैनालागतनैन॥टीका॥
यहनाइकु[illegible]आपनेलैननुकीआसक्तिकहतु
हैअरुनाइकाकेनैमुहैंकिनाइकुओरकेआसक्ति
हैसुंनाइकाकोभ्रमुदूरिकरतुहैअरुजोनाइकाना
इकसोंकहैतोउराहनोसंभवै॥कवित॥ओरते
वांनिपरीसुपरीनटरैवहकोटिउपाइकियेंहूं
रसकैहूजितरीझिरचैतितैंनचलैंजुकहूंलसै
नैंना[illegible]हींटरैंजिंहठारटरैंनहिंदूसरैंठारटरैंस

पनैहूं ॥ ग्यान कियैं कहै ग्यानन ग्यानसौं ये दृगनैं
२ पेरे लागत क्यौंहू ॥१३॥ अथ दोहा ॥ रिझि बिजलजवनैंतु
छिनु बिछुरैं नैं ॥ मरत तरत बूडत तरत रहत न घरीव
नैनु ॥ टीका ॥ यह नाइका ग्रपैने नैनुकौ ग्रासौं
सखीसौं कहति है ॥ कवित्त ॥ ग्राजु निरख्यौ मैं ब्रजरा
कौ कुंवर कांन्ह जाके ग्रंग ग्रंग ग्राली मन हिहरतै
कै सप्रांण प्यारेकौ दुहाई वांणि काई देखै
कोरि रतिपति ग्रति लाजनि मरत है ॥ ताकी सोभास
लिल मैं जवतैं नयन परत क्यौं घरी लौं छिन हूं न बि
छुरत हैं ॥ ग्रैसे भये रहत तहीं कर तग्रनेकनाइ भंव
टरत पुनि बूडते तरत हैं ॥११४॥ अथ दोहा ॥ नैन लगैं
तिहिं लगनि जुन छुटैं छुटें हू प्रांन ॥ काम न ग्रावे
यक हूं तेरे सैकसयांन ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा
परकिया सखीसौं सीख देति है तासौं ग्रौढा कही
है ॥ कवित्त ॥ नैननि ग्रैसौ गह्यौ हितकौ पनु चै
लहे जवलौं हरि है रे ॥ प्रान छुटै हूं नवा नि छुटै ज
ग क्यौं न रहे सेष उपहास घनेरे ॥ कौ कुलकानि कहै
न पुरी गई लाज लजाई यचावति नैरे ॥ तौ भट्ट ग्रवै

कसयांननयेकहूकामनग्रावतमेरें॥१५॥दोहा॥
लल्लनातिहारेरूपकीकहेंरीतियहकोंन॥जासें
लागतपलकुपललागतपलकुपलोंन॥टीका॥
यहनाइकाकीअवस्थासषीनाइकसोंकहतिहै
किजवतेंतुमरेखेहोतवतेवाकेपलकहूनाहीलं
गतनाइकाहनाइकसोंकहेतोसंभवे॥कवित्त॥
वारकेदेखेसुध्यौनरहेदिखसाधलगेकुलकानि
भगै॥मोहनीरीतिकछूमनमोहनरावरेरूपकी
योंउमगै॥कौनठगोरीलहीकितकाहूरमेंनव
सीकरमंत्रपगे॥जाकीकहूपलयेकलगेपलता
कीपलोपलकेंनलगे॥१६॥दोहा॥हेयहरहति
हईछईनईजुगतिजगजोइ॥डीठिहिडीठिलगेंद
रदेहदूवरीहोइ॥टीका॥यहनाइकाकेनेत्रनाइ
ककोदेखिलगेअरुदेहदूवरीहोतिहेनाइकास
षीसोंकहतिहेसषीसषीहूसोंकहेतोवनेअद
भुतहूहे॥कवित्त॥देषतदेषतेहूंनलहेकलप्रेमम
रूरउठेअतिभारी॥देखेविनानसुहारकछूपुनिहा
ररटेअतिहोतदुखारी॥व्याकुलह्वेअकुलाइम
हामुरझाइररेंनिसिनीदविसारी॥नेनलगेत

नहूवरोहोइगनौमोसनेहकीरीतिनि
सो॥॥इनत्रंखियांदुखियांनिकौंसुखसिर
नांही॥देखेंवनेनदेखेतेंअनदेखेंचकुलाइ
॥॥यहलेकउपालंभनाइकाकेसखीनाइ
कीसोंकहे॥सवैयाकवित्त॥लागतिनपलकलल
लाधिवेकीवाहीध्यानपगतिजगतिदिन
है॥ज्योंज्योंनिरखतित्योंत्योंउमहतिभूखीवे
होतिनत्रहुखोयरीषरीललचातिहै॥त्रो
येवरतिविखमविरहागानिमेमीनजलहीं
कीसीगतिदरसातिहै॥सिरज्योंनसुखइन्हु
होइत्रांखिनुकोंदेखेंनत्रघातित्रनदेखेंत्रकु
तिहैं॥११॥दोहा॥देखतकछुकौतिगइनेदेखों
कुनिहारि॥कबकीइकटकडटिरहीटरियात्रंगुरि
नुफारि॥टीका॥यहनाइकाकहैकैनाइकेवों
वतिहैसुसवीनाइककोंवतावतिहैसखीकोवच
क नुनाइसोंप्रीतिकराइवेप्रयोजनु॥कवित्त॥मैन
हतेलेनमनमोहनतुम्हारोछविनैननुमेंसुभावु
रि जवौरिरहिरावरिकैनगरकोवासुनासुनलदकोउ

पुतरीतैनिरषिसकेनप्यारीवदनुउघारिकैं॥विनुदे
षेंकलनपरतियातेदेषिवेकौंकस्योहैउपाऊंदेसौ
तधौंनिहारिकैं॥कवकोनिमेषभूलिलोचनलाइ
तउटिरहीराटीकरपल्लवसौंफारिकैं॥११॥दोहा
यकौजकौसोह्वैरहौवूझैंवालतिनीठि॥कहूंडीठि
लागीलषीकेकाहूकीडीठि॥टीका॥यहनाइका
लक्षितोहैसषीनाइकसौंकहतिहैसवीहूसौंकहै॥
कवित्त॥याजुचकौसोजकौसोकहाकछूसंगस
हारिराईसीहरी॥वूझेंहूनोठिकैमुषवैनहलेन
वलेजनुचित्रउकेरी॥मेरीलषैयहतेरीनईगति
मोमतसांचसमूहनिघरी॥डीठिलगीकिधौंकाहूकी
तोहिकिडीठिलगीकहूकांनसौंतेरी॥१२॥दोहा
नेहनेनेनकिकौंकद्रुउपजीवडोवलाइ॥नीरन
रेनितप्रतिरहेंतऊनप्यासवुझाइ॥टीका॥यह
नाइकाअथवानाइकुआपनेनेत्रनुकौंव्यासक्ति
सषीसौंकहैसषीसषीसौंकहैतोहूसंभवे॥कवि
त्त॥येकपलोनलगेंपलकेंललकेंलषिवेकहेंल
गीचटी॥नीरभरेनितसह्योसरहैनमिटेतऊभूरि
त्रषाउपरी॥आठहूजामतपेतरफेंउपचारहूसौंनि

घरै कै घर टो ॥ यह प्रीति लगी न हिये यों मिलु कों कोउ
पावक व्याधि प्रलै प्रगटी ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ के वांम
वैई हिय गली रहैं चलाइ चलैन ॥ दरसन कौं सा
धेर है सूधे हिं नैन ॥ टीका ॥ यह नाइका अप
ने नैनन कों दसा सखी सों कहति है के देषौ तुम
जैसे देषि नाहीं सकति अनदेषे अकुलात है म
ध्या परकिया ॥ कवित्त ॥ काहू अली वहु वेरग
ली रहैं आवतु चारु सिंगारु किये हूं ॥ देषिवे कौं त
रहै तब हैं ललचाइ रहैं न चलाये चलै हूं ॥ लाम
च चांनक आइ डहै पछिताति यहै अपने जिय में
हूं सो हैं चितवे कों साधे रहै उर सूध विलोचन है
तनके हूं ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ साजे मोहन मोह कों मोहि क
रतु कुचैन ॥ कहा करौं उलटे परे टोने लोने नैन ॥ टी
का ॥ यह नाइका प्रोढा परकिया नाइका कों देषि नेत्र
अकुलाते हैं सु सखी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ वृजति
हैं सौति भाइ सखी यह सौ घइ नै सै घर कहि कौं नै मैं स
जे मोहन मोहिवे कौं वकु वृजन साज बनाइ सलोने
देषत ही ललचाइ रहै अवे वस चा ने सपनें हूं न होने
मोही कों दें नल गेहु वे नैनये ज्यों उलटे परे जोतहु रौ

नैं ॥१२३॥ दोहा ॥ लोभलगे हरिरूपके करी सांट जुरि
जाइ ॥ होंइन वेचीवीच हीं लोइन वडी वलाइ ॥ टी
का ॥ यह नैन लगनि नाइका कौ वचनु सखी सैं ॥ क
वित्त ॥ नंदकिसोरकी मोहनी मूरति देखत हीं अतिमो
मन भाई ॥ तौ लगि लोभलगे दृग ग्यौ गैं ईं जाइ मिले मि
लि सांट मिलाई ॥ आपनौं सार भुसाधौ सवै विधि हौं
र न वीच हीं वेचौ री माई ॥ केसौ करौं न कछू वनि आ
वति नैनन के मत मैं तौ ठगाई ॥१२४॥ दोहा ॥ जसु अ
पजसु देखत नहीं देखत सांमल गात ॥ कहा करौं लाल
च भरे चपल नैन चलि जात ॥ टीका ॥ यह नाइका सखी
सिखा देति है तासैं आपनें नैननु को आसक्ति कहति है ॥ क
वित्त ॥ सासु रिसाति सुकै ननदी तऊ तू सिखै सखि सौ ब
वकै वैन ॥ हे ब्रजवासु चवाई री माई चहुंओर चलै
उपहास की सैंना ॥ देखत सुंदर सांवरी मूरति लोक अलो
ककी लोक लखैं न ॥ केसौ करौं हटके नरहैं चलि जात न
कलचि लालची नैंना ॥१२५॥ दोहा ॥ नैंना नैंक न मा
नहीं कितौ कह्यौ समुझाइ ॥ तनमन हारें हूं हसैं तिनसैं क
हा वसाइ ॥ टीका ॥ यह नाइका आपने नैनु को आ
सक्ति सखी सैं कहति है ॥ कवित्त ॥ सखि ये जग के उप
हास बितै रहियै गुरु लोगनि मांझ गसैं डरयौं नि

यहै तु अपने उर है सुमजाइ रहै नहि नेकु वै सै अमरी
कै मेरो कह्यो न करै तेनु हू मनु हारै तउ नलसै ॥ यै
नै मुग्ध्यो सजनी इ न नैननि पेहरि है हरि है सर्ई है सु
॥ परकीया दोहा ॥ सुकै सकाइ न तमु बिरह जिसदिन सरस
सनेह ॥ रहै बहै हैलगी दृग निरोप सिषा सी देह ॥ टीका ॥
यह नाइका की नाइका को ध्यान लहै करत है तउ विरह यस तुन
हो सु नाइका सषी सो कहतु है ॥ कवित्त ॥ वामु गनी चा
के विक्कुरै जु भई गति सो नहि जाति उचारी ॥ सुइ सा प
रिपूरन नेह बिना तन चलौ उर जेत नर धारी ॥ जदू पिदी
प सिषा सम नैन लुलागी रहै तन कौ दुति प्यारी ॥ तदू
पि सूजै कहू न हियौ भरिपूरि रह्यौ बिरहा तमु भारी ॥ ७७ ॥
दोहा ॥ लाज लगाम न मानही नैना मो वस नाहि ॥ ये मु
हजोर तुरंग लौं ऐंचत हू चलि जाइ ॥ टीका ॥ यह नाइ
का सषी सौं अपनी आसक्ति नेत्रनु कौ अवस्था कहति है
॥ कवित्त ॥ देषत बानट नागर कौ द्विविफ़ादि परे हट वे
रहै हैं ॥ लोचन लोल तुरी मुंहजोर सु लाज लगाम कौ
मानत नाहीं ॥ ऐंचति हो अपने इत कौं व तिये व तु के उत
चलि जाहीं ॥ कैसी करौ नहि मो वस ये कुल कानि के
मारहकें तिन्है डरा है ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ जिन लाज कि कोइ
री ठिरी चितु उत है रहतु टेटी लाजकी लाव इंग गै

गढ़विझोरमैंभयोभौंरकीनाव॥टीका॥यहनाइ
कुनाइकाकेअंगअंगकीछविपरीजोहैसुअपनेचि
तकीआसक्तिसखीसौंकहतुहै॥कवित्त॥जोवनम
हानदमैंरूपकोसलिलुभयोतरलतरंगहाउभाउन
कोभाउहै॥अंगअंगछविकीउमंगजोरभारीभौंरच
पलकरीहुतहांफस्योचितनाउहै॥चलिपेनसकतु
भ्रमतुरहैवाहीठौरतरफतिवूकाजमिटीलाजला
उहै॥लागतिलक्योंहूकुलकानिकोविसालवडोधी
रैप्रवलपतवारीकोनदाउहै॥२६॥दोहा॥इततेउ ज-
तउततेइतेछिननकहूंठहराति॥जकनपरतिचकईभई
फिरिआवतिफिरिजाति॥टीका॥यहनाइकापरवि
यामध्याहैसुयाकीविरह्थासखीसखीसौंकहतिहैजै
सखीनाइकसौंकहेतोहसंभवै॥कवित्त॥तवतेंअट
कीनटनागरसौंतवतेनकछुमनलावतिहै॥ठहरा
तिनहींछिनुयेककहूंनिसिवासरवहरावतिहैमेवहू जौं
रततेउतधावतिहैकवहूंउततेंइतआवतिहै॥चकईजि
मिआवतजातकछूपलकौनकहूंकलपावतिहै॥२७॥
दोहा॥कोजानैह्वैहैकहाव्रजउपजीअतिआगि॥म
नलागैनैननुलगैंचलेनमगलगिलागि॥टी
का॥यहनाइकाअपवानाइकाकेदृष्टानुरागुतेविरह

कौश्रगिनिसौंमनआकुलहैसुसषीसौंकहैहै॥कवि
त॥ दीसैनभूमवरैविलुरैंधनुउन्नातह्वैप्रगटैनसि
षा है॥ नैसुकहेंन्नीलिलागतहैंमनुआंनिलगेसु
चुंगनिदाहै॥ लोचनजोरटरैंनवुझैंउपजीवृज
मेकौउआगिमहाहै॥ देखैहूडोठिपरैनकधूंगव
जोलेकौआंगेधौंह्वैहैकहाहै॥१३१॥दोहा॥उरन
टरैनीरलनपरैहेरैनकोलविपाकु॥छिनछिनकुलछिकिउघ
केलषिपरैविषमछविछाकु॥टीका॥यहनेत्र
ननिहैंसुनाइकुरूपवालनाइकासषीसौंकहैहैकिदविं
कीछाकुधरोविषमहैसुविषमताववर्णनकरैहै॥कवि
त॥सुधिकौंनधरैजोरदैनेसुकौलपरैमहाभयतेंन
टरैमुषनिकरैनवाकुहै॥ कहैकविक्कक्योंहूंयेव
वेरछुकेसुतोउछकेजनेकौंज्ञसमेकौपरिपाकुहै॥सौ
होलगैवसैंजि॥सिदिनतरफरैपलकनिगतिहरैसौ
हकौनधाकुहै॥ औरमतवारेततोमेरेसुनवारेयहस
बहीतेविकटविषमछविछाकुहै॥१३२॥दोहा॥उ
डगुडोलगिषिलालकोअंगअंगनामाह॥बौरी
सौंदौरीफिरतिहुवतिछवीलीछांह॥टीका॥यह
नाइकापरकियापोढाहैसुनाइककीचंगकोछांह

हुये तें नाइक के मिले ही कों सुदु मान तिहें सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ नंद लाल नव नागरि पै निज रूप दिखाइ ठगोरी सों लाई॥ बाहिर जात वनें गृह तें न विलोकिवे कों चाहति है गुरु लाई॥ प्यार की चें गर तें मैं उड़ी लखि मोर भरी निजु आगन आई॥ हे ति गुड़ी कों जितें जितु द्दाह तितें तित कों वे कों डोलति धाई॥ २३॥ दोहा॥ चलत घेर घर घर तऊ घरी न घर ठहराइ॥ समझि उहीं घर कों चलें भूलि उहीं घर जाइ॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा पर क्रिया है जहां चितु लाग्यौ है तहां जाति है सखी सखी सों कहति है॥ कबित्त॥ वाल विथा रस कै वस कै वस कै न सकै मन कों समझावै॥ हो तु घनें घर घेर तऊ घर यें क घरी रहिवो नही भावै॥ रे न दिना कल कों न फिरै न कहूं कल कों न हलबो बिनु पावै॥ जानि चलै तौ उही घर आवति भूलि परै तो उही घर आवै॥ २४॥ दोहा॥ ह्यां तें ह्वां ह्वांते इहां नेकौ धरति न धीर॥ निसि दिनु डाढी सी फिरति बाढी गाढी पीर॥ टीका॥ यह नाइका के चित्त में लगनि लगी है सु याको मनु कहूं कल पावतु नाही याकौ दसा सखी सखी सों कहति है॥ कबित॥ सांचा मन मोहनी की परम रसाल चितु भी व्रज वाल कैं न छिन विसरै कहूं॥ बर

सतजलतरसतदृगदेषिवेकौकहेत्रेसोल
डुरात्रैतेदुरैकहै॥ घरतेवगरआवेवगरतेप
धावेफिरेज्योंविकलपलुकललपरेकहै॥ व
नमध्योरनैसकौधरेनधीरउठसीफिरैतिव
छिनलनरहैकहै॥१२५॥दोहा॥पलननचलैजाकिस
हौचाविसीरहोउसास॥ अवहोंतनुरितयोकह
नुपरयोंकिहिंपास॥टीका॥ यहचितलगनिहै
वीनाइकसोंकहतहै॥कवित्त॥सासनउसास
हैवासकीसम्हारहैनग्रैसोहैकैकोनकैधोंहितै
हिहेरहौ॥ कितहेरीतेरोमनुरीतोसोलगतुतनु
अवहोंतसुधिबुधिकहिक्योंचितेरहौ॥ चित्रकैसीलि
षीठरीजाकितेग्रचेतभईपलकनिगतिभूलीचकि
चितेरहौ॥ काहेहेरिहरीमतिविसरीसेवसुरतिहै
नीतेरीयहगतिदेषिचकितेरहौ॥१२६॥दोहा॥जै
ज्योंआवतिनिकटनिसि त्योंत्योंबरीउताल॥जमवि
जमकिटहलैकेरलगीरहचटैवाल॥टीका॥यहनाइ
कापेंडैहेसुसवीसवीसोंकहतिहै॥कवित्त॥जोंनैमयें
हैन भयेहियेमेंपियप्रेमकीजोतिसीजागी॥ वासरज्योंव
रावतितौठविधीचलनकेरसमैंअनुरागी॥ आवतिज्यों

ज्यौंनजीकनिसां तियत्यौंत्यौंउछाहउमंगविपागी॥स
खिरकाजकैंग्रहकेरवनीरतिकेलिकैंलाहकलागी॥७७॥
दोहा॥भृकुटीमटकनिपीतपटचटकलटकतीचाल॥
चलचषचितवनिचोरिचितुलीयोविहारीलाल॥टी
का॥यहनाइकाप्रौढाहैनाइककीसोभादेषिमोहितभईसु
अपनेतनकीवृतिसषीसौंकहतिहै॥कवित्त॥कहि
वेकौंइतौकहौंरीयेकवातकाल्हिवनिठनिवानिकसौ
कान्हुरतह्वैगयौ॥सांवरोसलौंनौतनुसुंदरवदनसो
भासदनाविलोकतमदनमदुनैगयौ॥चलनिकीलट
कनिपीरेपटकीचटकनिभौंहनिकीमटकनिसैंचट
कुसौकैगयौ॥चपलचखनिचहचहीचितवनिचाहिअ
लीरीविहारीलालुचोरिचितुलेगयौ॥७८॥दोहा॥
छुटैनपईयतुवासिछिनहुनेहनगरयहचाल॥मार्योन
फिरि फिरिमारियतुषूनीफिरैषुस्याल॥टीका॥यहल
गनिकौवनेनैहैंजाकेंलगतिहैताकोंअधिकदुषुहैजाकी
लगतिहैताकेकहूमनहूंमैनाहीसुनाइकाअवस्थाना
इकुसषीसौंकहतुहै॥कवित्त॥छिनुवसैंछुटियेनवि
नुवसैंचटपटीनेहनगरीमैयहअटपटीरीतिहै॥लीज
तुछिडाइमनुरतनजतनुनाहिअतनुमहीतहौचधि ५

कछुजीतिहै॥ मोरेहियेकोंमारैयतु मुसो [illegible] मयोव
फिरैजीतहैकोंहारिकैलहारेहैकोंजीतिहै॥ सरव
जैतऊपरवसपरियतु जहांकाहूलोकपरलोककोव
तिहै॥ २४॥ दोहा॥ कैसोंवसियैक्योंलिवाहियेजीतिवे
पुरनाहि॥ लगालगीलोइननकैनाहकमनवधिजाहि
टीका॥ यहलगनिहैनेनलिकेलगेमनवधिजातुहैयह
अपभुतनकहतीतिहै सुनाइकाअपवालाइकुसखीसोंकहै॥
त्रिनाॽपावककप्रचंडताकैभागैहंलछूटियतु वरीयतुज्यों
ज्योंउपचारकीजियतुहै॥ पुवलोककोजोकाजो कनु मगनव
लनपूईयेलितुवितुहीजेनउहितमीजीयतुहै॥ जैसे प्रे
मपुरकेसैवसियैलिवाहियेक्योंदहैंअनरीतितनाछिनु
कीजियतुहै॥ लोगनिकेरतुधाइनेनमेनमतवारेनाहक
बिचारोमनुवांधिलीजियतु है॥ ८ [illegible] दोहा॥ नेकोउनि
नतुहीकहोहरादिछुदीतुमलालाउरतैवासुहूटोन
हींवसहुहैंहैं माला॥ टीका॥ यहपूर्वानुरागुनाइकानि
पीतिसवीलाइकसोंकहतिहैकितुम्हारीमयासोंजैसोहि
तुमलगतिहैतोतुमसोंहोकहतिहैं॥ [illegible] ॥ दोहा॥ मे
नासोंकेवोकहौं नहिजिनिहैपत्याइ॥ लगालगीकोलि
नतुउरमैलाईलाइ॥ टीका॥ यहलगनिहैनाइका

पल्लालाइ कुचपैलैअंनसैंकै है सखीसौंकहिवौ संभवतुना
हीं॥कवित्त॥तोसौंमैंकहीहीकेउवेरसमझाइमनैनै
नलुकेमनलोगैभारीघताघाईवौ॥तवतोनसिषमांनीर
निहींकौमतिठांनीअवकहाहोतुपरवसपढिताइवौ॥लगाल
गीइनिकौलीउरकौंलगाइदीनीलगनिअगिनितौनेकहं
भगिजाइवौ॥कौजनुजनतुसौरोत्यौंत्यौंहोतुदुखुनीरोनिसि
दिनुचतनुसनतावेतनुताइवौ॥१५॥दोहा॥सारीडारी
नीलकीओरअचूकचुकैन॥मोमनुमधुकरवरगहतअहै
अहेरीनेना॥टीका॥यहनाइकाकेनेत्रदेषिनाइककौम
नुहाथरहतुनाहीसषीसौंकहैहैंकौरवल्लकौ॥कवित्त॥
चाइचटेवनकेवनमेंविहारकौंकाहूकेनरोकेरहैविक
मचकथके॥भृकुटीकुटिलचालकंजनुअसितवासतुर
कटाक्षवानगैंहैंआयुधसुहथके॥सारीनीरीओरहैकै
आवतुअचांनकहींटोरतअचूकयोंहैटोरहतनथके॥
मोमनुकुरंगकोपकरिलेतहैपाहचीराधेतरैनैनैपत्र
हरीमननमथकौ॥१४॥दोहा॥जमकिचढतिउतरति
अटोलेकनपाकतिदेह॥नईरहितिनटकौवटाअटकौनाग
रंनेह॥टीका॥नाइकाप्रोढानाइककौसोभादेषिअस
...केमिवैकौंउतरतिचढतिहैसुयाकीविवस्थान

कीसखीसोंकहतिहै॥कवित्त॥कोन्हरकोवदनवि
लोकिकैविकानीबालताहिनातेदेखिवेकेजतनकर
तिहै॥सुरभीचराइवूजआइवेकीवेरजांनिरसवसहेति
सबकाजविसरतिहै॥सांकगुरजनकीनिसांककैकैन
ठठोरकैछिनइतछिनउतयाविधिटरतिहै॥नटवेव
राज्योंनटनागरकैनेहपागीऊचेअटाऊमकिचढ
तिउतरतिहै॥१४३॥दोहा॥ऋनपूर्वानुरागकोजे
नवहोतदिखादिखीभईअभिलाषकथ्यांकौ॥रंगतितेंछोडि
हिअवहूबेढीकोडांक॥टीका॥यहपूर्वानुरागजे
जितनेनिसंजोगमैसुखदाईतेवियोगमैदुखदायेंसाक
तिहैसुनाइकाअथवानाइकसखीसोंकहैहैविरहकीव
सअवस्थानुमेसुमिरनकहीयें॥कवित्त॥रंगरगी
लोमलीविधिसोंवहुभांतिनिकेसुषदेतेहेजेहो॥तेइ
वेकुंजभयेपूतिकूलविलोकिहियेंदुषसूलसेही॥वे
हकेआदिरसौलेचितैंनिहूतोइकआंकअमीसमते
हो॥वीसविसेविषसाइकदैउरसालतिवांकीविलो
कनिवेहो॥१४४॥दोहा॥नेकोपुहेनजुरीकरीहू
रथिनजुहीतुमलाल॥उरतेवासुदूरैनहींवासुकुंज
हूमाल॥टीका॥यहपूर्वानुरागनाइकाकीप्रीतिस

षीनाइकसैंकहतिहै कितुम्हारी मयासैंउ सोहितमान
तिहै तौतुमसैंकहाकहैं।।कवित्त।।जहाँ निवाहिच्य
लीनिकेदेषतरीझि हियेंहितुमानिकेंभारी।।अपनेहि
येतेंजुउतारिदई तुमफूलकीमालरसालविहारी।।ता
हिलेतेंवहनारिजवारिकेंप्रानहूतेंलगीअतिप्या
री।।वासुगईकुंभिलाइगईपेकरीनेतउउरतेंहि
नुन्यारी।।२५।।दोहा।।छिनछिनमेंघटकातिसुहिसम
भोरमेंजात।।कौहूंजुचलीविनुहांचितेंओठनिहांमेंबात।।
टीका।।यहनाइकापरकियाहैकाहूभोरमेंनाइकनेदेषीहै
सुतौनेजुपरकियाकीमिस्टुनिदेषी पुपेवातनसुनीसुस
षीसैंकहतुहै।।कवित्त।।आजुमिलीव्रजवालअचान
कसोमतिवाकेसनेहगहीहै।।जातिहुतीअतिभोरमेंसुंदरि
मोतनहेरिहियेंउमहीहै।।लाजतेंपनविलोकिसकौउनकी
नीतउरसरीतिसहीहै।।ओठनुहींमेंगईजुकछूकहिमेंन
सुनीपहिताओयहीहै।।५।।दोहा।।वनतनकौंनिकस
तुलसतुहंसतुहंसतुरतआइ।।दृगषंजनगहिलेगयोचित
वनिचंपुलगाइ।।टीका।।यहनाइकाप्रौढाहैसुद्धविसैंाषी
कसंदेषेहैं तेसेंहीअपनेजेतनुकौलगनिसषीसैंकहतिहै।।
कवित्त।।आजुकठौवनकौंइतकेंवनितानिकसोजसु

हाकौ कन्हाई ॥ मोर किरीट लसै सु रसीले कुटी सु
री है बिहाई ॥ मो ढिग आइ भरयौ रस भाइ हेरै मुसि
स्यौ सुखदाई ॥ चौंप की चाहनि चैपु लगाइ कै लैग
न मोल लिमाई ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ जब जब वे सुधि
तब सब ही सुधि जाइ ॥ आंखि हु आंखि लगी रहैं आंहू
गति नाहि ॥ टीका ॥ यह पूर्वानुराग नाइका ग्र
रहु सखी सौं अपनी बात कहै है ॥ कबित्त ॥ यह प्रीति
रीति ज्यौं नौ पौ न कछु कहूं जानी न जाति कहा गति है ॥
चाह की चौंप चढ़ी यै रहै उर प्रेम विथा उरपागति है
हत आंखिनि सौं वई आंखै लगी रहैं आंखिन के संहू
है गति है ॥ जब ही जब वै सुधि आवति है तब ही सब ही सुधि
भगाति है ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ जहां जहां ठाढ़ौ लख्यौ स्या
मु सुभगा सिरमौर ॥ बिनु हूं उ नाहिं हु आ हि रहतु दृ
गति जौं वह ठौर ॥ टीका ॥ यह पूर्वानुरागु केल
देखै है तेइ ठौर श्रीकृष्ण की भावना करि कै नेत्रनु कौ अ
गहेतु करति है सु नाइका सखी सौं कहै है ॥ कबित्त ॥
कोलि सुधा सागर मैं केलि रंग रसीलौ परिपूरन विवि
धि करतौ जु यौं मनोरथनु ॥ नैन मन वाकौ छूटतौ उमगि
अनुरागु भागु लागतु है मघवा सची कौ जनु हूं तैम

बगीरी॥ होलषिवेकोंउछाहभरीजिकरीवहडीठिपस्यो
नठगीरी॥नैननुकोंअरुकाननुकोंमनकोंतवतेंतल
वेलोलगीरी॥१६०॥परस्परावलोकन॥दोहा॥
फूलेफदकतलेफरीपलकटाक्षकरवार॥करतवचा
वतवियनयनपाइकघाइहजार॥टीका॥यहदोउन
केनेत्रआपुसमेकटाक्ष[illegible]नुकीचोटकरतेहैंऔर
नुकोद्रष्टिवचावतेहैं सुसषीसषीसोंकहतिहै॥कवि
त्त॥अंजनुअंगकेढेकढूनीसिषयेनवजोवननाइ
केहैं॥फंदतफूलेनिसांकगहैंकरवालकटाक्षसहाइ
केहैं॥ओटकौंढालकरीपलकेंललकेंश्रुतिजोंमसेला
इकेहैं॥वियलोचनचोटवचावतहैंतियनैनकिमैन
केपाइकेहैं॥१६१॥दोहा॥कहतनटतरीझतषिझतमि
लतषिलतलजियात॥भरेभौंनमेंकरतहैंनैननुहींसव
वात॥टीका॥यहदोउभरेघरमेंनेननुहींमेंसववातक
हतेहैंसुसषीसषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥भस्योहैभव
नतऊपावतुनभेदुकोऊऊमहतदोऊयोंसनेहसनोघा
तेहैं॥हिलतमिलतपुनिषिलतजिलतरसहुलसतलसत
लसकतमुसिकातेहैं॥हांकरतनाकरतरीझतषिजतहितभौंज

तरुनजातनजिकातहैं दिकातहैं ॥ प्रेमपगेपूरनप्रवी
प्रीतमप्यारीपीउनैनन्हुहीनिपुनकरतसबबातहैं ॥
दोहा ॥ डीठिबरतबांधीअटनचढिधावतनडरात ॥
उतचितइतहूंतिनकेनटलौंआवतजात ॥ टीका ॥ यहदु
वतिनुकेचितनटलोगहैंसुपरसपरअपनेंअपनेअटापरतें
तिनकोदेखतहैंउनकोमनुइतआवतहैइतकोमनुउत
जातहैसुयेंसषीसषीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ प्रीतिपु
जबहैआपुआपनेअटानिचढे तिरछेमैंआजुजेसंये
नीकिनरतहैंऔरकोउजांनतुनतिनकोओकगतिछं
वलमरैंऐसीरटरनिरटरतहैं ॥ बांधेडीठिबरतनडरत
नगांवैंनटकीनटकौसीकलादेषैप्रगटकरतहैं ॥ दुहुं
केचितचलिआवतदुहूंनकीओरधावतहहलसिअतिधी
जधरतहैं ॥ १६३ ॥ दोहा ॥ जुरेदुहुंनिकेदृगझमकिरुकेन
नझीनैचीर ॥ हलुकीफौजहरौलज्यौंपरतिगोलपर
भीर ॥ टीका ॥ यहदुहूंनिकेनैनघूंघटकीओटपैमिलैं
मिलिगयेहैंसुसषीसषीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ बैठीग्वा
लीजनमैंनन्दकोगयौतहांचाहिकेप्यारेबिहारीलाल
लनीकीडीठिचाइवेकोंमुषघूंघटओटकरौनिहारि

नैनसौंनैनउमंगिमिलेजुरहेपटओटकितेपचिहारी॥१
रोकिसकेनहरोलकीफौजजैसेंगोलपैआनिपरेनरभारी॥१०
दोहा॥दूत्यौंघरसमीपकोलेतमानिमनमोद॥होतुहरं
निकेदृगनिहींवतरसहसीविनोद॥टीका॥यहदोउने
ननुहीमेंवातेकरतहैमिलवेकोसुषुमानतेहैंसुसषीसषीसों
कहतिहै॥कवित्त॥प्रेमप्रभाउदुहूनुकेकेसैंहूंमोपेवनैन
वषानतेहैं॥चारसकलाचितचातुरीकोरसभाइभरीउरआं
नतेहैं॥जदृहूपिदूरिघरेइतउवेसमीपहीकोसुषुमांन
तेहैं॥नैननहींवतराइहसेंअतिरीजरलीमतिठांनतेहैं॥१६
दोहा॥उनहंकोहसिकेइतेइनसौंपीमुसकाइ॥नैननमिलैं
मनमिलिगयेदोउमिलवतगाइ॥टीका॥यहदोउगाइ
मिलवतमनमिलिगयेहैसुसषीसषीसौंकहतिहैलाइका
रकिया॥कवित्त॥उनिहसिहंकीयेकहांकोहैनईसी
गाइमोपेनघिरतिकाल्हिकेतेदुषरयेहैं॥इनुमुसिकाइक
हीमेकुरीनचाइयेतोगाइहेहमारी[illegible]ओरसौंवनयेहैं॥
हैकेविक्रममिलेवैननुसौंवैनअरुनैननुसौंनैनरीफि
सवसभयेहैं॥भूलीसुधिमानकीनगैंनकीसम्हाररहीग
मिलवतदोउमनमिलिगयेहैं॥१८॥दोहा॥जदपिचवा
वुचीकलीचलतिचहूंदिसि

कोहसोंहसीलेलेन ॥ टीका ॥ प्रहलादइकापरकिय
होऊतुकेनेवदेषतहैंतवहंसतहैसुसषीसषीसे
कोचित्ता ॥ नेहकोघातलगीजवैंनवैंतेरसवीनि
तोको ॥ देषतहैंअतिमोदभरैंउरकौंनकरेंकुलका
होंतो ॥ जहदिपि [illegible] सेनचवाइसनि
समैंवेलेचाहधौंघांको ॥ नहिपिछौडेंलनैंनदूकेंको
लोहसोंहविलोकनिवांको ॥ १७ ॥ दोहा ॥ फूटेजा
तसंगहेमनमूहनिकसेवेन ॥ याहीतेमानोकियेवा
तुवेविधिलेन ॥ टीका ॥ यहवोहेतुम्हापुसमैंनेत्रनु
सेवातकहतहैंसुसषीसषीसोंकहतिहैकोंवकीउनिके
हा ॥ कवित्त ॥ इतव्रजराजकोकहुंरसरासिउतव
तोवृषभांनकीकुवांरिवरवांनिकैं ॥ १८ ॥ हितवाटेअ
पआपनेकुहुलिपरकरतकटाछमनमथकीकला
कैं ॥ वहवनैंतिनिकसेतेफूटेहोतमेरेजांनवैनहुकोस
हुकैसेनयहजांनिकें ॥ परमप्रवीनदोउयाहीतेपरस
रलोचनहींमेंबनरातअतिसुमानिकें ॥ १९ ॥ टीका
॥ चितवनजितवनहितहियेकियेतिरीछेनैन ॥ भेजे
तहेरकपतबोंहुंजोपिनिवेरेन ॥ टीका ॥ यहदेअ

रस्परआसक्तहैंसुजपुकरतेदेषतेहैंसषीसषीसौंकहै
नाइकापरकिया॥कवित्त॥जमुनाकेतीरवनरका
रीनुकीभारीभीरतदपिनिरषैविनुहरषैरहैवैंननैं॥
कैहैंकेविक्रम चितचौंपसौंवगतअनुरागसौंपग
तउमगतमनमैंनेहैं॥यौंहीदिनुवितवताहियहेतजितः
तचितचाइरससौंतिरीछैकियेनैननैं॥भौंजेपटकपत
नकाहूतैंचपतदोऊअधिकतपतक्यौंहूंजपतिवैरनैंहैं॥११५॥
दोहा॥घामुघरीकनिवारीयेकलितललितअलिपुं
ज॥जमुनातीरतमालतरुमिलतमालतीकुंज॥११६
का॥यहनाइकापरकियावाकविदग्धस्वयंदूतुना
इककेवचननाइकासौं॥कवित्त॥अचारतेमा
लकेलिंदीकेतीरजोसीरसुगंधसमीररहेझूमन॥मा
लतीमयनिकुंजनिमैमिलिगुंजतमत्तमधुव्रतकेगा
न॥सघनिकेभरजूमिलतारहीवेलिलगीलपटाइ
तमालनि॥कीजैविरामुघरीकइतैयहआतपनेक
निवारीयेलालन॥११७॥दोहा॥द्वैद्विगुनीपहुंचैंची
गिलतअतिदीनतादिषाइ॥वलिवांवनकौवेतुसुनिकौ
वलितुम्हैंपत्याइ॥टीका॥यहनाइकेकेचितकोवृत्तिलल
चौंहीदेषिनाइकाप्रीतिवटाइवेकौंकहतिहैअरुसापराध

केहसौंहसौंलैनैंन॥ टीका॥ पहलाइकापरकियौहै सुहसु
हेउनुकैनेनदेषतहैं तवहंसतहैं सुसषीसषीसौंकहतिहै
कवित्त॥ नेहकौघातलगौजवैतैंतवैतैरसरीतिरहैनहीं
नैंकौ॥ देषतहींअतिमोदभरेंउरकौंनकरैकुलकांनिक
हौंकौ॥ जद्दपिछोडेंवोनैनदुहूंकेसेंनचवाइसनौउप
समैंहैचलेचाहथौंगांकौ॥ तद्दपिछांडेनैनैनदुहुंकेरसी
लौहसौंहैबिलौकनिवांकौ॥ १७॥ दोहा॥ झूठेजानि
नसंगहेमनमुहनिकसेवैन॥ याहीतेमानोंकियेवात
नुकेविधिनैन॥ टीका॥ यहवौहैतुआपुसमैंनेननु
मैंवातकरतहैंसुसषीसषीसौंकहतिहैकोवकीउक्ति
है॥ कवित्त॥ इतवृजराजकौकढ़ाहरसरासिउतव
नीवृषभांनकौहुवारिवरवांनिकैं॥ नैठेहितवांटेसु
पआपनेस्वस्तनिपरकरतकटाछमनमथकीकलानि
कैं॥ वदननितेंनिकसेतेंझूठेहीतमेरेजांनवैंननुकोसंग
हु कैसौनयहजांनिकैं॥ परमप्रवीनदोऊयाहीतेंपरस
परलोचननहींमैंवतरातअतिसुषमानिकैं॥ १८॥ दोहा॥
दोहा॥ चितवतजितवतहतहियैंकियैतिरीछैनैन॥ भीजे
तनदोऊकपतक्यौंहूंजपनिवैरैंन॥ टीका॥ यहदोऊ

रस्परआसक्तहैंसुजपुकरतेदेवतहैंसवीसवीसौंकैहै
नाइकापरकिया॥कवित्त॥जमुनाकेतीरनरना
रीनुकीभारीभीरतदपिनिरषेविनुहरवैरहैवैनहैं॥
कहैंकविकमचितचोपसौंचगतअनुरागसौंपग
उमगतमनमैंनहैं॥योंहीदिनुवितवतहियहेतजितव
तचितचाइरससौंतिरीछेकियेनेनहैं॥नौजेपटकपत
नकाहूतेचपतदोऊअधिकतपतक्योंहूजपतिवैरनहैं॥१६॥
दोहा॥यामुघरीकनिवारीयेकलितललितअलिपुं
जा॥जमुनातीरतमालतरुमिलतमालतीकुंजा॥८॥
का॥यहनाइकापरकिया॥वाकविदग्धस्वयंदूतुना
इककोवचननाइकासौं॥कवित्त॥अचारुतेमा
लकलिंदीकेतीरजोसीरसुगंधसमीररहेझूमनाम
लतीमलौनिकुंजनिमेमिलिगुंजतमतमधुव्रतके
ना॥फूलनिकेभरझूमिलतारहीवेलिलगीलपटाइ
तमालनि॥कीजेविरामुघरीकइतेयहआतपनेक
निवारीयेलालन॥१७॥दोहा॥दिगुनीपहुंचौ
गिलतअतिदीनताद्रिषाइ॥वलिवावनकोवेतुसुनिको
वलितुम्हैपत्याइ॥टीका॥यहनाइकेचितकोवृतिलल
चोहीदेषिनाइकाप्रीतिवढाइवेकौंकहतिहैअसापराध

२ के स्यांमकंचितसुचिक्कुगंधसुकुमार॥ चलतुनमनुपपुछ
लखिवितुरेसुथरेवार॥ टीका॥ यहनाइकाकेसनुवे
भोपेनाइकुकृष्णसेकहेसुनाइकासेकहतुहैअपवासखी
कहतुहै॥ कवित्त॥ निरखतहैतनमपुंजप्रभाजिनकीछ
छिपैछपैहैरिसिलौमुखहारे॥ स्यांमसुगंधसुभाइसचि
कौनसोहतसुंदरलांवेलछारे॥ मैनमनौअपनैकरसै
मखतूलकेचोरवनाइसवारे॥ देखतहींमनुथाविरहो
कैनुलागरिकेससुदेसतिहारे॥ ७॥ दोहा॥ वेईक
चौरलिवहैक्योरेकौनविचार॥ जिनहींउरज्योमे
तिलहैसुरजेवार॥ टीका॥ यहनाइककौसखि
इकोकेहवृतुपरैसुवारचौरतदेखिनाइकुसखीसों
कहतुहै॥ कवित्त॥ पांनिलसेसरसीरुहसोतिनऊपर
छूगमौरभयेहैं॥ केलिफरीसीसवरीसुथरीअगुरीनव
चंदप्रभालिकुयैहैं॥ वेईहैलपवैचलिवेकहियामैवि
चारकहाधौंठयेहैं॥ मैरौहियेउरज्योजिनसेतिन
रतिलिहैंसुरजेकचयेहैं॥ ७॥ दोहा॥ छूटेकुटाव
तैतेसटकारेसुकुमार॥ मनुवांधतनेवेनौवखेनील
केवार॥ टीका॥ यहनाइकाकेवारलुपेनाइकको

रोफ्यौहै सुनाइकासैंकहतुहै अथ धृष्टासखीसैंकैहैकवि
रह कौउक्तिहोइ॥कवित्त॥सोहतहैं सुकुमार महाउप
माकोंसिवारनलागतनेरे॥मेचकलांवेसुगंधलसैहू
नैंनफिरैंनहीं फेरे॥छूटेछुटावतहैंजगतेइन
॥तिकटौंनेसेहेरे॥औरजेनैनीकहाकीहियें
वैंनीवंधेकचतेरे॥७७॥दोहा॥कुटिल
टिपरतमुखवटिगोइतोउदोतु॥वंकवृग
रांमरूपेयाहोतु॥टीका॥यहमुखपरहू
अधिकभईहेसुसखीसखीसैंकहतिहैसखी
कैहैनाइकुनाइकासैंकैहै कविहू कौउक्ति
वेत॥जगमगिरहीमुवचंदकोअमंदहु
तूंहांतीहोतिआठेधांमधामतें॥तापरसुंद
रलसिंगारुचारुन्याइवसकौनैघनस्यां
मतें॥कुसप्रांनप्यारकीसैंतापेयहछूटत
अलकसोभालहीअभिरामतें॥येतेमान
उमगिउदोतुवंकदियेंतेवकारीज्योंरूपेया
तें॥७९॥ललाटश्रृंगार॥दोहा॥वोरिप
नचैनकुटीधनुषवधिकुसमरतजिकांनि॥हनतुत
रुनिम्रगतिलकसरसुरकैभालभरितानि॥टीका॥

यहनाइकाकुटिलललाटअंगाहैसुसखीनाइकासोंक
हैनाइकनाइकासोंकहै॥कवित्त॥कैचितमोहिवेम
नलसेतिहिकोजिहिकेसरि बोरिवनाई॥ताकोलैती
कस्योतिलकैसुरकैगहितापरभालभगाइ॥वेलत
जोबनकेमनमेंइहिसाजसिंगारमनोजुवनाई॥होरि
हैलेजुप्रबीनकुरंगनिहोंनदयाउरकैकठिनाई॥१८०॥
दोहा॥जोकोलसतुललाटपरटीकोजटितजराइ॥छवि
हिबढावतरविमनोससिमंडलमैंआइ॥टीका॥यह
ललाटपरटीकोहै ताकोउपमासखीनाइकसोंकहतिहैना
इकुसखीसोंकहैसखीनाइकासोंकहैकविकोउक्तिहोइ॥क
वित्त॥जोबनजोतिजगमगहैतिसिंगारप्रभासरस
नितुहै॥रीझिरहैंलखिललाकेलोचनमोहहियेंभरिचाव
तुहै॥सोहतुटीकोजराइजस्योतियभालमहाछविछावतु
है॥मानहुंचंदकेमंडलमेंदिननाइकुसोभावढावतुहै॥
झुलमुलीकोवर्ननं॥दोहा॥झीनेपटमेंझुलमुलीझल
कतिओपअपार॥सुरतरुकीमनोसिंधुमेंलसतिसपल्ल
वडार॥टीका॥यहझुलमुलिनिकोवर्ननुहैसुउपमास
खीनाइकसोंकहैनाइकनाइकासोंकहैसखीसोंकहैकवि
हूकोउक्तिहोइ॥कवित्त॥जाकेकरकामरहुवधवेदिव
करसेकैंनइंदीवरतिकीछविसरसातिहै॥अधरसुध

परसेवदनमैंकिलेवातिललितकपोलनिकोंदुतिअध न
कातिहै॥अंतरललितजोंनेंवसमेंमुलुमुलीकेहेंकीवि
कसजलवतिमेंभांतिहै॥मेरेजांनसांगरमेंडारकल
पद्रुमकीपल्लवनिसहितपगटदरसातिहै॥१८२॥वें
दीवर्नन॥दोहा॥तियमुषलषिहैरजरीवेंदीवढठ
तविनोद॥सुतसनेहमांनोलियेवुधपूरनविधुगोद॥
टीका॥यहनाइकाकेभालहीराकीवेंदीहैसुसषीसांना
उपमानाइकासौंकहतिहैकविहूकीउकतिहोइनाइकासौंना
इकउकेहे॥कवित्त॥कनकवरनतनजगरमगरहोत
औपकीउजासमैंनआसूपासुकीनौहै॥सकलसैंकलि
रूपविरचीविरंचिवालधौंनकटिकठिनउरोजजग
मीनौहैं॥ललितललाटपरहीराकोलसतिवेंदीकेग
वेकसदेषैमनुनेहठौनौहै॥मेरेजानमोदुभरिआधि
कसनेहकरिपूरनमयंकभरिअंकवुधलीनौहै॥१८३॥ को
दोहा॥कहतसवैवेंदीदियेंआंकदसगुनौहोतु॥तियलि
लारवेंदीदियेंअगिननवढतउदोतु॥टीका॥यहवेंदी
दियेतेमुषकीसोभाअधिकवढतिहैसुनारकुसषीसौं
कहेहैकविहूकीउकतिहोइ॥कवित्त॥जोवनसौंमिलिज
गमगतिजेपार[illegible]औपमहामुनिहूकोमनुरवैरसभो

तु है ॥ कै हैं कवि कल्पवृक्ष विपुंजनि सैां छाजि रह्यो सरस
सिंगार रस तरु सुधा सों तु है ॥ सबु कोउ ऐसें हैं कहत तुम
हि मंडल में बेंदी को दियें ते आंकुर सगुनौ होत तु है ॥ वे हैं नव
नागरि के ललित ललाट पर बेंदी लाल लागै बढ़ै अ
गीलत उदोत तु है ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ भाल लाल बेंदी ललन
आखत रहे विराजि ॥ इंदु कला कुंज मैं बसी मनौ राहु भय
भाजि ॥ टीका ॥ यह सिषनख मैं नाइका के ललाट पर बें
दी अक्षतन की सोभा है सु सखी नाइक सौं कहति है कवि हूं की
उक्ति सोइ ॥ कवित्त ॥ उदय समै के राका चंदु सौ बदनु तौ
सौ नई तरुनई कौ उमंग और रंग मै ॥ कंचन किनारी वारी
को केर जो सारी तामें दुरी दरसति के सौ मंग उतमंग मैं ॥
भाल पर रोचन को बिंदु है विदेत ता पै अच्छित लसें जो गं
गा सरसुति संग मै ॥ जा सुमानित न को सुधाकर की कला
मानौं बसी है निसंक अब नौ सुकला के अंग मै ॥ १८५ ॥ दो
भाल लाल बेंदी छये छुटे बार छबि देत ॥ गह्यो राहु अति
रस करि मनु ससि सूर समेत ॥ टीका ॥ [illegible]
यह नाइका के ललाट पर लाल बेंदी है ता पै बार छूटे हैं
सु सोभा सखी नाइक सौं कहति है उपमा सखी सखी सों क
री कवि हू की उक्ति सोइ ॥ कवित्त ॥ नव नागरि के मु

षचंदकीचारुप्रभासरसीसरतेसरसी॥पुनिवेंदीवि
राजतिभालपेलालविलोकतकाहिकेरेनवसी॥अरुत
परस्यामसुदेससिरोरुहदूटिकैयेअतिओपससी॥म भांव
नौंअनिगेहअहिआहटरोहनेयेकतहींदोउ रसी १२४
रोह॥पचरंगरंगवेंदीलसतिउठतिअउरीमुषजो म
ति॥पहरैचीरचिनौठियाचटकचौगुनीहोति॥टीका॥
यहनाइकालाइकैनैजैसीछविसौदेषीहैतैसीयभांति
सषीसौंकहतुहै॥कवित्त॥ललितलिलारपररेसेप
चरंगवेंदीधरीउगिउठतिअमंदमुषजोतिहै॥षंज
नसेअंजनसहितअनियारेनैनअधरअरुनमारगेर
कारीपोतिहै॥जौहैंलषिवेकोछविसौंहहवैउठौरैकच
लचकतकटिमुनिमनरसभीतिहै॥जहैंसरूपतनप
हिरैंचिनौठीचीरचौगुनीनिकाईकीचटकपासेरेति
हो॥७७॥दोहा॥सोरठा॥मंगलविंदुसुरंग॥मुषससिके
सरिआउगुल॥इकनारीलहिसंग॥रसनयकिसलोच
नेजगत॥टीका॥यहसिषनषमैंललारकोअंग
रेहसुसषीसषीसौंकहतिहैकविहूकीउक्तिहै॥क
वित्त॥मंगलविंदुसुरंगविराजतुभैभिनिनालमहू
विहायौ॥आननचंदुकलापरिपूरनवेसरआइकै

गुहरायो ॥ कह्यो कै इक नारी मैं आइ मनौं परिपूरन भोग

वनायो ॥ नैन भरे रस की वरषा करि चैन समूह हियें अ

गायो ॥ १७ ॥ इति दुतीसाधनं ॥ दोहा ॥ लोनै मुख डीठि

न लागै यों कहि दीनो ईठि ॥ दूनी ह्वै लागन लगी दियें दि

ठौना डीठि ॥ टीका ॥ यह डिठौना को वर्नन है सुनाइ

का सों कहै सषी सों कहै सषी नाइका सौं कहै ॥ कवि

त्ता ॥ तेरे लोने मुखै रति की हू ति लाज ति राजति ओप सिंगार

किये तें ॥ और तू जो वर लोन परे है विमोहन ताइ हीं मे

ना लियें तें ॥ सुंदर आनन डीठि न लागै कह्यो यों ललियो

हि तु मोहि हियें तें ॥ तो मुष पै अब लागन लागी री दूनी

है डीठि डिठौना दियें तें ॥ १८ ॥ दोहा ॥ पिय तिय सों हंसि

कै कह्यौ लषौ डिठौना दीन ॥ चंद्रमुषी मुष चंद तें

भलौ चंद सम कीन ॥ टीका ॥ यह डिठौना वर्नन ना

इका इक सों कहै ॥ अथवा स्युंगार के नाम सषी सों कहै ॥

कवित्त ॥ प्यारी को चारु सिंगार निहारि कियें पति

की ति मोहि भस्यो है ॥ चाहि चषोडक लीमुसिकाइ स

विधि लेपु त वेलि धस्यो है ॥ जा मुष की जल के सुप

मा सकलंक मयंक विरंचि निरस्यो है ॥ सो मुष तें वढि

है नौ है अनुभलैयह चंद समान कस्यौ है ॥१८॥ मु
षवर्नन ॥ दोहा ॥ हाहा वदन उघारि दृग सुफल
करैं सब कोइ ॥ रोजु सरोजनि कैं परे हंसी ससी की
होइ ॥ टीका ॥ यह मुषवर्नन है सु सषी नाइका सैं
कहै है नवोढा [illegible] के प्रसंग मैं वर्नै मानु कुंडा वै सषी नैं
हूं कहै है तौ वर्ने ॥ कवित्त ॥ लोचन ललै [illegible] कौ फलु सुफ
लह मारौ करि प्यारी प्रान प्रीति कौं सनेह रसलौ न क
रि ॥ नेहौं पाई परमनि काई श्रवधि श्रवये नौ वेषमा
नेकौ कुवारि जरबीन करि ॥ टारि पटु घूंघट कौ हाहा
उघारि मुषु निजु ह्व विपोलि ग्रमैं पीके नैन मीन करि ॥ वं
जह विहीन करि ससि हि मलीन करि सौतिनु कौं दी
न करि प्यारे कौं अधीन करि ॥१९॥ दोहा ॥ सूर उदि
त हू मुदित मन मुष सुषमा की ओर ॥ चितै रहत चहूं
रतैं निहिचल लचषनु चकोर ॥ टीका ॥ यह मुषव
र्नन सषी नाइका सौं कहै है कवि की हू उक्ति होइ ॥ [illegible]
[illegible] मुषकौ गनह वृष नोनकौ [illegible] रि तारे सुषकौ प्र
काशु जगमगतु अमंद है ॥ [illegible]
विलटै कै भइ भांवरी भरतु [illegible]

सहा निसांकों रहै विपिन विनां न कछु देखै उ मग तु
ग्यौ तिग्यानर को वुंदु है ॥ सकल विलोस छाडि येव
श्रासक्ता गे रहै भौर जांने कमल चकोर जांने चंद्र
है ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ ह प्यो छु वो लो मुसुल सै जोने च
चल चौर ॥ मनौ कलानिधि जल मेल्है कालिंदी के
नीर ॥ [illegible] ॥ यह नाइका के मुख कौ वर्नेनु सवी
नाइक सौं कहति है नाइका हु सौं कहे तो संभवे ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भांवती विहरी कों गई ही ल्लैन गिरधर ता
हि देखें मेरौ मनु पर्यौ छु वि भौर मे ॥ कै स्म प्रान प्यार
तेरु नाई कौ लुनाई ही तिजगर मगर वा के सौं नैस
रीर मे ॥ वजन भवर विव कीर कौ प्रमानि दरव
रे खुदुरा इ वैठी जीने नीरे चौर मे ॥ मेरे जान पूर
न कला निसौ जिल मिलातु सरद सुधानिधि के
लिंदी के नीरमैं ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ कि
यहाइल्ला चित चाइ लगि वजि पाइल तुव पाइ ॥ पुनि
सुनि सुनि मुख मधुर धुनि क्यों न लाल लुल चाइ
[illegible] ॥ यह नाइका कौ ग्रासति जानि सवी नाइ
का सौं [illegible] पीति वढाइवे कौं कहति है वा नीव र्नेनु
है ॥ [illegible] ॥ गजगति तेरी है री लहृ तव ही ते भ

श्रीगनेसाइनम अथनेहतरंग श्रीमहाराजबु
धसिंघजीकृतलिख्यते दोहा अरुनकोटिछ
वितनविसदलसतमुकटमनिरेष । सिंदु
तकरिसुखदरसतैंदरसैसिधिअसेष १ छ
प्प मदनमोदकरवदनसदनवेतालजालदू
त नक्रनीतिनंजंनअनेकजिनिअसुरवंसहू
त चंडहांसकरचंदचंडमुंडादिसहिरमय अ
नलजालजुलनाललाललोचनविसालजय
जयजयअचिंसगुनगनअगमआगमसुभन्हे
तेन्हेमय जयदुरितहारिनदुर्गीजनानिरमानि
नवरसरूपमय २ दोहा रूपसुधारससारसु
वरनहंसामिलिसंग नीरजनवरसरूपकरिनै
हतरंगतरंग ३ रसाविनालगुनलावहारर
अरसंध्यासीलाव नायावरानिवनाइहौंजो
रसनरसान ४ जामेंछाईनावरानिसो
वरनौंस्रृंगार इकसंजोगविप्रोगइकताके
होइप्रकार ५

श्री चुनरी सौ ठिक्रम मी सुगंध स...
दमक्केतन गोरे ॥ नंदलाल विछ चैत...
टि परी सी पंरी प्रतिलाज नि होरे ॥ प्र...
पियारेन बीच ही घाई क्ररी रस लु ट...
हीन रिक्कारे ॥ ११ ॥ ग्यात जौवना ॥ है...
भाव क्रउन सौ होन यौं क्रद पर हेरत जाई...
सीप हरा क्ष मिस ही यौं नि सु दिन हेरत जाई...
॥ १२ ॥ यह नाई म्रा ठ ग्या ग्यात जोवना स...
सषी सौ क्रहाति है ॥ क्रवितु ॥ प्यारे नंदलाल...
वहु वाल प्रलवे लीन व जोवन क्री जो...
दिन द्वै क्रै सैन राति है ॥ दंपति चरच चितछु...
चितवन लागी क्रां मन क्री क्रहानी क्रहु क्रानै...
न घर से है ॥ स्वक्रउ रोज निक्री क्री रग्र सक्र...
हीन हीने सुक्र लजोही सी चितौनि हटर...
ति है ॥ सव श्री वचा ...

पुपनेंग्रगक्केजानिकैजोवनन्नुपातपूव
न॥ तनमननैनलनितंवक्रोवडोहीजाप्र
क्रीन॥१८॥ नाहीक्रानवजोवनन्नुवित
मुग्धासवीक्रोवचनुसवीसो॥ जोवनन्नु
पमहापरवीनविचच्छिनताहीक्रीरीति
ठहीहै॥ राजुलयोनवलातनक्रोक्री
सन्नुक्रीसंपतिलुटिलहीहै॥ हुरिक्री
सिसुताक्रेसहारीकचान्तुरताचितच
महीहै॥ नैनउरोजनितंवनिक्रोग्र
मोगिनेक्नेबठवाईदहीहै॥१५दो
रतैठरतैवरपरहहीमरक्रमनुमंम॥
डोहाउवठिचतेचितुचतुराही
टीका॥ यहनाहीक्राक्रेजोवनन

पेसुनीपाइलकोजन्नकसुहाईरी॥तवहींते
उरलागीअतिचटपटीतुवमिलिवेकोंलल
कन्हाईरी॥वीनकेसुरनिहूंतेमधुरसरस
कालिकहूंतेरेउनिवांनीसुनिपाईरी॥कोर
गकेउरमदनमरूरउठेयाहीतेहोंकहनजस
नोआईरी॥१६॥दोहा॥छिनकुछवीलेलला
हनहिजोलोवतरात॥अवमहूवपियूष
ल्लगिभूषनजाइ॥टीका॥यहनाइकाकी
ग्कीमधुराईसषीनाइकसोंकहतिहे॥कोकि
जाकोसुनैधुनिवीनुकहागहिलाजियकोव
गतिहे॥जोसुनिकेंकविकसकहैमुनिको
तसाअनुरागतिहे॥जोलोंछवीलेललातुम
वहवालनवातनुपागतिहे॥तोलोंमहूवाप
षकोअवकोभूषनकेसेहूंलागतिहे॥१७॥पा
ग्जावीवर्नन॥दोहा॥जरीकोरगोरेवदर
वढोषरीछविरेष॥लसतिमनोविजुरीकियेसार
ससिपरवेष॥टीका॥यहनाइकाकेमुषपरकिना
रकीसोभासषीनाइकसोंकहतिहे॥कवित्त॥आ
जुमेनिहारीवृषभांनकीदुलारीद्युतिधारी

कलसिंगारतनसाजिकै ॥ जगमगजोतिनकुं
नकीदेखतहीदृगनिकोगयोदुखदंदसवभाजिकै
नेसुखसारीतापेकंचनकिनारीगोरश्रांननवे
कौ हूंऔरफवीछविछाइकै ॥ मरहकीपूरयोकेसुधा
धिकैआसपासुमानौरहीदामिनीकौमंडलवि
जिकै ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ नासामोरिन
इदृगनकरीकैकाकीसोंरह ॥ कोटरसीकसकतिहिये
डीकरीलीमोंह ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीमोरस
वेकीचेष्टादेखीसुनाइकुसखीसोंकहतुहै ॥ के
ना ॥ मोतनहेरिफेरीसिनिसेवतरानलगीव
तोरसकाकी ॥ येभरतेतरतिकीदुतिहोतिन
निकाईलवैसमताकी ॥ नोकचढाइउचाइ
उहचाइकरीदृगसोंरहकाकी ॥ वाहविकै
टीलीसीमोंहकरेजमेंसूलसीसालतिवा
नि ॥ अथ नेत्र वर्नन ॥ दोहा ॥ वारैवलितोदृ
रग्योलिखंजनमृगमीन ॥ आधीडीठिचितै
कियेलालनआधीन ॥ टीका ॥ यहनाइकाकी
नुकौअथपूतलीचितनिदेखिनाइकुज्
यौसुसखीनाइकासोंकहतिहै ॥ कवि

ऊपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ठारे मन
मथ मतवारे हैं॥ लाज भरे भरे भोरे चपल निहारे त
रे सों चेके से टारे प्यारे रूप के उज्यारे हैं॥ आधी चि
त्व निमे आधीन कियो तैरी हरि टौने से वसीक
र केलौने ये निहारे हैं॥ कमल कुरंग मीन षंज
न भवर वृषभान की कुवरि तेरे नैन निपेवारे
हैं॥१८॥ दोहा॥ चमचमात चंचल नयन विच घूंघ
टपट झीन॥ मानहुं सुरसरिता विमल जल उछलत जु
गमीन॥ टीका॥ यह नाइका के नेत्रनु की सोभा सखी
नाइका सौं कहै नाइका हू नाइका सौं कहै सखी सौं कहै॥ [illegible]
॥ रूप को रसाल आजु देखी ब्रजबाल येक केती सोभा स
नी वाके सौनें से सरीर मैं॥ टास्यो नटरतु वह भाउ मोहियै
क्यों हूं वैठी सुवटां पि गुरलोगनु की भीर मैं॥ जैहै कवि
[illegible] स्याम अति चपल विसाल ताके लोचन जुगल झलक
झीने चीर मैं॥ क्यौं न मन होइ छवि निरषि अधीन वि
मीन उछलत मानौ सुरसरि नीर मैं॥१९॥ दोहा॥ के
हसौ चुटकि दै बरे उठौ है मैन॥ लाज न तो ये तरफ[illegible]
न वूं हसी नैंन॥ टीका॥ यह नाइका के नेत्रनु
हते रो अलके [illegible]

सौं कहति है नाइका हू कै है सखी सखी हू सौं कहै ॥ कवित्त ॥
नैनन नवनागरि के तरल तुरंग अंग है कि कै तरंग रंग
धरक धरै धरैं ॥ मदन प्रवीन नित नेह फेरिवे सधावतु है
घट की ओट कै सो कौतिग करै करैं ॥ कीने चाउ आउ गी
सो चुरकि चपल होत खरे होउ डौरे नेह ही उमग भरे भरैं ॥
लाज बाग बसये तर फरात ताई भरे करतबु दोसी पग
धरत है रहैं ॥ २०० ॥ दोहा ॥ सायक सम घायक नयन
रंग त्रिविधि रंग गात ॥ झखो विलखि दुरि जात जल लखि
जलजात लजात ॥ टीका ॥ यह नाइका के नैनन की सोभ
सखी नाइक सौं कहै नाइक नाइका सौं कहै सखी सौं नाइ
कहै ॥ कवित्त ॥ साइक से घाइक है नीवन तरल दृग से
स्याम श्वेत अरुन त्रिविधि रंग गात है ॥ कैहै कि विज्ञ [illegible] जाके
रमै भिरदै ताहि सुधि न रहत [illegible] गात यूं मियन नात
है ॥ येते पर मोये है विषम विवरे जन सौं [illegible] हीतें वि
स वियाउ रस रसातिरे ॥ सफरी विलोकि जल विल
विदुरति मग भटकत विपुल ये जात जल जाते हैं ॥ २०१
दोहा ॥ वरजीते सर मैन के ऐसे देखे मैं न ॥ हरिनी के
नैनानु तें हरि नीके ये नैन ॥ टीका ॥ यह नाइका के
नैनन की सोभा सखी नाइक सौं कहति है ॥ कवित्त ॥
चेरे कीने खंजन कमेरे कीने कंज पुंज उपमा कौं नेरे

रंचकलगैनहे॥सौहितविसालयेरसालसालसे
तिनुकोरेषेमनुहरतकरतचितचैनुहे॥चपलकु
स्वरजीततमदनसरसुषके निकरजोरदेषचेसमै
नहे॥कोमदुमदरनीकेवृषभाननंदिनीकेहरिनीकेनै
ननितेहरिनीकेनैनहै॥२०२॥दोहा॥सरसिगारमंज
नकीयेकंजनुमंजनुदैन॥कंजनरंजनहूविनाखंजन
गंजननैन॥टीका॥यहवनाइकाकेनेत्रनुकीसोभा
सषीनाइकसोंकहेनाइकनाइकासोंकहेसषीसोंकहे
कोवित्त॥कंजकुरंगगुमाननुगंजनपीमनरंजन
हिंत्रनियारे॥खंजनमीननुकेमदभंजनकंजहूवि
नुयेकजरारे॥लाजसमाजसुसीलहसीरसरंगने
रेविधिमैनसुधारे॥कसकैउपमाकहीयेतियया
जगमेंदृगतेरेउजारे॥२०३॥दोहा॥जोगजुगतिसि
षयेसवेमनोमहामुनिमैन॥चाहतपियअद्वैतता
सेवतकाननुमैन॥टीका॥यहनाइकाकेनेत्रनुकी
सोभाअरुतरुनाईकोविलासुपियकीचारसषी
नाइकसोंकहतिरसषीसषीसोंकहे॥कवित्त॥ले
नोउपदेसमहामुनिमीनकेतनुकोजोगकलाकुस
लविमलविलसतुहे॥तनमनमोरनसोंयेकभयेच

प्यारे कौ हुलाई जिन्है देखत हीं विरह कै लैस दुखसक
नसते हैं ॥ सरल है सु भाइ उर मांझ धरै स्यां मद्ध विप
रीत रैनैन मन हरत महत है ॥२०४॥ पुत रीवि
ना लि हु ॥ सब अंग कारि राषी सु घर नाइ क नै हसि
षाई ॥ रसजुत लैति अनंत गति पुतरी पातुर राइ ॥ टी
का ॥ हे लाइका की पुतरी नु कौ सो भाअ रस नै हसि
अधिकाई सषी नाइक सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ चा
पुभा पुतरी कै जल कै सु पीत पट पहरैं सु धरी है ॥ नाइ
नेह सिषाइ सैव रस मेर सधी प्रवीन करी है ॥ ले
है अति चाइ निसो गति लेति मनों वहु भाइ भरी है ॥ ले
तिर जाइ मनै अति चातुर पातुर राइ किधें पुतरी है ॥ स
कारा ब्रु बु का ॥ दो हा ॥ लागत कुटिल कटाछ सर
क्यों न होइ वे हाल ॥ कढत जु हियहि दुसाल करि तउ
रहत नट साल ॥ टीका ॥ यह नाइका के नैन नाइ क
के हृदै मै चुभे हैं सु सषी नाइका सौं कहति है नाइ कु
की सौं कै सषी नाइका सौं कहै ॥ कवित्त ॥ मैर सूधै
रते तो तन कौ वढावै पीर जो निये है वात जिय सभ
उरात है ॥ लागे व्रजनागरि की कुटिल कटाछ सर
क्यों न होहि विकल बिहाल सव गात है ॥ वि
म निधान आतिपार पके वान हूते मेरे जो नइ

किऍनैषेउतपातेहैं॥दे षियेनघाइउरकूरतद
सालकरियेतपरदेषोनटसालररिजातेहैं॥
नासावेधवर्ननं॥दोहा॥वेधतअनियारेन
यनवेधतकरिनिनवेधु॥वरवटवेधतुमोहि
योतोनासाकोवेधु॥टीका॥यहनासाकेवेधकी
सोभानाइकुसषीसोंकहतुहे॥कवित्त॥अनिया
रेनैनवेधतवीरानेमनकहाअचिरजुपैनेसरजसु
भाइकें॥तोहिनिरषतवृभनानकीकुवरिअरसुतकी
तरंगरहीमेरेउरछाइकें॥वरवटमेरोहियोवेधतुहे प्या
रीतेरीनासिकाकोवेधुमनुरसेक्योधिराइकें॥सोहैके
धोंनेहकीनिकाईकोनिकेतुकिधोंसुवहीमधुरनेसु
षेरुकीनेघाइकें॥२०॥नाकभूषनवर्नन॥दो॥
वेसरिमोतीदुतिझलकपरीओठपरआइ॥चूनोहोइ
नचतुरतियक्योंपरपोछोजाइ॥टीका॥यहनाइका
केओठऐसेउजलहेजुमोतीकीझलकलनारीकेमध्यस्वेत
झलकतिहेसुसहचरिचूनोजानिपोछतिहेसषीयाकीभ्रांतिदू
रिकरतिहेअथवामोतीकीझलकदेषिसषीनिरधारकरिवि
नेथकेंपोछतिहेजोनाइकासषीसोंकहतोंरूपगर्वीता
होइसषीकेवचननाइकासे॥कवित्त

वृन्यो तियतेरो जगमगजेनिसमृरुवौरे ॥ देखतिया
सीवारहेवार ॥ हियेहरिकोर रिवैयोनहैरं ॥ वेसवि
मुकताकोप्रभाअतिउज्जलअलिपरांग धरे ॥ हार
चूनोलग्योमगलोचनिक्योपरसैंयावपोंछिपरे ॥ २०४
॥ दोहा ॥ हैरहेहेमोतीगपनूनघराव
निसांक ॥ जहिंपहिरैजगदूगगयसातिल सतिहसातसी
नाक ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीनधकीसोभासवीकही
हैग्रन्योंकिकविता [illegible] कदिन सुरनिसमेत
नाकयाहीतेकहतमुकतेनिजूतमुकतपुरीसीदरसी
है ॥ कैहेकविककसमकमेहनकोमोलिवेकौ सोहनोवी
सिद्धमानोसोभासरसतिहै ॥ तोपहिरैतेजगनयनग
सतिसोभासरसतिमानोनासिकाहसतिहै ॥ चौरेन
उरमैनिसंकअगरवुकारिदेईमुकताकेगथसहितेन
तिहै २०९ ॥ सवैया ॥ जरितनीलमनि
गमगातिसीकसुहाईनाक ॥ मनोअलीचंपककली
सिरसुलेतुनिसांक ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीनाकमे
कहेताकीउपमाकविकोउकि ॥ नाइका ॥ पूरनमय
केविग्रंकेमलसतूकोरूकेकनिरखतहीरुरितूचि
चेतुहे ॥ प्रफुलितुपंकजपेसोहेअरहट विधौतिल
सुमनसुवसोरभसमेतुहै ॥ नोलमनिजरितछवी

तेरीनाकपरसौंकचौंलसतिमानोसोभाकोनिकेतु
है।मेरेजानमुकलितचंपककीकलिकापैबैठोअ
लिसावकनिसंकरसुलेतुहै॥२१०॥लौंगवर्नेनं।
दोहा॥जदपिलौंगललितोतउतूंनपहरिइकआंग
सदासंकबढिहैरहैरहैचढीसीनाक॥टीका॥यहना
इकाकोनाकमेंलौंगदेषिकरिनाकचढीसोदेषि
सषीनाइकासोंकहतिहै॥कवित्त॥किधौंहैवदनछ
विदीपकोसुमेरजाकीजगरमगरजोतिपूरनप्रकास
कोकिधौंकविकसचारुचंपककीकलिकोहेसहज
सुगंधनिकसतिजातेस्वासिको।जदपिलवंगअति
ललितोलसतितउतूंमतिपहिरिऊरपतिउरदासिक
मानकेनरमलियैमोहनविलोकिरहैमृगनैनी
निरषिचटीरीतेरीनासिका॥२११॥तरयोनाव
र्नन॥दोहा॥लसतसेतसारीटप्योतरलतर्योना
कान॥पर्योमनोसुरसरिसलिलरविप्रतिबिंबवि
हान॥टीका॥यहतर्योनावर्ननहैसषीकोवचनस
षीसें।नाइकाकेश्रीकेवचनविदूकीउक्तिहेइ॥कवित्त॥छ
विसोंनिहारीवृषभानकीदुलारीआजुसकलसिंगार
साजवन्यौंपैरैसुठानको॥कैंधौंविजस्यचारुप्रभाकी
निकाई

सुरेसग्रीतिझीनीसेतसारीदुप्योतरलतसैयोनम
लकनुवाकेकांनकी॥मेरेजांनदेवनदीजलमल
तुपेषियेप्रगटप्रीतिविंवभोरभांनकी॥२१२॥कौन
सुननवनीको॥दोहा॥सालतिहैनरसालसी
केपीढूं निकसतिनांहि॥मनमथनेजांनोकसीवु
भौसुभौजियमांहि॥टीका॥यहनाइकाकौसुभौ
सोभानाइकासषीसोकहतुहै॥कवित्त॥राधिका
प्यारीकेयांननपेछविती निंदलोककोयोंनिसुभो
है॥मैंनिरषीजवतेंतवतेंमतिमेरीलुभाइतलहांचु
भीहै॥रूपकेवोरिथकांनमेंवाकेंविराजतिवा
ननपलुभीहै॥सालतिहैसुमनोजकेनेजेकीसे
नमनोउरमांहचुभीहै॥२१३॥तरिवननवनीका॥
तरिवनवनककपोलदुतिविचवीचहीविव
लालनालचमकतिचुनीचौकाचिन्हसम
टीका॥यहतरिवनकोसोभासषीनाइकासे
नाइकासोंकहैअरुनाइकासषीसोंकहैतोल
विताहोइ॥कवित्त॥आजुकोवननवरनतन
नैहीछविकीछटानुकीघटासीउमगतिहै॥
सरसीसिगारआपजोवनकीजोवनकीकी

जोतिसीजगतिहै॥कलकतस्यौंनलुकौललित
कपोलनिकीदुतिमेंसमाइगयोअदभुतगतिहै॥क
सप्रानप्यारेकीसौंचारुचमकतियेतोलालुला
लुचुनीचौकीचिन्हसीलगतिहै॥२१४॥मुरासा
वर्नन॥दोहा॥लसैमुरासातियश्रवनयौंमुक
तनिदुतिपाइ॥मानोपरसकपोलकेरहैस्वेदकन
छाइ॥टीका॥यहमोतीकोमुरासानाइकाकेश्रव
नमैंहैताकीसोभादेखिसखीनाइकसौंकहतिहैयो
यवानाइकाकेकपोलपैस्वेददेखिसखीनाइकसौंमु
रासाकौवर्ननुकरिकैहैतोलछिताजानियें॥छवि
ना॥ग्राजुनवनागरीकोआगरीविलोकीछविदेखि
वेकोंनैनललचाइललकतहै॥कैसोविकसवर्ने
वोनिकविलोकिठगेरीजपगतवतैलगतपलकत
है॥तरुनीकेश्रवनमेंमोलमुकताफलकेकरन
भरनऐसौआभाछलमुकतहैं॥मेरेजानपरसि
कपोलइनहूंकेउरउलह्यौप्रस्वेदतेईबूंदजलक
तेहैं॥२१५॥मुसकानिवर्नन॥दोहा॥नवसि
वरूपमेरखेरतोमागतमुसकांनि॥तजतनलोभ

ाअघवानाइकुमुसकोनिदेख्यौचाहतहैसुअप
हैनेअनुकौआसक्तिकहतहै॥कवित्त॥देखतहैअ
नमेयरहैउमगेसेपरैनविचारतगोहै॥रावरेरूप
अनूपसोपूरिरहेहैंजउअनखतेसिखलौंहै॥मागतैं
इतनैपरतोमधुरामुसकानिअघातनतें।
मयेअतिलालचीयेललचौंहिकीवोवि
नक्योंहूं॥२१॥दोहा॥सूक्ष्मकोनो॥हेतकौ॥नेत्र
वोकितजितलख्यौपरतुमुसुनीठि॥चोकाचम
धिमेंपरीचोंधिसीदीठि॥दोहा॥यहअक
सोजानिगुरुसखीनाइकासोंसीकोकेप
काकीचमककीवडाईकरैअघवानाइकुदेन
कैहैतोसंभरै॥कवित्त॥सीसफूलुदमव
ललुजरमलातुजोतिकोसमूहजगमगतुवमनु
भालकीचिलकचारुजलककपोलनुकीउमगे
रतुअतिदुतिनकोवंदुहै॥हाहाहैकेवलिनेवेसु
कांलिकोनिवानितजिवकितकैरहतुचतुरन
नंदहै॥चोकाकीचमकहीचषचनुचषचोंधी
ति॥चाहोनपरतुनीकैंचारुमुखचंदहै॥२४
दोवको॥सूक्ष्मकौ॥डारेठोडीगाडगहिनैनव
मारि॥चिलकचौंधमेंरूपठगुहांसीफांसीव

टीका॥यहठोडीगाडकोवर्ननुनाइकुलाइकासौंकहे
सखीसौंकहैसखीनाइकासौंकहै॥कवित्त॥केसनु
केवनकेउपफूलतहैमकरीगिरिओटविचारों॥चा
रुलिलारसिंगारकीचौधिमेरेतुपचंडदगानहिहा
रे॥फांसीगरैंमुसिकानिकीपारिकैंठोडीकीगाडकुंग्रा
हिडारे॥प्यारीमहाठगुतेरोसरूपदयातजिनैन
हिनुमारे॥२१५॥लीलावर्ननंदोहा॥ललि
।मलीलालालनवढीचिबुककिदिंन॥मधुछाक्यो
रूपसोमनोगुलावप्रसूंन॥टीका॥यहनाइकाकीवे
नीलाकीसोभासखीनाइकेसौंकहतिहै॥कवित्त॥कुं
गारकियोमनोरेहमहासुकुमारसुगंधकोभोन॥
।भसौचंदसौआननुपीतकेमनकोललचोंन॥ठोडी
डमेंस्यामलविंदुनिहारतकसचूकेमनगोंन॥के
।नगुलावकेफूलमेंमनपरयोमनोंभोरहौन॥२१६॥
...वर्ननं॥दोहा॥परीलसतिगोरीगरैंधसतिपांन
कीपीक॥मनोगुलीवंदलालकीलालदुतिलोकां...
का॥यहकंठवर्ननहैसुकुमारिसखीनाइकसोकैंग्रप
वानाइकासौंकहै॥कवित्त॥प्यारेमैंप्यारीतिहारील
षीनखतेसिखलोंसुनिकाईभरीहै॥केसरिकीसुकुमा
रिमनोंद्रुविपुंजसौंओपिविरंचिकरीहै॥गोरीकेगोरे
गरैंमनुमोहतिसोहतिपीककीलीकधरीहै॥चारुगुलीवं
दलालकीलालमनोंदुतिकीप्रतिलीकपरीहै॥२२०॥

वर्नों ॥दोहा॥ कुचगिरि चढि अति थकित ह्वै च
ली डीठि मुष चाड॥ फिरि टरी परियै रही परी चिबुक
की गाड ॥टीका॥ यह अंग देषत देषत दृष्टि ठोडी की गा
ड में जाइ परी सु टरति नाहीं सो नाइका अपनी अवस्थ
नाइका सों कहै अथवा सषी सों कहै ॥कवित्त॥ डी
नदी त्रिवली तरि नौठि रमावलि कानन तें निकरी
पीन उरोज पहार चढी अति थाकित ऊन उहाँ ठह
है॥ चाहि चली मुष मंडल की छबि वौ चहीं लै विधि अ
सी करी है॥ ठोडी की गाड में जाइ परी सु परी ये परी न त
टरी है॥२१॥दोहा॥ चलन न पावत निगम मग जुग
उपज्यो अति त्रासु॥ कुच उतंग गिरवर गह्यो मैनो मैन
मवासु॥टीका॥ यह कुच वर्ननु नाइकु नाइका सों कहै स
षी सों कहै सषी कहै तो ह्वै ने ॥कवित्त॥ रूर तु मालु
मुनिंदन के मनस्या विसाति को लै निवह्यो है॥ वेरन्नो प
चलेबो है कैसें सबै जग में अति त्रासु भयो है॥ कुच सके सि
लौस दितास मलीवन पास गठासु लह्यो है॥ उच्च उरो
पहार के छोर मनोज बडेही प मवासु गह्यो है॥२२॥ कौ
चवर्नों ॥दोहा॥ दुरत न कुच विच कंचुकी चुप
री सारी सेत॥ कवि अंकनि के अरथ लौं प्रगट दिषाई दे
॥टीका॥ यह कंचुकी वीच कुच सोभा उपमा नेह तिवि
प्रभा देषि नाइकु नाइका सों कहै सषी नाइका सों कहै न
कसों कहै ॥कवित्त॥ कंचुवर कमनहरन अडोलगु

ऐसे गोल गोरे सीस स्यांमतां धरते हैं ॥ उन्नत करे रे वेरे च
कोवेलुनाई भरे मदन वसी करसे मन कों हरते हैं ॥ कुच
ने चीर सेत कंचुकी तिलौं ही मांज प्यारी ये दुराये ते
उघरते हैं ॥ कहैं कवि जन जैसे सुकवि के चित्त कों अनुमें अन
घउमगि डीठि प्रगट परतु है ॥ २२ ३ ॥ उरवसी नुकों
दोहा ॥ उरमानिककी उरवसी डटतु घटतु दृगराग ॥ ग
नकतु वाहिर भरि मनो तिय हिय को अनुराग ॥ टीका
यह उरवसी की सोभा सखी नाइक सों कहति है या ने
अनुराग को पूरनता प्रगट करति है सखी नाइका सों
करे तो तिय परे संवोधनु है इनाइकालंकिता जांनि
ये ॥ कवित्त ॥ आजु को निकाई वरनी न वनत मो
पे रूप को तरंनि अनंदु वरसायो है ॥ अंग अंग आभू
न जोति जगमगे हाति जैसे तो वनाव रति रंभा हू लों
भौरे ॥ मांनिक को लसी उरवसी तिय उर पर द्वगनि
कों दुव रेहु देषत नसायो है ॥ मेरे जांन पूरन है अंतर
को अनुरागु हियो भरि वाहिर ह्लकि छवि छायो है ॥ २२४
टोह घवंनों ॥ दोहा ॥ वेड करावत आपुसों गरवे
गोपीनाथ ॥ तो वदि हौं जो राखिहै हाथनु लखि म
नुहाथ ॥ टीका ॥ यह नाइका के हाथ की सोभा सखी
नाइक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ चारु हथे की

[illegible] तो मनहु कोर जाई कोरि फरी नुई घे
[illegible] तिको मलताई [illegible] हे
[illegible] नतुतो वृदिहै चतुराई [illegible]
[illegible] नमनस्सो मनिसे [illegible] करी [illegible]
[illegible] रिकै ठगुलगाइ
[illegible] नयन चिवूर नु [illegible]
[illegible] ठिले [illegible] धारयो मनुहु
[illegible] कोसोनाहे [illegible] मनुय
[illegible] हाथ [illegible] कोग तिसखी
[illegible] रहे [illegible] सेमहदी
[illegible] रखवसीकर
[illegible]
[illegible]
[illegible] नदिये [illegible]
[illegible] मनुहे [illegible]
[illegible]

लोट वर्नन ॥ दोहा ॥ वढ़त निकसि कुच कोर हु
ढ़त गोल भुजमूल ॥ मनु लुटि जो लोटन चढ़त है
चे फूल ॥ टीका ॥ यह नाइका जो है विसों नाइक ले
है सु सखीसों कहतु है ॥ कवित्त ॥ वन व्याजु लवी
भोंनसुता जागी जो तिरही चहूं फूलनि की ॥ चिहुंदी
मेउकसांयें भुजा वह चोट निउन्नत फूलनि की ॥ वा
नीकरि ते कुच कोर कुकी रचि चारु प्रभा भुजमूलनि
की ॥ लुटि जो मकु लोंट विलोकत हीं हिय विमोहि नवेरै
हूं मूलनि की ॥ २२ ॥ दोहा ॥ करउं ठाइं घूंघर करत उस
नपर गुजरैंटा ॥ दुख मोंटैं लूटी ललन लखि ललना की लै
टा ॥ टीका ॥ यह नाइका की लोंट कौ सोभा नाइक ने दै सु सखी
सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ जाति ही वाल गली में अकेली
संग आवत मोहन देखो अगोटें ॥ ज्यों विसैं घूंघट हाथु उठा
रैकैं सोंउ सरीपर की गुजरैटें ॥ सो छवि मोपै कही न परैक
कौरि कुकौरि लुटैं सुख मोटें ॥ लाल लहौ अति मोदु हियें
नवनागरि की सिरमौ जब लोटें ॥ २३ ॥ दोहा ॥ लगीअन
सीसी जु करि करी षरी कटि षीन ॥ कियें मनो वे हेम सरि
कुच नित वअति पीन ॥ टीका ॥ यह नाइका के अंग जोवन
आये ते घटि वढ़ि ह्वै गये हैं सु सखी नाइका सों कहति है कवि
की उक्ति है ॥ कवित्त ॥ रूप सौं चेटक रचि पचि वैं सु
विधि अंग अंग सकल सुदेस रस भीने हैं

नकेरपीनसुरपीनकरबी
जेबुनाइकछुऔरै बिधि बीनकेराख्यौताहि लचकतजा
ई॥ कोलिखौहै लांकुचयैसुद्धि मेकेराख्यौताहि साधिकैप
नैकैंजतनकेसेकोलकें॥ औरहकोकसताहि॥ २८॥
रहिमोलोउरजलितवज्रतिपीनकरिहीनैरै पिंजराइल
लहलहातनतनतरुनईलचिलगलोल
गोलांकलोइनभरीलोइनलोतिलगाइ॥
हुनाइकाकोजुसोभाहैघोहेसुनाइकसखीसोंकहतुहै
लकलकलेतनमेंलहलहातितरुनईताकीनई
कुचचतुकैनारचपिलगलोल
जसनईरहीहैहिबिलाइकें॥ कहैकविक
प्रतिजवचलतिगयंदगतिरहतिसुभाइ कें॥ नैरहधरै
नवसिखलोलुनाईभरीमांकोमहामोहनीनैरैसकुकै
आइकें॥ सूछमलसतुआतिचारिकोसोआ
गोलांकवारीलेतिलोइनलगाइ कैं॥ २७॥
अनुमानप्रमानसुतिकियेनीठठहराइ॥ सूछमगतिपर
यहकटिवर्ननसवी
कोमूलमूलपीनलिजाइ॥
सोकहैनाइकासोंकहैकविउकोउनिहोइ
बेडन्यारेन्यारेअलगलगाइधरेनाहींअधिनिरधारहै
लानेहैं॥ कोनचतुराईसोंविरंचिनिरमेईयह सांसोन
सउनीनुहूकेप्रांनेंन॥ निरखीलुपरतिजसोदरीकी
कटिजांनोंनसुजांनजोरहुधिकेनुमांनेते देवत
उजियजांनतनसोउपरब्रह्मकोअलखवेदवतु
नैते॥ २८॥ जंघजुगल
हेकरेमनोविधिमेंन कैलितलनिहुवैनयेवै

तासु बेदैन॥टीका॥यह जे पनु की सोभा नाइकस बी सें कहे नाइका सों के सबी नाइका सों कहे॥कबित्त॥कारेक रेरे कुरूप करी कर कैं। समहोत प्रभाइन को बे॥सोहत सुंदर पीन सचिक्कन मोहनलें मनमोहन पीबे॥कौलिक लोल कला के निधान महा दुषदाई करें कदली वे॥ तो जु ग जंघ विरंचि मनो जवनाइ करे निरे लाइ न हीवे॥२३॥ दोहा॥पाइ महावर दैन कों नाइनि वैठी आइ॥फिरि फिरि जानि महावरी येडी मीडत जाइ॥टीका॥यह पाइनु की सहज ललाई को अधिकार सवी सवी सों कहति है नाइ कहे सों कहे तो संभवे॥कवित्त॥पाइ महावर दैन कों नाइ नि चाइ निसों उमही अति आई॥येडी गही ठकुराइनि की कर जामें भरी तिहू लोक ललाई॥जानि महावर मीडति ज्यों ही ज्यों पीवति त्यों सरसाति ललाई॥कोमलताई प्रभा प्रभुताई वि लोकि सवे चपरी चपराई॥२४॥दोहा॥कौहर सी येडीनु की लाली देखि सुभाइ॥पाइ महावर देइ को आपु भई वे पाइ॥टीका॥ यह नाइका की येडीनु की सोभा सबी नाइक सें कहति है सवी उ सों कहे॥कवित्त॥कौहरु कहा है वंधुजीव कों विलोको दहन जनित कमल सु रत रूप लिके॥मानिक पवारी विवा के सूप रतर होत कैसी हुति सहज उठति ऊ लिऊ लिके॥ वाइनु रनु महावरु लगाइवे कों आई ठकुराइनि लि[illegible] कैं॥ कहे कवित्त स चातुर्य्यार न विलोक न तही नाइनि वि[illegible] गई सव सुधि भूलि कैं॥२५॥दोहा॥अरुन वरन तरुनी चरन अंगुरी अति सुकुमार॥चुअत सुरंग सी मनो चु[illegible]

यनिकैभार॥ टीका॥ यहचरनांगुलीनकी सोभानाइकसखी
सौंकहतुहै नाइकाहू सौंकहै॥ कवित्त॥ मंदगतिहेरिकैंलहंस
नलहतलाजसमदगयंदनकौ गरबुगरतुहै॥ कसप्रानप्या
रे याकेचरननिहारेवाकेजलजसमूतजिलाजहिधरतुहै॥
अतिसुकुमारतरुनीकौपगुअंगुरीनुअैसोअरुनाइकौ
उजासुउघरतुहै॥ मेरेजांनपरयौविदितयानिकौअपारभार
तोहीतेउमगिरंगुजिंनुस्रौपरतुहै॥ २३९॥ दोहा॥ पगपगम
गअगमनपरतचरनअरुनदुतिझूलि॥ ठौरठौरलखियत
उठेदुपहरियासेफूलि॥ टीका॥ यहनाइकाकेचरनमेंअरु
नाईकीअधिकाईहैसुसखीसौंकहतिहैनाइकनाइकासौंक
हैसखीनाइकासौंकहैसखीसौंकहै॥ कवित्त॥ पलिकातेउ
तरिप्रवीनप्रांनप्यारीधांमधरनीमैंसहजचलतिमंदगतिहै
कसप्रांनप्यारेजैसेंकौंतिकनिहारैंतवचरनअरुनदु
तिअतितउमगतिहै॥ जहांजहांछोडैंडगविपरीतअंगोठे
यातितिनकौजलकजगजोतिसीजगतिहै॥ तहांतहांफू
लिदुपहरियासेदेषियतजौनकौनभांतिदेषैपेसोपगतिहै
॥२४०॥ दोहा॥ सोहतुअंगुनपाइकैन्ह नवूटजस्योजराइ॥
जीस्योतरवनदुतिसुढरिपस्योतरनिमनौपाइ॥ टीका॥
यहनाइकाकैसृंगारकोआरंभैहैसुयेकहीअवमेरूपहस्यो
ताकीउपमासखीनाइकसौंकहतिहैअथवासखीसौंक
हैवोसंभवतुहै॥ कवित्त॥ प्यारीसिंगारसवारनवैठीगयो
नकआयोतहांरपिदंनी॥ ज्योंहीहुतौअलतोहीरहीनवना
गरिस्यामकेरूपलुभानी॥ लौकोजराउअनोटलसैपग

केजगुडोउपमासुवखांनी॥पांइपस्यौहेमनोरविछाइवैंतेज
कोहोंवितन्यौनासौंमांनी॥२३॥यासुकुमारतावर्नन॥
दोहा॥ ... अरुनातुअलिनजुकिजपरिलपटा
तु॥हरसतअतिसुकुमारतनुपरसतमनुनपत्यातु॥टीका॥
सहसुकुमारताअधिकहैविसेषकेअसकोउकसषीनाइक
कौचअमनपनमिलैसोजांनतिहैसुनाइकाकौसषीभ्रमरजप
संगकरिअन्योक्तिसोंवाकोभ्रमुनिवारनुकरतिहै॥कौप
न॥सुषकोअगारुउपवनकौसिंगारुचारसोरभविविध
उमगतुजाकोगातुहै॥सरसकुसुमनुसरसअतिसोभासों
भ्योनिरषितुभ्योनौअलिरैवैनअघातुहै॥कैहैकविकल
अतिरीजपगैसोआसेपासरहैमडरानौनऊपरिलपटातु
है॥दरसतवाकौतनुअतिसुकुमारतातैपरसतवाकोमन
नुक्योंहूंनपत्यातुहै॥२४॥दोहा॥भूषनभारसम्हारिहैक्यों
इहितनुसुकुमार॥सूधेपाइनपरतधरसोभाहीकेभार॥टी
का॥यहसुकुमारताहैसुसषीनाइकासौंकहतिहैप्रयोजनु
यहहैकिभूषनपहरतविलंवुनहोइयातैवेगिचलै॥कवित्त॥
विरच्यौविरंचितेरौअतिसुकुमारतनुजोप्यौतिहूंलोकनी
लुनाईकौसकेलिहै॥कसप्रानप्यारेकौसोतेरीयहदुतिरा
वीमेरेमननमोहननैननिमेमेलिहै॥सोभाहीकेभारसूधे
पगनपरतमगकेउठौरलचकतिलगज्यौनवेलिहै॥हि
तूहोतोहितुकरिवूझतिहौंहाहाकरिकैसैंआभू ... भी

मानै मैं लिहे ॥ ४८० ॥ दोहा ॥ मैं वरजी कै वार तूं इत कत लेति करौं
ट ॥ पंखुरी लगें गुलाब की परि है गात खरौंट ॥ दोहा ॥
का विरह धाम बैठा नाइका कौं है सयन मैं थिर ता नाहीं याते सखी
उस्सों कहति है ॥ कवित्त ॥ मैं वरजी कै वार
वार ... मान ति तूं व कहा पावै गी ॥ लेति करौंट
... इते ... धरै गी ॥ कोमल आपने
... सुकुमारि सु ... रे गी ॥ पांखुरी गु
... गुलाब की जोग ... तो खरौंट लगेगी ॥ ४८१ ॥
... जक धर तहीं हैं यह धीर नाजुक ... ॥ भजा
... भीत ... चंदन ... ॥ कवित्त ॥ ... नाइका
... मैं जु नाइका वसति है ताकी प्रीति ... सखी
... सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ निजु ... हित
पति सं ... विचारु करें ॥ अति चंदन ... गलें
... जोऊ ...
... सेज ... परें ॥ ३ ... सो च हियें
... अति नाजुक ... भार भरें ॥ ४८२ ॥ दोहा
... जिस ... ॥ फजर
गुलाव ... ॥ दोहा ॥ ...
... सुकुमार ता सखी नाइक सौं कहति है
... ॥ कवित्त ॥ पौं ... पर ...
... केसें ... अंग ल
... सौं ... भरें ॥ प्यारी के नाजुक पांइ नि

लगाव नदासीडरे॥ घोव्रतिफूलगुलाव केलैपुनऊजके
मतिहाले परे॥२४३॥ दोहा॥ लगेोसुमनुद्वैसुफलुन
ग्रातपुरोसुनिवारि॥ वारिवारिग्रापनीसींचिसुहृदता
वारि॥ टीका॥ यहसषीकोवचनुनाइकसौंहेसिद्धा॥
... , व रै ... ने ... वाहें कैधौं मानुकरिवे
कैंउरनेलग ... रिये ... द्वै नौनेरवेलिनवलल
ग्राइताहिजतनजतनदूगकरिकेपोषिपारिये॥ लागेरे
सुमनुसुनौहुइगोसुफलग्रवकरेकविकसारिसन्नात
पुनिवारिये॥ सोघमानिमेरीमतिनुकैचीतेकेरप्यारीप्री
रसहीसोंसींचिहितवारिये॥२४४॥ दोहा॥ दोयोकरपु
नीचेंचलोसंकटुभांनेजाइ॥ सुचितीह्वैग्रोरेसवैस
सिहिविलोकेंग्राइ॥ टीका॥ यहनाइकाकेसुवकीसोभा
सषीनाइकसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ पुजिनिसांकरुग्रघु
रियोग्रवनीचेंचलोवलिसंकटुभौनेंग्रोरनुकोदृचि
ताईमिटैजिनसाधउपासमनोरथठानें॥ चंदउतेइततो
सुवचंदुकितेविनवैचितसोचसमानें॥ वृभ्रपनेवृतपू
रेकरैंजुरहोचकिग्रांचिरदेउरग्रांनें॥२४५॥ दोहा॥ तू
रहिहौंहीसषिलषौंचढिनग्रटावलिवाल॥ सवहितुवि

नहीं ससि उदै हैं दीजतु भूर पच्छ काल ॥ टीका ॥ यह नाइ
कौ मुख की सोभा की अधिकाई है सु सखी नाइका सौं कहै
है ॥ कवित्त ॥ हौं हीं अटा चढि हौं ससि देषन तूं सजनी
आंगन ही तिन ॥ और कितीक वृती क वृती वनिता सु
देषति चंद उदै हि दिना ॥ तो मुख देषि उछाह भरी सब
हिगौं अनु छुमयं कउदै बिन्हु ॥ और नुके व्रत भंग के रमी
है हि गौ पातकु सो लैव है लौ किना ॥ २४६ ॥ दोहा ॥ कहा ल
डै ते दूग करे परे लाल बेहाल ॥ कहूं मुरलिका पीत पट
कहूं मुकट बनमाल ॥ टीका ॥ यह नाइका के जु नेन्ह देषि
नाइक की जु दसा भई सु सखी नाइका सौं कहति है प्रयोज
नु कि तेरी चाह है तूं चलि ॥ कवित्त ॥ तूं चितई जब तें
वै तें उह भांति रहौ चित चेतुर सो है ॥ पीत पटी लकुटी
न हूं अरु मोर किरीट कहूं विसर्यौ है ॥ भूलि गई बनम
ल कहूं कौ सु थिहाल लवै मन मेरौ हुर्यौ है ॥ लाडिलीन
लडैते कहा करे देषि तो लाल विहाल पर्यौ है ॥ २४७
॥ दोहा ॥ पिय मन रुचि है वौ कठिन तन रुचि होत सिंगा
र ॥ लाष करौ आंषि न बढै बढै बढाऐं बार ॥ टीका ॥ य
ह नाइका सिंगार करत देषी सु सखी नाइका सौं कहति है

थवासोतिकोश्रृंगारदेखियौभईयौंभईसुसखीसौंकहीहै
तैंप्रेमगर्वितानहोइ।।कवित्त।।बैठेकुंजसदनवि
ोकहतुहेतुवगुनगुनेरोनामुमैंरहनुरटतुवारवारहौं।।
मानिरगरलोचलीमेरोकह्यो
मालिश्चनगवनितहाररहौ।।पियमनवसकरिवोईहैक
ठिनअसतनदुतिसरसनिसाजेंऊसिगारहौ।।कहै
कवित्तसकीजेलावककजतनततऊलोचननवटत
तटांयैंवटेंवारहौ।।रूच्यामनाइवौ।।दोहा।।गहिलो
गरवुनकीजियेसमैसुहागहिपाइ।।जियकीजोवनिजे
सोमोहनछांहसुहाइ।।टीका।।यहसखीकोसिखोहै।।
हैजोजेसाकेनिसुभेदमें।।यासैंनाइकाकोहितुरवि
तोहूसभेवो।।इरषासंचारीहूहोइ।।कवित्त।।
अलिहोंसमझावतितोहियेहैतजिमानुमहासुखदे
म।।फलुक्योंनलेहैवलिजोवनकोमनमोहन
मैंमिलिकेंयोंनरमै।।लडवावरीपाइसुहागसमैमोजि
नेयेतोगुमानधरेजियमें।।सवकीवहजेठमेजोकं
मूरिसुछांहसुहाइनमांहसमै।।२४८।।अथमिलितै
२ ए।।सघनकुंजघनघनतिमरगूधिवकोध

नऊनदुरीहै स्यांमयहदीपसिखासीजाति॥ टीका॥ य
नाइकुनाइकाकुंजमेंमिसंकवैठेहैं॥ सुगुरुसवीनाइक
सोंकहतिहै॥ याकोदीपति॥ [illegible]॥ वर्नतुभीरसी
छकहतिहै॥ अथवा नाइकुअंतरंगसखीसोंवहैकि
याकोकुंजमेंलैचलि॥ तहांसखीकोकहिवौस
मैवो॥ कवित्त॥ रैनिअंधेरीनहेरयौपरैकरकुंजसवे
नेहपुंजलिछाई॥ घूमिघनेघुमडेघनवृंदअमंदभईतम
कौसरसाई॥ मेचकसाजिसिंगारकैजा[illegible]पिअईस
संकवीयेचतुराई॥ दीपसिखासमदीपतिलालन
ऊयहवालदुरैनदुराई॥ २५०॥ मिलिवो॥ दोहा॥
फूलीफूलीफूलनुसौंफिरतिजुविमलविकास॥ भोरतै
याहौंहितैचलतेतोहिपियापास॥ टीका॥ यहमनाइ
वोसखीनाइकासोंकहतिहै॥ कवित्त॥ निरविनिभ
ईतेरीहौंविकाईवलिपूरीतूंहैअलवेलीकछुमेरो
सौंकरैगी॥ तेरीतनदुतिगौरतनरतीभुलौ
सांचीकहिकौलोंगैसौहरुअरधरैगी॥ फूलनिमें
लौफिरतिसिंगारसजैसौतितेरीतिनकेगु
हिंतूंघौनकहैगी॥ भौरकौतरैयासमदेखियेंगी
तीसवहितुकरिजवतूंप्यारेओरवरैगी॥ २५१॥ [illegible]

रिवे॥ दोहा॥ तन भूषन अंजन दृगनु पगनि महाव
र रंगु॥ नहिं सोभा कौ साजियतु कहिबेई कौ अंगु॥ टी
का॥ यह नाइका के अंग की सोभा विक सोभा सखी
सों कहति है॥ कवित्त॥ सहज अरुन गुलफनि तें ऊ
वतें छबि तिनिके निकट कहा जावक को रंगु है॥ गा
तकी गुराई आगें कंचन के आभूषन फीके से लगत रंच
सोभा कौ न संगु है॥ खंजन हूं आजे बिनु नैन कजरा
रे दे ये खंजन अनेक नि कौ होतु मन भंगु है॥ तो तन सिं
गार कहु सोभा कौं न साजियतु साजियत जो निकहि
बात ही कौ अंगु है॥ २५४॥ दोहा॥ वैंदी भाल तमोल मु
ख सीस सिलसिले वार॥ दृग आंजें राजे खरी येही स
हज सिंगार॥ टीका॥ यह नाइका की सहज की सो
भा सखी नाइक सों कहति है॥ कवित्त॥ वैंदी छवि
छाजति है ललित लिलार पर नीकी नव जोवन की
जोति निरखति है॥ सिलिसिले स्याम सटकारे सुकु
मार वार निमि धिमि वार पांति सर निसरति है॥ आ
न मुंह अधर अति अरुन तमोर भरे खंजनु से दृग अं
जनु धरति है॥ सहज सिंगार येही राजति अपार दु

तैसोगितुकौआंषिनुमैंकारसीपरतिहै ॥२५३॥
बरीपातरीकांनकीकौंनवहांउवांतै ॥ च्यावनली
ह्रीलीजियजांनि ॥ टीका ॥ यहन
नरलीवोरव्रलीच्यलीजियजांनि ॥ यमुनेम्
इकाकेमनमेंनाइवकोआभ्यासहैजांनि ॥ वातके
हैसुसषीनिवारनकरतिहै ॥ कवित्त ॥
हैसुसषीजिवारनुकरतिहै ॥ मनसोइसुचेतिवैजां
कोऊज्यौंहींजोआइवेतूमनसोईसुथीकितव
है ॥ जांनिपरीघरीकांनकीपातरीसीथीकितवनि
धौंमहावानिहै ॥ छोडिहैक्योंमहुमालतीवनिके
सौरसरूपरलीसुघरीनिहै ॥ आवनलीपैवधि
सुघुपाइआलीवाहिरंगरलीकवमानिहै ॥२५४॥
॥ तोरसराचोआंनवसकहैकुटिलमतिकुर
वनिवोरीक्योंकुवेवोरीचाहिचगूर ॥ टीका ॥
नाइकाकेमनमेंनाइकुकोआभ्यासहैयहनिश्चय
सषीनाइकासौंकहतिहै यहभमुनिवारनकरि
॥ कवित्त ॥ तेरोईधांनुधरैनदनंदकुजांननुहै
तेरीकथाहै ॥ तोरसरंगमेपागिरहौ निसिवा
ईकपुसरोहै ॥ नाहितूऔरसौंराच्योकहेकहि
कामनआईकहाहै ॥ वावरीदेखिविचारियेहै

बहिछांडि निवोरि हिचौहै ॥२५५॥ अथ प्रछन्न विभावा ॥
दोहा ॥ गली अंधेरी सांकरी भो भटभेरा आंनि ॥ प
पिछांने परसपर दोउ परे पिछांनि ॥ टीका ॥ य
अंधेरी गली मैं भेट भई जा भांति सु ते सखी सखी सो
कहति है स्वरस को पहिचानिवो दोउनि को आगै भि
लपुहे यह व्यंगि नाइका पर किया ॥ कवित्त ॥ रैनि
अंधेरी घने घुमड़े घन जू मिमहा तम पुंज छये हैं ॥ जे
सो ये सांकरी लांबी गली भटभेर अचांनक दोउ भे
ये हैं ॥ गात सौं गात हि लागत हीं जिय जांनि हिये लप
टाइ गये हैं ॥ राधिका माधौजू माधौजू राधिका आपु हीं
ते पहिचांनि लये हैं ॥२५६॥ दोहा ॥ उयौ सरद राका स
सी करति क्यौं न चित चेतु ॥ मनौ मदन छितिपाल कौ
छांहगीर छवि देतु ॥ टीका ॥ यह मानवती सौं सखी
को वचनु नाइका कौ मानु छुड़ाइवे प्रयोजनु ॥ कवि
त्त ॥ व लिम्बा जु सुहांवनी रांका कौ रैनि विहार समै
सब साजतु है ॥ वह देषि री इंदु उदोतु भयौ अरु नाइ
गहै छवि छाजतु है ॥ अवलोकत जाहि रिसै लनीति पा
निकौ मानु कहूं डरि भाजतु है ॥

यौहै॥ मैंनुमुनिंरप्रयोगपटकोरसकेलिहियेंजुपि
ाष्कियौहै॥ हेउ नुलेजपकोजपनोयांदियेहथ
लाईराधरियौहै॥ २८७॥ दोहा॥ तच्योंमाचकीति
विरहकीउसोप्रेमरसुभीजि॥ कैनलुकेमगज
सुनैहै हियौपसीजिपसीजि॥ दोहा॥ यहलाइकाय
ग्वालाइहुवियोगतैंजुसुवादहतैंहैं तिनिकोउसे
हुकारतुहैसुसखीसोकहैसखीसखीसोकहै॥ दोहा॥
॥ जाहिनैतेनवलागहिकोमहुनंदकिसोरकै
नाहिनतेदिनरैनिटरैंजुसूवातिनिमे
हुगहेलौ॥ ज्योंच्युतच्योंविरनलकोहितके
महुलहैलौ॥ तौतेपसीजिपसीजिहिये
मैंजातिभीजिरहैलौ॥ २८८॥ दोहा॥ मै
हियेलेनलुकेमगनीरुवहैलौ॥ लहिप्रसाद
लोहीमेलखीमगतिअपूरववाल॥ दोहा॥ यहसाथिव
जुभैतलुकहेदवुकीमाल॥ दोहा॥
नवीकोवचुनाइकासौंपरकियालछि
॥ कोरिजवारिलेप्रेमपगीरंगिलाल
कौनहकीछविदेहिनुपाल
गलालभईहै॥ मैंछिरवीयहतोतनलो
कितांनविहालभईहै॥ मालप्रसादकौंपा
परवा...सालभईहै

देहैनदेवकीमातलईहै॥२८३॥नाइकाकौवचनु
सषीसौं॥दोहा॥ठौरीलाइसुननकीकहिगोरी
मुसिकात॥थोरीथोरीसकुचसौंभोरीभोरीबात॥
टीका॥यहनाइकाप्रौढानाइककीजुचेष्टादेषीहैसु
सषीसौंकहतिहै॥कवित्त॥जादिनतेंवहसांवरो
मैसुवनैनमिलेमुसिकाइगयौहै॥तादिनतैंव
विकेसैनहैंमनुवाहीकेहथविकाइगयौहै॥थो
रीसीलजगहैंहितचीकनीभोरीसीवातसुना
इगयौहै॥कौनहुकौंअववातियकीसुनिवेईकी
ठौरीलगाइगयौहै॥२८४॥दोहा॥जौलौंलषैंनकु
लकथाठिकुतौलौंठहराइ॥देषेंआवतदेषहीक्यौं
हूंरह्यौनजाइ॥टीका॥यहनाइकाउटाग्यपनीदूट
तासषीसौंकहतिहैअरुनाइककौस्वरूपदेषैसौंसु
दरहैसुदेषैतेक्यौंहूंरह्यौनाहीजातुनाइकाकौव
चनुसषीसौं॥कवित्त॥जौलौंनडीठिपरैमनमें
हतुहैंलषदौंसषीतौलौंसयानी॥ढीठजुठांनि
पतीव्रतकौवारिलैकुलकौंनिवप्याकैवकांनी॥
लोचनक्यौंहूंनरोकैरहैंजवदेषतिवामदमरति
कांन्हही॥देषैविना

गारु कारलागैपौवैकौगुहतसात्विकभाव
इन्हांनैजांन्यौसुनाइककसौंकहतिहै ॥ कवित्त ॥
छुवनाइरूपालजू श्रीवृषभांनसुताटिगआयेजु
जांनतिलोकैसिंगारुकैहैसुकरैकहैवैनसुहाये
गुहावतप्यारीकस्यौसुघरापुनयेकितेतंतुमपाये
सुचांनलेगगवहींसटकारेसेवारसुनी
ये ॥ ७० ॥ [illegible] ॥ राधाहरिहरि
जावनिआयेसंकेत ॥ दंपतिरतिविपरीतसुमसरु
सुरतहंलैत ॥ टीका ॥ यहलीलाहवरीतिविपरीत
सुसखीसखीसौंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ देषिवेकौदेह
येकमनयेकप्रांनरूपसीलवैसगुनचातुरीसमे
जैसेंदोऊसांचेमनराचेप्रीतिरीतिरंगजुलौ
मैंकहेंऐसेंहियेहलैहैं ॥ राधामाधौमाधौराधाजद
लिवेलेवलिवलिआयेकुंजकेलिकेनिकेतहैं ॥ कैंरे
जोदोऊसहजसुरतिकरिरतिविपरीतिके
धिसुषलेतहैं ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ लैकऊनेऊठिवे
वारेगहिगेहा ॥ छुटीजातिनहदीछिनकुमरु
कोदेह ॥ टीका ॥ यहनाइककौदेषिनाइकाकैसा
त्त्विकभावभयौहैसुसखीनाइकसौंनिवेदनुकरति

काहू संदेह के अधिक्यतें नाइक सौं कहै ॥ कवित्त ॥ आजु
कैसैं हू जांनि परी न चली जब तें रस रीति चलाई
नु मैं ऊ मगे सो अब हीं कर पल्लव छोरन स्वेद जल ॥
वहु नैन ऊ तेऊ ठि कैं ऊ घरी यह आवति पैं कला ॥ जो
छुटी अब हीं न हटी महि दी छिनु सू कन दे हलला ॥ २७२
हा ॥ पहिरत हीं गोरैं गरैं यों दौरी दुति लाल ॥ मेने
रसि पुलिकित भई बाल सिरी की माल ॥ टीका ॥
ह नाइका के स्पर्स सौं नाइका कैं सात्विक भाव भयो सु
खी नाइक सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ सोरम सहित
निचु लिकै कुसम चारु आपने कर न मन मैं
न गुही बनाइ ॥ मैं तो आइ दीनी ऊ निलीनी
[illegible] ॥ हेतु सरसा
॥ केसपांन प्यारे वाके गोरे गरैं नाही खिनु ऊप
नव लहुति रही अैसी छवि छाइ ॥ मेरे जांन ला
बाल सिरी की ललित माल पुलकित भई वाके
न कौ परसु पाइ ॥ २७३ ॥ दोहा ॥ हितु करि तुम पठ
लगैं बा विजना की बाइ ॥ टलीत पतितन कीत ऊ
[illegible] ॥ यह नाइका के विजना की
इल [illegible]

छिजु खी मुसिकांनी रिसांनी ॥ २८८ ॥ पतिरतिंगी
वृतियां कहें सखी ल्व खी मुसिकाइ वेकै सवेट लाल लीग
न्नो चली सुसुपाइ यह नाइकानाइकको सुरतारं
भसमें जानि सखी मिसु करि उठि चली सखीको वचन सखी
सों चौपरि खेलन गीव निता ब्रजराज बुलं
ति हैं लल चांनो सैनन मैंन हू केलि कलोल की
न कहीं मन मैं न मुलानो पारी खलीं नकी ओर लखै
हसि यों रस भाउ हियें सरसांनो देखि सवे सुसुपाइ चु
ली अपने गृह कों कहू उठ मुठांनो ॥ २८९ ॥ हों
दोर तपिय करकट कू वासकुंडा वननकाज वरनी वर
गावैं दूगनु रहौं गुटो गहिलाज यह सुरत सम
य सखी सखी सौं कहति है रतिमंदिर मैं न
नागरि कान्ह मिले रस रंग हियें ठौरि कें दूलै दोर तवे
तहां पियकौ कर वा सुकुंडा वनको जुरि कैं कविता
को ठहराइ तहां नसकौ रहि धीरज को धरि कैं गहिको
धैं वसनी वनकौ रही नैनन लाज जुटौ करि कैं ॥ २
मौर हुलास निसूह नट तिआ विविसों लप
ति कें विछुडा वतिकाइ चैबु गे आवति जाति
यह है सुरतारं भसों [illegible] प्रौढा नाइका नाइ
जु हिया चे प्रौढ हे सु सखी सखी सौं कहति है नाइक सं
तिय संके जब बार
ह सों कहे तौ हूं संग मैं है

सरोजमुषी द्युतिपुंजनिकौं उमगावतिसी॥ तहां कैसुअ चांन कजुआंनि जहो चहो भौंहनु सौं डरपावतिसी॥ अरु अंषिनि मेलपटातिसी आंनननाकरिनाक चटावतिसी॥ वहचैं चिबुकु डावतिवांह इहांमिसद्युपुइचीठि गआवतिसी॥२५०॥ दोहा॥ सकुचिसुरत आरंभही विछुरी लाजलजाइ॥ टरकिढारढुरीढिगभई ढीठढिठाई आइ॥ दोहा॥ यहप्रौढा नाइकाकोसुरतसषी सषीसौं कहतिहै॥ कवित्त॥ चितअभिरांमस्यांमा स्यांमरतिमंदिरमैं विहरत उमगि अनंगरंगभरिकै॥ रंसदानरदानचुंबनअधरपांन आलिंगनकरतअनेकभाइभरिकै॥ सुरतकेआरंभहीं लाजलजवंतीसषी लिपटलजाइजियग ईकहूं टरिकै॥ ढीठनुहियेमे गहिनिधरकैंढकैं आई ढीठ ढीठभई निकरढिठाई ढीटरढुरिकै॥२५१॥ दोहा॥ दीपउजैरेंहूंपतिहि रहतवसतरतिकाज॥ रहीलपटिढिविकी छटनुनिकी छुटीनलाज॥ दोहा॥ यहसुरतवर्ननना इकाकोरतनकीदीपतिकौ आधिक्य सषीकोवचनसषीसों॥ दोहा॥ तैसोई प्रकासुरतिमंदिरकेदीपनुकौ तैसोई समूहजगमगातुरतनकौ॥ तैसीयेसुधानिधिके मुषकीनिरषिजोतिमोरहले कैमनभा —— ॥ भीत

वेहरीलालनैवेकोसुरतसुखनिजुकरवसकछुजटवि
स्योतनको॥ छविकोछूटानुहीसोंरहोलपयाइराधामग
हूंतनकोछुटीनलाजतनको॥२७॥ सवैया॥
पटकौटिंगकतटांपियतीसोहतिसु
गासुवेय॥ हदरदछू॥ दछविदेतीयहसदरदछदनौर
यहसुरतकोचिंन्हदुरावतिहै नाइकासुस
खीनाइकासोंकहतिहै लछिता॥ आजुनहूर
तिरंगकेमंदिरतूंमनमोहनकेसंगजागी॥ केलिवि
लासहुलासनिकैवडभागिनितेंरिजयोअनुरागी॥ टां
कतिज्यौंपटकौटिगसोंअतिसोहतिवारप्रभानिसों
पागी॥ देतिमहाछविकोहदकौंयहरेखरदछदकौसदला
गी॥२८॥ सुरतिदुराईहुरतिनहिप्रगटकरतिरति
रूप॥ छुटेपीकओरेउठीलालीओठअनूप॥
यहसुरतिकेचिंन्हदेखिसखीनाइकासोंकहतिहैपरकिय
जोनाइकासखीसोंकहैतोअन्यसंभोगदुखिताहोइ॥
भूखनचासवनाइसजेकचहूलगुहेफिरिचाउ
बनाई॥ होतोकहापलटैपरराधिकेलीककपोलनकीपीं
कैआई॥ देतकहैरतिरंगकीभांतिसुपेमकीरीतिदुरै
नदुराई॥ पांनकीपीककछूटेअधरानिपेओरेकछूप्रगटै
अरुनाई॥२९॥ मोसोंमिलवतिचातुरीतूंनी

भांवति भेऊ॥ कौहै देतु यह प्रगट हैं प्रगटैं पूस पसेऊ॥
टीका॥ यह नाइका कौंहैं स्वेद लखि सखी सुरत भेयोजां
निकहति है लच्छिता जांनियें॥ कवित्त॥ आजु पगे सु
षपुंज में प्यारी सु कुंज में केलि करी मन भाई॥ पीक ग
ईढुटि ओठनु पे प्रगटी मुषमंडलपे श्रम कनाई॥ मोहनी
वातकैहे किनि भांतिनि यों सीं च लावति क्यौं चतुराई॥
तीतकु देतु नहें प्रगटें यह पूस के मास पसेउ भेन्हाई॥२९
दोहा॥ आजु कछु औरै भये वयेन ये ठिकठैन॥ चितकेहि
तके चुगल ये नितके हौंहिं न नैन॥ टीका॥ यह नाइ
काके नैन देखि सषी कैहै तो लच्छिता होइ जौ नाका नाइ
का सों कैहै तो षंडिता होइ॥ कवित्त॥ आलिनु के रस मैं
विष के रंगि लाल के रंग सुरंग भये हैं॥ देत न है चितके
हितकी चुगली ठिकठैं न नये ई ठये हैं॥ निरतै हैं अरविं
द प्रभा अनुराग पराग में पागि मये हैं॥ हों हि न ये नित
के सजनी दृग आजु अपूरव ओप दये हैं॥ २९॥ दोहा॥
जदपि नाहि नाहीं नहीं वदन लगी जक जाति॥ तदपि
पि भोंह हांसी भरी हांसी ये ठहराति॥ टीका॥ यह सुर
तारंभ नाइका प्रौढा सखी को वचनु सखी सों॥ कवि

॥ बैठी सिंगार सजैं ब्रजनारि ॥ मोहन
पांखिग सो अरत्तौ किछ्यवे लौं जैसे लौं विकवेलि
चितचांहीं ॥ जद्दपि वाकर नागरिकै मुखलागी
कनाकननाहीं ॥ तद्दपि हांसी भरी भ्रकुटी नु मेवी
सेठहराति है हांहीं ॥ २९ ॥ सुरतांत ॥ दोहा ॥ सकु
नर कि पिय निकट तैं मुख विवकुशतनु तोरि ॥ क
ग्रंचर की ओट कै जमुहांनी मुह मोरि ॥ टीका ॥ य
सुरतांत नाइका प्राठा सषी कौ वचनु सषीसों ॥
कवित्त ॥ केलिकलानु सलनु रंग नै नी पिक वैनी
कीन्हि विपरीति वारि येक रोरि कै ॥ सैन सुषपागी
अनुरागी पति संगजागी मैं न कै विलासनि सैं लेति
तु चोरि कै ॥ सरकौ सकुचि मनमोहन के निकट तें
कछु उमसु लकि अंगिरानी तनु तोरि कै ॥ सोभा वहमो
पैन्यो हूं जाति नव वांनी कर अंचर की ओर जमु
हांनी ... मुह मोरि कै ॥ २८ ॥ दोहा ॥ चमकत
जकहांसी ससकनि मसकनि ऊपटल पटांनि ॥ ये जिहिं रति सो रति
जाति ओर मुकति विहिं हांनि ॥ टीका ॥ यह सुरतवर्न नना
यकौ वचन अथवा कवि को उक्ति ॥ कवित्त ॥ किलक

निमुलकनिहेरनिहरनिचितुचमकतमकजमकनिमुसि
कोनिहैं॥हिलनिमिलनिगुरुरसभरीकसकनिसकनिसस
कऊपटनिसु घर्नोनिहैं॥लटकनिमटकनिदुरनिमुरनिक
लकुंजनिलफूलिचटकलपटांनिहैं॥ऐसीरीतिरतिसोईमु
कतिकहावतिहैमुकतिकहावतिहैसोतोयातिहांनिहैं॥२६॥
दोहा॥लखिलखिकेसियांअधखुलिखुगांगमोरिअंगिराइ॥
आधिकऊठिलेटकिलटकिम्यालसभरीजभाइ॥टीका॥य
हसुरतांतनाइकाप्रोटासखीकोवचनुसखीसें॥कवित्त॥सिन
सुखपागीअनुरागीहरिसंगजागीसोभासरसांनीअरसांनी
अंगरातिहै॥बिथुरीअलकजुकीआवतिपलकमनमथकी
जलकअतिरसवरसातिहै॥ललितकपोलनिपेलसतिनी
कीपीकलीकदोऊभुजजोरिमुहमोरिजमुहातिहै॥अधखुली
आंखिनिसोंगातनीतनकवसोकिआधीऊठिसेजहीलटकि
लेटिजातिहै॥२७॥दोहा॥नीठिनीठिऊठिवैठहूंप्योप्यारीप
रभात दोऊनीदभरेखरेलागिलागिगिरिजात॥टीका॥य
हसुरतांतनाइकाप्रोटासखीकोवचनुसखीसें॥कवित्त॥वु
सभालसलौवुजराजललार. . . . . . स. ‍ भ्यै॥.
जसेंकेहैकलकांमकलावहुभाइविलासहियेंवमैं॥ज.

ठतसेजेपैली हितउ ऊ डिपैन्ससदै अतिप्रेमपगै ॥ सुखनीदभ
अरसानसरे वहस्यौंगिरिजातगेरहीलगैं ॥ २६ ॥ टीका ॥ रगी
रतरगपियाहियैंलगीजगीसवराति ॥ पैंडपैंडपरठठुकि
उभरीकैंडाति ॥ टीका ॥ यह सुरतांतसखीकौवचनुसखीसैं
जोसखीनाइकासैंकहै तौलक्षिताहोइ ॥ लक्षिता ॥ सवरैनि
जगीहरिकंठलगीरतिरंगरंगीअलसातसरीहै ॥ उगयेप
चलीफिरिकैचितवै मुरिकैअंगरातिमरोरभरीहै ॥ विथुरी
अलकैंकुलकैंअमवारिजुकीपलकैंसुखटारढरीहै ॥ ल
गिपीककीलीककपोलनिनीकीलसैअतिसारीसलोटप
रीहै ॥ २७ ॥ दोहा ॥ यौंदलमलियतुनिरदईदईकुसमसेगा
उ ॥ करधरिदेखौधरधराअजौंनउरकौजातु ॥ टीका ॥ यहला
रकासुरतमैंमुदितअतिविह्वलभईहै सुसखीनाइकसौंकह
तिहै ॥ लक्षिता ॥ वेसअलवेलीमृदुवेलीसीनवेलीवालमिल
रिगुपालसुम्हकितनैंकपाइकैं ॥ रसिकरसालकितभयेकि
रदईकैलिकरयौंकरेरीरसरीतिविसराइकैं ॥ ऐसीरलम
लीमृदुकुसमकीसीपांखुरीसीपरीहैअचेतसवसुधिविस
राइकैं ॥ छतियांवहाहैंकहैदूतियाकौधरधराअजहूंनमि
टतुनिकरदेखौजाइकैं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ नहिरतिसुखलगि

येहियैंलषीलजौंहौंलीठि॥बुलतिनमोमनवंधिरहीवैहेप्र
पषुलीडीठि॥टीका॥यहसुरतांतनाइकाकौवचनुसषीसें॥
कवित्त॥केलिकलासुषकेलिप्रभातलसीपरजंकपेरधिप्र
प्यारी॥अंकलगीतअलाजपगीरहीनारिनवारमहाछवि
धारी॥सोहैचितैवृजमैंहूंहियौतवजेसुजभोंहउचारनि
हारी॥सोऊनदींअषिआंगपषोलौंचितौनिहियेंतेंटरै
नहिटारी॥१८॥दोहा॥विनतीरतिविपरीतिकीकरी
परसिपियपाइ॥हंसिअनवोलैंहींकियोऊतरुदियोवता
इ॥टीका॥यहरीतिविपरीतिसषीकोवचनुसषीसौं॥क
वित्त॥केलिकलाकुसलकुरंगनयनीकेअंगअंगकीनिका
ईदुतिरतिकीरतीकरी॥पहिरतअंगरतिविहरेविविधवि
विमदनमहीपतिकीविभूतिवटतीकरी॥तहींरतिमंदि
रमैंप्यारीकेपरसिपाइरतिविपरीतिकीपियारैविनतीक
री॥प्यारीमुसिकाइअनवोलैंहीवनायोदियोपीतमकेजि
यचाहाचाहीमैंसहीकरी॥२०॥रतिविपरीति॥दोहा॥
पस्योजोरविपरीतिरतिरुपीसुरतरनधीरकरतिकुलाह
लकिंकिनीगहौमौनमंजीर॥टीका॥यहविपरीतिर
तिवर्नतुहैनाइकाप्रोढासषीकोवचनुसषीसों॥क॰

कौव्रषभांनसुतातनजो [illegible] तिजेगेंरतिल
रंगीजनुजागी॥ मौंहविलासनिहासनिकैं हरिसाजनलो
सुखसाजनलागी॥ धीरमद्य मतिसंगरमैंविपरीतिरचौ
तिराजनलागी॥ मौंनुगहौविद्धियांनितहींरसनारसहि
सवाजनलागी॥३०१॥ दोहा॥ मेरेवूझतवाततूंवूतवहरावौ
वाला॥ जगजांनौविपरीरतिलखिविदुलौपियभाल॥ टीका
यहनाइकाप्रौढारतिविपरीतिकौनोसखीसोंदुरावतिहैसुप्र
वीनसखीजांनिलईसुनाइकासौंकहतिहै॥ कवित्त॥ हौंहित
कैवतिवूझतितौलहुतूंवहरावतिवातहमेरी॥ पून्योंकौचं
द्रउदेतुकरैतववैसेंदवैनियैंओटहथेरी॥ तैंहरिसोंविपरी
तिकरीलहिद्योदुरिहैअवतौरमेहरी॥ नीकैंहौजांनिपरीस
बकौंपियभाललखैविंदुलौतियतेरी॥३०२॥ दोहा॥ रवनप्र
हौहठिरवनिसोंरतिविपरीतिविलास॥ चितईकरिलो-
चनसतरसगरसलजजसहास॥ टीका॥ यहनाइकैनेरति
विपरीतिकीवातकहीसुनाइकाकैचितवनिमेंजुचेष्टाकौनी
सुसखीसखीसौंकहतिहै॥ कवित्त॥ व्रषभांनसुतानदनंदु
नलालरसवेलिकलानिप्रवीनखरे॥ तिहिंमंदिरमैंरतिप्रेम
गगरतिकंतविलासकैरंगटरे॥ रतिकौविपरीतिकरोरम

मानीहसियें जबप्यारे लिहोरेकरे॥तबप्यारी कियेलखिनेनंनीत रीद्वैगुमानहंसीअरुलाजभरे॥३०॥दोहा॥सहीरंगीलेरीति जगेजगीपगीसुखचैन॥अलसींहैंसींहैंकियेंकहेंहसींहैंनें न॥दोहा॥यहलाड़कामेंबेनलुगोसोभांदेखिसषीसषीसोंक हतिहेकवित्त॥कवित्त॥मोहिमोद्ववीलीरसरीतिव्यंचा हिपावतिहैआंननयेउमगिअननंगोपजागीहै॥अंगअंग सिथिलअन्नंगसुखसंगसैनैरंगसनीकमम्लअनुरागीडर लागीहै॥लसंतहसौंहेंअलसौंहेंयेचपलचखसौंहेंकिये केहतप्रगटप्रेमपागीहैं॥कहानपरतिआतिअदभुतछवि यहसहीतूंरंगीलेरतिजगेआजुजागीहै॥३०४॥जुगलरू परसवर्ननं॥दोहा॥नितप्रतिएकतहीरहतवेसवर नमनएक॥चहियतजुगलकिसोरलखिलोचनजुगलअ नेक॥टीकायहजुगलकिसोरकिसोरीकोसोभाप्रेमदोउ नुकेहितकीआधिक्यसषीसषीसेंकहतिहे॥कवित्त॥ नितश्रीवृषभांनसुतानंदलालविराजैहैंछविपुंजछये॥ नविनरूपवहेमनसीलवहेंकमचातुरताइकरंगरये॥ सुखदेखिसिहातिसवेसजनीविधिसेंविनवेंअभिलाषनें ये॥यहरूपविलोकिवेकोंतनमेंप्रतिरोमनिलोचनक्यों नभये॥३०५॥दोहा॥मिलिपरछांहीं

रसौंरहेदुहूंकेगात॥हरिराधाकुंवरसंगहीं चलेगलीमेंजात॥
टीका॥यहदोउजनुकोमिलिवोगलीमेंजातयेकहतहैंजो
निपरतहैसखीसखीसोंकहतिहैनिमिचारकोमिलनु॥
कवित्त॥दोउरसभीजेरूपरीझतरुनाईभरेदुहूंकेसबे
हकेहकमगानगातेहैं॥दंपतिकरतचतुराईकेचरित्रचा
हऐसेकौजांनेयेप्रवीनजुकीवातहैं॥जहांपरछांहींतहां
प्यारीयेविलोकियतिजैसेंकोप्रकासुतहांकोजुहींलखा
तेहैं॥कूरकोकेविलासवोलिकुंजमेंनिसंकनैयेदोउप्रा
साथहींगलीमेंचलेजातेहैं॥३०६॥दोहा॥तजितीरयहरि
राधिकातनदुतिकरिअनुरागु॥जिहिंव्रजकेलिकुंजमें
गपगपगहेतुप्रयागु॥टीका॥यहजुगलजुवनेजुहैं॥
[illegible]॥तीरथनिसटकतुकाहेकौंतूंभटकतुक्योंनअट
केतुवनसोभाकीहिलगमें॥राधावनमालीकीसरस
गोरस्यांमदुतिसकलनिकाईकोलसतुसारजगमें॥
तासोंकरिप्रीतियहनिगमप्रसिद्धविधिसंकरसेतिन
हूंतेजोगध्यांनअगमें॥डगडगप्रतिहोतप्रगटप्रयाग
मगजिनकेपरतकेलिकुंजकुंजमगमें॥३०७॥दोहा॥ऊ
कौहितुकनहींवनेकोउकरौअनेक॥फिरतुगानगे-
लकुंभयोदुहूंदेहज्यौंयेक॥टीका॥यहदोउजनुकेहित
कोअधिकाईसखीसखीसोंकहतिहै॥कवित्त॥आजुलौं
ऐसेननदेखेकहूंउनहींपेवनैकेउनवेहितनकेपन॥औरअ

नेकऊपाइकियेंहूपेहोंहिंनऐसेसनेहसेंलैंमन॥कोउनजां
न्तुहैउहैयेनहींश्रीवृषभांनसुतामनमोहन॥वाइस
गोलकज्यौंसजनीफिरिवोकरैयेनहींजीउदुहूंतन॥३०८
प्रेमगरविता॥दोहा॥वियसौतिनुदेषतदईअपनेहिय
तेंलाल॥फिरतिसवनुमैंडहडहईउहींमरगजीमाल॥टीका
यहनाइकाकोमालापाइअतिप्रसंनभईहैसुसषीनाइकासें
कहतिहै प्रेमगरविताहोइ॥कवित्त॥सौतिकेलषतमन
भावनमयाकैदीनीउरतेंउतारिपरगटकीनीरतिहै॥
तवहीतेंरहसतिविहसतिहुलसतिविलसतिलसति
गुमानभरीअतिहै॥मनमैंमुदितफूलीगातनमैंसमाति
नाहिचलतचितौंनिअनुरागउलहतिहै॥मरगजी
मालावहीउरधरैंवालावहडहडहीआलिनुकेजुंडमैंफि
रतिहै॥३०९॥दोहा॥अपनेकरगुहिआपुहींहठिपहिरा
ईलाल॥नौलसिरीऔरैचंढीवोलसिरीकीमाल॥टी
का॥यहनाइकानेअपनेहाथवनाईकैवोलसिरीकीमाल
पहिराइतीइपाइयाकीसोभाअधिकभईसषीनाइकासें
कैहसषीसेंकहै॥कवित्त॥आपनेंहाथनिवीनिवैंफू
लवनाइगुहीमनलाइकन्हाई॥मालसुवोलसिरीकीर
सालसुगंधभरीअतिहींछविछाई॥आलिनुकेगनमें
लसिकैंहसिकैंहठिकैंप्यारैहियेपहिराई॥आपअनूप
लहीतननौवरनौलपरैअनुरागनि

तीज परव सौतिनु सजे भूषन वसन सरीर ॥ सबै मरगजे मुंह करीं उहीं मरगजे चीर ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रेमगर विता मरगजे चीर तें सरतको गर्वु भयो तातें शृंगारन कीनो सु सखी सखी सों कहति है ॥ दोहा ३०० ॥ सौतिनु हुलसि गुनगौरिको परवु साधि भूषन वसन वहु भांतिनु सुधारे हैं ॥ तिलकु तमोर वेंदी वेसरि तस्यों नास जिंहु अंजन सों आंजे चारु लोचन न्यारे हैं ॥ कहा प्रान प्यारे की रिजइवे को हौं हौंडी होड़ां चपलक टाक्षहाइ भाइ निसौंठारे हैं ॥ उहि येक राति रति मरगजे चीर है सो सवही के नीके मुंह फीके करिडारे हैं ॥ ३०१ ॥ दोहा ॥ औरे गति औरे वचन भयो वदन रंगु औरु ॥ द्यौसक तें पिय चित चढ़ी कहैं चढ़ैहैं त्योरु ॥ टीका ॥ यह नाइका जाइ कके प्रेमगर्व ताके काहूकों मनु आंनति नाहीं सु सखी सखी सों कहै नाइका हू सों कहै तौ वनैं ॥ कवित्त ॥ और रही चाल विलोकनि औरै दे खिवैं आंनन हू रंगु और है ॥ बोलति आंन हीं भांति सु मान सन्यो निधनी निधि पाइकें वौर है ॥ वूझे हू बातें न हिऊं न सरे तिन डीठि कहूं ठहरानि न ठौर है ॥ द्वैक दिना तें चढ़ी पियके चित प्यारी चढ़ां सेई रावरी त्योर है ॥ ३०२ ॥ दोहा ॥ कियो जु चिवुक उठाइकें कंपित कर भरतार ॥ टेढ़ीयै टेढ़ी फिरति टेढ़ें तिलक लि

लार॥टीका॥यहनाइकाप्रेमगरविता सखीकोवचनुस
खीसौं सनेहतें नाइकसौं सात्विकभाउभयौ॥कवित॥
तैठौ उठाइकस्यौचितचाइसौं मैरललाअतिहीं अनु
रागें॥भालल्गावतहीं अंगुरीकरकंपुभयौअतिहत
सौं पागें॥औनैं नआनैं मनेतवतैं नगनैं नकूआपने
प्रेमकेआगें॥टटियेरे ठाफिरेअगलौचनिरे ठौई टी
कौलिलारपेलागें॥३१३॥गुनगर्विता॥दोहा॥सुघ
रसौतिपियवससुनत दुलहिनि दुगुनहुलास॥ल
खीसखीतनडीठिकरिसगरवसलजहास॥टीका॥ स
यहनाइकागुनगर्विताअपनेगुनके[illegible]गुमानतेंसौ
तिकेआगमकोदुखुनाहीं मानतिप्रसंनभईसखीनी
कोरचितवतिहैसखीकोवचनुसखीसौं॥कवित॥
रूपकीरासिसखीनुसमाजमैंसोहैसिंगारसवेव्र
जनारी॥काहूनहीसुघरापनुकेतुवसौतिनेलीनो
रिझाइबिहारी॥यौंसुनिकैंअतिहींहुलसीगुनचा
तुरीकीपरमांवधिप्यारी॥लाजगुमानभरीमुसि
काइकैरंचकडीठिअलीतनढारी॥३१४॥रूपगुव
गर्विता॥दोहा॥दुसहसौतिसालेसुहियगनति
ननाहबिनाह॥धरैरूपगुनकोगरबुफिरतिअछेह

छाह ॥ टीका ॥ यह नाइका अपने रूप के अरु गुनके
रव तें और कों चित में आंनति नाहीं सु सखी सखी सों प्र
तिहै ॥ लक्षिता ॥ नाह के ब्याह में प्यारी छकि रह्यो उछाह मे
री पट भूषन ठांनति ॥ जांनति है तिह चैं अपने जिय कों
बनिता करि है न इहां नति ॥ रूप के जोवन के गुन के अ
भिमांन ते ग्यांन नहि ना मन आंनति ॥ जद्यपि सौतियां सा
हुत ऊपर मैं वह नागरि तोहु सु मांनति ॥३५॥ टीका ॥
नटिन सीस सावित भई लुटी सुखनु की मोट ॥ चुपु करि ये
चारी कैरैं सारी परी सलोट ॥ टीका ॥ यह सुरत को सारी म
रगजीरे खि सखी नाइका सों कहति है लक्षिता होइ ॥
॥ रस की उमंग भरी रंग भरी सोह तिहै अंग की सिथ
लइ तिअम जल छाई है ॥ ऊंमति झुकति अंगिराति ज
मुहाति मुसिकाति अरसाति सरसाति नैंपें निकाई है ॥
मों हैं लुटी सुख की प्रगट भई तेरें सीस क्यों तू मुकरति म
नमथ की दुहाई है ॥ अव हौं तो चुपु करि राधि ये तो करी
चारी जे तू आजु सारी में सलोट पारि आई है ॥३६॥
॥ मोहि करत कत बावरी किये दुराउ दुरैं न ॥ कहैं देत
रंग राति के रंग निचुरत से नैंन ॥ टीका ॥ यह नाइ
के नैन चुदे खि सखी कहै तो लक्षिता होइ जो नाइका कौं वि

धमांननाइकको सषीसों नाइकाकोहै तोषंडिताहोइ ॥ क ६
बि॰ ॥ सुरतेके चिंन्ह चतुरौं सौं लुकाइ तन भूषन वनाइ
सजे वसन तुरत हैं ॥ कसप्रानप्यारे के सनेह सरसौं नैतो
तिं गात अरसांनेरस ऊमगि ढुरत हैं ॥ कोहै तों सयानी मो
हि वांवरी करति अवकियें ते दुराऊ काहि कैसे के दुरत हैं ॥
प्रगट पुकारैं रंग रातिके कहत येते लोचन जुगल मा
नौ रंगनि चुरत हैं ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ लाज गरव आलस ऊम
ग भरे नैन मुसिकात ॥ रातिरमी [illegible] रति देत कहि और
पै प्रभा प्रभात ॥ टीका ॥ यह नेननु को भाउ देषि सषी ना
इक सौं कहै तो षंडिता होइ ॥ कवित्त ॥ सार सतें सरसल
सत भरे आरसे महा रंग मगन हेरे हियो हरि लेत हैं लाल
डोरे राजत हैं और ओप साजत हैं फूले मुसिकात हैं नि
काई कै लिकेत हैं ॥ मैनकी ऊमंग भरे जोबन के रंग भरे ला
जकी तरंग भरे गरूर वस मते हैं ॥ सैन सुष पागे [illegible] नि
सि जागे दूग तेरे वात राति रमी रति कै प्रभात कहे देत
हैं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ कोरि जतन कीजे तऊ नागरि नेह दुरै
न ॥ कहै देत चित चीकनें नई रुषाई नैन ॥ टीका ॥ यह नै
न देषि सषी नाइका सौं कहति है लछिता होइ ॥ कवित्त ॥
तैं मनमोहन सौं मिल्यौ मनु मेत वहीं सजनी लवि
पाई ॥ वूझति तोहि हियो हितु मानि कै मोसौं चुराव
ति तू चतुराई ॥ कोरि ऊपाइ करै कि निनागरि नेह की

२ ॥ यह परस्पर मानु सखी को वचन सखी सौं ॥
मानतु कौंनु हमारी कहौ जे हैं दोउ नु मांझ भरे रिस रूप
ई दोउ परे अति तेज भरे तहां क्यों न वढै हित को सरसाई
को घटि है चिरु जीवा करो यह येक सी जोरी विरंचि वनाई
है वितवै वृषभांनसुता इतै यह लधारी के वीर कन्हाई
दोउ अधिकाई भरे ये के गोंग हिराइ ॥ कौंन मनावै को
मेनै मानें मतु ठहराइ ॥ यह परस्पर मानु है दोउ
अधिकाई भरे सुनाइ का मानवती ॥ नाइ कुरूप मानी अ
यवानाइ कैंसो मानु देखिवे को गोंरै ॥ सखी को वचन सखी
सौं ॥ अरु जौ दोउ नुन्यास कोहै हि तो यों ही काहे वो संभव
॥ आजु चली रसही रस मैं रस वातहुं कें निसु को
कहि आवे ॥ लै अपनो अपनौ रस मैं अरुझायो हियो गुव
को सुरझावे ॥ दोउ परे अधिकाई भरे गरे ये कहौ गौं को
उ भेदु न पावै ॥ कौंन मनावै मनै कहि को मन माको
हूं नु कौ मानु हौ भावै ॥ ३५ ॥
मांनु करति वरजति नहीं उलटि दिवावति सौं ह
करौ रिसौं हौं जांहि गौ सहज हंसौंहीं भौंह ॥ य
ह मानु दिढावति है सु मानु छुडाइवो ई पूयो जनु है स
खी को वचनु नाइका सौं रूपै वाकस्यो रूप
सुप नैन चढाइ कै वैन कहै जिन मानुक स्यो सुभली
ते करो हौं न मनै करो अरे सैं सौ
ऊँन वौऊ नसरै ति सुर वे न है

हृगीकेसरि सौं हौ सुहागिलहांसी भरी जु सुभाइ भीनों
है ॥ अथ ॥ दोहा ॥ रस के से रुष ससि मुषी हंसि हंसि वो
लति वैन ॥ गूढ मानु की है क्यों दुरै भये वूढ रंग नैन ॥ २
टीका ॥ यह नायका को धीरा को मानु सुसषी नाइका की
नाइका सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ ऊपर को रस को स
क स्यो हसु भाउ किये हित के सरसातैं ॥ सूधे चितै रसि
बोलति भामिनि वैन कटै तु अमीठ सुधा तें ॥ नेह कीये
न जतायसवे कहि है स्वास रवाइ वाते हवे तातैं ॥ मानु कि
ये को दुरै कहि क्यों जु नजीक के रंग नयेह गरातैं ॥ ३
हा ॥ चितवनि [illegible] नु [illegible] दिनु [illegible]
तु जनायो [illegible]
नाइका [illegible]
प्रवीन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नन यह मानपरिहास है नाइका प्रौढा स
कौ वचनु सखी सों प्रीतम की प्रीति कौ पु
तिलखिवे कौं प्रानप्यारी कहू कीनो परिहासु कै
नुठानि कैहूं क विक्रम सउर उपररू साई मे खिव
नुविदो रिवेठी धरि कैं कपोल पानि आपनी कली सु
हंसो जोर तिनरु सुमुख वें नचन न भाइवे कौ ज्यों हो
ज्यों हिय गही पानि भृकुटी सतर कौ नीक पट सो तिन
थे पेसो हैं न कर तिहू मसर जह सौंहैं जानि ३४
मनु न मनावन कौं कोरे देत रुठाइ रुठाइ कौं
तिगल लागे प्यौ पिया खिजिहू रिजवति जाइ
यह नाइका कौ मानु रेखिवे कौ प्रयोजनु है सु मानु छूटत
जानतु है तब ही फेरि रुठाई देतु है सु सखी सखी सों कह
तिहै रोसभरी अखियानि हूं की चलो कनि
माजन स्यौ रसु भारी या ही तैं मान हूं कौ रुदु दे खिवे की
नंदनंद हियें रुचि धारी होति मनौ ही प्रीया जब होत व
सै करि देतु रुसाइ विहारी कौतिक लागे पो ईहै
र सबै खिजेहूं कैं रिजवति राधिका प्यारी ३५
ताही निसि तैं ना मिटेगो मान कलह कौ मूलु भले
धारे पांहुने कै गुट हर को फूल यह नाइ
कापर कियाउपपति कौ विरह दुराइवे कौ पति सौं मानु
कीनो सु सखी सखी सों कहति है जाहीरज

नीकें घरवसें औनि घरवसे जानेकौं नुं ... कछु मनु वैसें
हटिनायौ है॥ वहीरजनी तें अज्यौं मिटैनो नअने सौं मनु
नवींयचिंहारीं काहूं भरमु न पायौ है॥ कौं हं गवि कवसें
नीरूठनौ सुन्यौं न देख्यौ जैसो ऊहिं लहिहारी ऊरमें
डठायौ है॥ पाहुने पधारे आछे फूलु गुडहर कौ कमल
हकौ मूलु वाव गर वगरायौ है॥ ३१॥ दोहा॥ मोहूसें
वातनु लगे लगी जीभ जिहि नांइ॥ सोई लै उर लाइ ये ला
ल्ला गीयतु पांइ॥ टीका॥ यह मध्यम मानु नाइका सौं वा
ते भरत जानाइ का सौं आसक्त होइ नाइक ने ताही कौ ना
मुल्लीनो सुनाइ कौ नाइक सौं कहति है॥ दोहा॥ केते
रावी गोइ होइ प्रगट हिये कौ भाऊ जासौं रंग मगि भ
उरलो अनुरागि कें॥ ऊपरी रसिक रस प्रीति कौ प्र
न न वाकी भलै सुधि कीनी मोसौं वात निहूं मला
गिकें॥ कसपांन प्यारे पूरी प्रीति कौ धरमु ये हे पायौ
अवमर मुभर मु गयौ भागि कें॥ पारनु परते हरिवा
ही ऊर लैये जाहीर भली कौ नांमु रसलो रसनामें पा
गिकें॥ ३२॥ दोहा॥ नेह कौ हैन कराक सो तासौं नंद
किसोर॥ वढ वोलो कतहोति वलि वडे दृगनि के जोर॥
टीका॥ यह मनाइवो सखी कौ वचन नाइकासौं॥ ...
सांचो काहि मोसों जूहे काहे

होमनमोहनकन्हाईरी ॥ क्यौं तूं वडो वोलन्ने सो वोली
गुमानभरयौ है तो रिसरासि तें कहां तें गहि पाईरी ॥ स
प्रांनप्यारो अतिहि तुवें मनावतु है करि मनुहारि वहु
है तें मेवलाईरी ॥ मानिकलो मेरो वलिजउलटुनकरिजौ
तें है पाई वडो वडो अ्रांगिछवि छाईरी ॥ ३४ ॥ वि
धिविधिकों निवरेंरे नहीं परेहूं पांन्नु ॥ चितै कितैं तैं लपले
ईतो इतै तन मांनु ॥ दोहा ॥ यह मनाइवो सखीको वचनु
इका सों ॥ दोहा ॥ पाइ परे मनमोहननूं वहु भांति हियेर
समाइ भरे तो ॥ प्रीतिकी चोंप चटाइ सखी निकहीं समुजा
विने वारि के तो ॥ लोचन तेरे तउ न लचे अनखाइ नचै
तिरोसर चेतो ॥ नेंका चितै मगनेनि कितै तें पस्यो भौरि
मांनु इतै तन येतो ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ हसि हंसाइ उर लाइ औ
हि नरसों हैं वैन ॥ जकित थकित है पकिरहे तकी तिल
हैं लैन ॥ दोहा ॥ यह मांनु परिहासनाइकको विप्रमान
३ सखी नाइकासों कहति है जो नाइकाको अपराधु रीबें
है तो हूं संभवे ॥ सवैया ॥ मानुकियो है इते मनावे
प्यारो पांइ गहि अैसे परिहास को जतन कहा कीजिये ॥ रसि
करसालु तेरे लोचन तिलोकि चाहि चकतें करसों
है कहौ कीजिये ॥ हाहा ताहि सोहैं अवसूधी करि मैंहे

कहिनरुवैंहैंलालुछातीलाइलीजियै॥हंसियेहंसाईयै
रीसुवसरसाईयैरीरसुवरसाइदुखुसोतिनुकोंदीजि
यै॥७५॥दोहा॥यैरीयहतेरीदईक्योंहूंप्रकतिनजाइ॥
नेहभरेहियराखियेंतूरुखियेलखाइ॥टीका॥यहमना
इवोसखीकोवचननाइकासैं॥कवित्त॥कौंनपरी
प्रकतिछुटायैंहूंनछूटेक्योंहू ज्योंज्योंकीजेउनीतैंा
त्योंहूंनोपेखियतिहै॥कत्यंप्रानप्यारेकोदुहाई तेरीदे
खैंगतिमेरीमतिसोचसौंसनीविसेखियतिहै॥जद
पिसनेहभरेउरमेंवसाईप्यारेप्रीतिसरसाईअरुना
ईलेखियतिहै॥तऊतियभौंहनुमें वैंननुमेंनैननु
मेतेरेअंगअंगमेरुखाईदेखियतिहै॥७६॥दोहा॥
क्योंहूंसहवातनलगेथाकेभेदउपाइ॥हठदुर्गगढ़ुगढ़
वैसुचलिलीजेसुरंगलगाइ॥टीका॥यहगुरमांनुहैंस
षीनाइकसैंाकहतिहैकैवाकोमांनुतुम्हारेचलैंछूटैगो
सखीकोवचनुनाइकसैं॥कवित्त॥आजुसजोहठ
कैगरुप्यारीनेदेखतधीरजकोंनकोधीजे॥कौनहूंभां
तिलगेसहवातनभेदउपाइथकेमतिछीजे॥लोचदू
तनकेंामिलैरह॥१म ॰ ॰ ७ १ल
१५

नुहींचलियैं वलिजांऊँसुरंगलगाइलगाइनुजोलीः
नुहींचलियैं वलिजांऊँसुरंगलगाइलगाइनुजोलीप
जै ३३७ अनरसहूं रसपाईयतुरसिकरसीलीप
स जैसैंसांठकीगठिनगांठैनरीमिठास यह
नबतीकीसोभासखीलाइकसोंकहतिहैपूयोजनुहैवे
नाइकुचलेतोमांनुकूटे मांनिनीतिहारीमे
नमोहननिहारीकहूमोपेलकसोपरनुसोभाकोविल
सुहै नासिकासकोरिमुहमोरिभ्रकुटीगनषिवेठीले
३ चलैमांऊअरनाईकोपूकासुहै रसिकरसालबारसी
लीकीविलोकोढविग्रनरसहूमेच्चेसोरसकोनिरास
है कैहेकविकसजैसैसांठकीसरसरीतिगांठिहूगवि
नतउपेयतुमिठासुहै ३३८ हमहरीकेवे
हापाइनुपास्योप्यारु लेहिकहाअजहूंकियेंतरु
रीत्योरु यहअरितिगुरमांनुहेंसवीकोव
नाइकासों चंदूकचूरसीचारुकवाग्र
३ लतीमल्लीफूलेलीसुघरौंनिहै हाहोकहारिरहीरु
नीवहुभांतिनिहारिमलैवकीभाइनि जीवन
सगरेब्रजकोहरिप्रीतमसोउपस्योठौरपाइ
लेहिकहाअजहूंवारितेरसोंत्योरुतरैलोनि
कुराइनि ३३९ सोहैंहूहेस्योनतैंकोम

हूसोंह॥ये हे क्यों वैठी किये ऐंठी गैंठी भौंह॥टीका॥य
हनाइका मानवती सखी को वचनु नाइका सौं॥कवित्त॥
कैती मनु हारि करि रहा स्यों न देखा लु व्रज वनिता निहार
हीति जाके नैनक चाहे तें॥ हों तौ तूं सयांनी परि कहा चित
धांनी ये ते रति के समाज विनु काज अवगाहे तें॥ सोंहहें
रवे कौं हमके तौ हाई सौंहें तउ तेरौ मनु ललच्यो न रस
के उमाहे तें॥ कियो कहा चाहति है सोई क्यों न कहै अब
ऐंठी गैंठी भौंहें करि वैठी अव काहे तें॥३४०॥दोहा॥नि
रदई नेहु नयो निरखि भयो जगत भय भीतु॥यह न कहूं
अव लौं सुनी मारि मारियतु मीतु॥टीका॥यह मांन
विरह सखी को वचनु नाइका सौं नाइका के पठई सखी
है जो परकिया नाइका हू कहिये तो न हिये॥कवित्त॥ये
सो अधीन भयो मन मोहनु तो विनु नैकनु अंग सम्हा
रहि॥ता हि इतौ तरसावति वावरी क्यौं न करै मिलिकुं
ज विहारहि॥तेरो नयो निरदैं हितु है रिउ स्यो जगु हौं हू
भरी भय भार हि॥ आजु लौं ऐसी सुनी न कहूं गति आपु
मरै अरु मीत कौं मारहि॥३४१॥[illegible]
हठु न हठीली करि सकै यह पावस रितु पार॥ आंन गांठि
ज्यौं घुटति त्यौं मांन गांठि छुटि जाइ॥टी.

नमोचनप्रसंगविधंससखीकोवचनसखीसो॥
रंभिनीचपलगतिसो॥ स्यामघनहीसोंमिलिविहर
रतिद्युतिसोभासरसातिहै॥ हूंमनुसोंलहलहीललि
तलतावटिरहीसवहीके॥ उरप्रीति॥ ग्रीषको
तिहै॥ कसोंधोरुठीलीको॥ रूठोनठांनिसकेमदन
मसरनिसोंढातीअकुलातिहै॥ देखोरितुपावसवेनल
कौनिकाईमाई ग्रानगांठिछुटेमानगांठिछुटिजातिहै॥
॥ सतरभोंहरूखेवचनकरतिकठिनमनुनीठि
॥ यहनाय
हाकरैंद्धजातिहरिहेरिहसोंहेडीठि॥
प्रौढाउत्तमासखीसिखावतिहैकितूंमांनुकरियाबेनार
देवेमानुरहतुनाहींनाइकाकोवचनुसखीसों॥
तेरोकहोकरिरूसनोठांनतिहोरुखुरूखीकैतांन
नोहैं॥ बिकठोरकरौंमनुहूमुखहूतेवखांनतिहै
शेहैं॥ कहारसुमेरोग्रलोलचेंलालचीजोग्रप
सहंतविगोंहैं॥ केसोकरौंमनमोहनकोमुखदेख
चनहोतहैसोंहै॥ ३४३॥ तोहीकोछुटिमा
सतहींवृजराज॥ रहीघरिकनोमांनुधरिमानुकौ
ज॥ यहमानुमोचनुसखीकोवचनुसखीसों॥
केरूसनेकीद्युतिसोभाकहाकहोंपांनिकपोलधर
लिनुकौविनतीनसुनेंनटरीरिसराधिकाकेहि

छूटिगई सुतो देष्यो हैं मधुसूरति कांन्ह सुनाई मेरे कौ॥ मा
नुहीं सौ कर मांन रही वह लाज घरी कलैं मांनु करे कौ॥ ३४॥
दोहा॥ चलौ चलैं छुटि जाइगो हुरावरे संकोच॥ परेच
डाये होत अब आये लोचन लोच॥ टीका॥ सह मांनु छुड
ये वेकौ सषी को प्रयोजनु नाइका कौं लै जाइवे कौ है सषी को
वचनु नाइका सौं॥ कवित्त॥ जौनैं कौ कालि तिहारी पि वा
यारी कहा जिय जांनि महा रिस ठांनी॥ केतौ मैं वाते मनाइक
री मनुहारि पै येकन मांनी॥ क्यों हूं कै जो नटरे दृग मोह क
छू जु नई जु हुती अति तांनी॥ लाल चलौ अब लौ कितु मैं
तुहीं कहति है आ
छुटि जाइगो मांनु अबे हम जांनी॥ ३५॥ दोहा॥
पुहं समझति सेव सयानु॥ लषि मोहन मनु जो रहे तो म
नु राषौं मानु॥ टीका॥ यह नाइका प्रौढा सषी कहति है कि तू मा
नु करि सु नाइका सषी सौं कहति है॥ कवित्त॥ मानु कौ ये
रमनी जनके वस पैत महा तुम तौ यह तेरो॥ हौं हूं ये है अपनै
चित आंनति जांनति हौं करि सांनु घनेरो॥ तौ करौं मानु
री मोहन कौं लषि जो सषि हाथ रहै मन मेरो॥ रूसिवौ जो
मैं विचारति हौं पै न हाकरौं त्यों सुनहां नु तरेरो॥ ३६॥ दोहा॥
मो हि लजावत निलज ये हुलसि मिलैं सव गात॥ भांनउदै की
ओस लौं मांन न जांन्यौं जात॥ टीका॥ यह नाइका प्रौढा मा

विकससवैधकेगतिवतुकारैनैकनघटतुलौत्याद
ढहोतजातुहै ३५१ कारतुजातुजेतीकरि
वृद्धि रससरितासोतु आलवालउरप्रेमतसौ
तोतितोदूटहोतु यहसनेहकेचुगमेदूठौ
नाइकाकोचयवानाइकाकोवचनुसखीसोंसखीना
इशानाइकहूसोंकहै आलवालउरमै
नोजवयोनेहबीजुतातैभयोआलीप्रेमअंकुरउ
है सुरतिसलिलसौंचयोयाहीतेउमगिउरफूल
फलपुगटैनोविरहुगातपातुहै कहैकविकसज्यों
जैसोंउमगिप्रवलपूरकारतकटनिरससरिताओं
तुहै नैकनडिगतुवाकोत्यौंही ।७ ।७०
रतुजेरतुबरोईडिटहोतुहै ३५२ तउप्रकासु
रसुघरउरसगुनोदीपकदेहु यह १४
भरियोजितासनेहु नाइकहूसोंकहै
सखीनाइकासोंकहै
पिचारुगहैंचिकनाईसुटारटस्यो जोतिज
होउ स्वकहै वहुमंडितकैगुनजोगयका
निसोउ यह वातप्रसिद्ध सवैजगायकौ
तितिनाहतदोउ नेहुभेरविनुदीपकौ
तैसोकोउ ३५३

तितुरंगकौ करि करि अमित उठांन॥ गोइ सिकौ हैं जोति
खेलु पेम चौगांन॥ टीका॥ यह सखी नाइका कौं सनेह के
इढता बतावति है अरु प्रयौ जनु नाइका सैं मिलापु कर
यौ चाहति है सखी कौ वचनु नाइका सैं॥ कवित्त॥ सर
सतुरंगु गति सुमल विमल चितु ताहि चाहत जमे लैं चु
र पिचलाइवौ॥ लोक लाज बाग साधि अनुराग कौ रि
इठ अमित उठांव नीकुं करि करि धाइवौ॥ कैहैं कवि न
स्त्र मिलाप घरी हाथ गहि गोइ निरवारि तव जोतिप
र पाइवौ॥ खेलिवौ कठिन यह पेम चवगांन खेलु चितु
रखिलार मैं नवपहिरि जाइवौ॥ ३५४॥ प्रीतिको उ
पालम्भी॥ दोहा॥ जाति मरी विछुरी घरी जलसफरी
की रीति॥ नित नित होति घरी घरी अरी जरी यह प्रीति॥
टीका॥ यह नाइका परकिया है प्रौढा नाइका के वियोग
तें बरी व्याकुल है अरु प्रीति वढती है सु सखी सौं कहति
है॥ कवित्त॥ मैंन अघात न हौं निरखैं निरखैं चित चैं
न परै न घरी है॥ व्याकुल ह्वै मुरझाइ परी तलफै नेहुलौं
नु नीरमनौ सफरी है॥ मैंन मरूर वाया चित होंनि
हौं नित होति घरी ए घरी है॥ जाति मरी छिन मैं विछु
यह प्रीति जरी गरी वौं नेवरी है॥ ३५५॥ दोहा॥ जो
निरमोही लग्यो मोही यह सुभाउ॥ अनआगें आवै
ग्राकैं आवति ग्राउ॥ टीका॥ यह ना

साजविहारीहिसोकितेयोंकितेतैंइतन्याइविहारो ३५॥
छनकुचलतिठहु वति
छनकुभुजपीतमगलडारि चढीअटादेखतिघटावि
मुदुहासीनारि यहसंजोगश्रंगारनाइका
स्वाधीनपतिका सखीकोवचनु सखीसों मे
नभुजामनमोहनकंठचलैठहु कैंऊमगेसुघुमारी ता
विपेकविकसकैंघनदांमिनिकोरिकैंर बलिहारी
हुंदनसेतनवांनिकसैंवनीसारीसुरंगलसेलहकारी
मारीघटाहुविसौअवलोकतिसांवनसांजअटांचढि
प्यारी ३६ ॥ उनिहाईसवटोलमैरहीजुसोति
कहाइ सुतैंकैंचिप्योआपुत्योंकरीअदोखिलन्याइ
यहनाइकास्वाधीनपतिकासखीकोवचनुनाइका
सों रातिदिनाहुकियाहीकैंधांमपगेंप्रेरसमैं
होतोसुघराई पासपरोससवेकैंतौंयहवीसविसेतियहै
उनिहाई तूंजवतेंगुनरूपकीरासिसुसौलसुहागिल
गौंनहिआई प्रांनपतोअपनेवसकैंतेंमलीकीनीसो
तिकीहोतिवहाई ३७ ॥ तोपरवारोंउरवसी
सुनिराधिकेसुजांन तूंमोहनकैंउरवसीह्वैउरवसी
समांन यहनाइकास्वाधीनपतिकासखी-
कोवचनुनाइकासो रूपकोउजारीवृष

मांनकीदुलारीराधेतेरीयेनिकाईदेषिसोतिसवहारी
हैं॥तेरेगुनगाइवेकौंतेरईरिझाइवेकौंतेरीप्रीतिहीकौ
पनुगह्यौगिरधारीहै॥तेरौनामरटेध्यांनुतेरोईहिये
मैधरैतेरेरसवसऊठिगाइहूविसारीहै॥तुहीउरव
सीहैकैउरवसीमोहनकेतेरीछविपरकोटिउरव
सीवारीहै॥३६॥दोहा॥तूंमोहनमनगड़िरहीगाढ़ी
गड़निगुवालि॥उठतिसदांनटसाललौंसौतिनुके
उरसालि॥टीका॥यहस्वाधीनपतिकासषी
कौवचनईनौकासौं॥कवित्त॥वीनधरीकटिपांन
सौपेटुकेतेरउठेकुचकोकिलवैनी॥केवुसौकंठक
लाधरसौमुषमोरकटाछनुकीगतिपैनी॥तूंमैंमोह
नकेमनग्वालिरहीगड़िकैलिकलासुवैदैनी॥सौति
नुकेउरमाझसदांनटसालज्यौंसालतिहैमृगनै
नी॥३७॥दोहा॥जुविजुविजपकौहैंपलनिझिरि
झिरिजुरिजमुहाइ॥बौंदिपियागमनीदमिसिरांसव
ग्लौंउठाइ॥टीका॥यहनाइकापरकियावासकसि
ज्यासषीकौवचनसषीसौक्रियाविदग्धासंभवै॥क
वित्त॥जांनिसमैपियआगमकोचतुराईकरीचितचा
हकेचाइतें॥सैकरिआधिकमूंदिकैआंषिव
रीपलकैंचपलाइकें॥जोरिमु॰ तणु॰॰

रीनी षरी अर साइ जंनाइकै बैठी हुती ठि गआइ अ
लीसु दई सब अ ठ महीं सौं कढाइ कै ३१० नंभ
लाली चाली निसां चट काली धुनि कीन रीतपाली
याली अनत आयेबनमाली क यह नाइका
उतकं ठितापर किया नाइकानो वचनु सषी सौं
याजु मनमोहन को मगु निरषत मेरे पलकंन
लागें प्रीति उरतें न हाली है भई बनलाली देषि पीरी
परीन षतालीसु निरषत धुनि चिटकाली आली निसि
चाली है काहूं रवनी को नाक्षि मट गज चालि ता सौं जं
निय तिरी झि बनमाली रतिपाली है कहा कहैं आली
रतमदन विपति घाली षाली सेज भई जैसी ख़ाली वि
कराली है ३११ निसि अंधियारी मैं नील पटु
पहिरि चली पियगेह कहो दुराई क्यों दुरै दीपसिषासी
देह यह नाइका कृष्णाअभिसारिका सषी की
सिक्षा अंग दीप्ति को अधिक्य कारी निसांकी
अंधारी महां असतें सीये स्यांम घटा रुकी आई प्यारी तू
कुंज विहारी पै जाति सजी तन में चकसारी सुहाई घूंघट
में ऋवचंद दुराइ कहैं कवि त्रसकरी चतुराई देह की दीप
तिदीपसिषासी कहौ यह कैसें दुरै गी दुराई ३१२
अरी षरी सट पट परी विधु आधे मग हेरि संग
लगे मधुपनि लई भागनु गली अंधेरि यह

कीवविप्रीतिपरागभरेभरमारी ३७

हियनदु पदैनकोंकहिकहिवचनयुत्तीक सवै

रसोलपैलालमहावरलीक

उन्नधीराखंडितानाइकाकोवचनुनाइकसों यहनाइ

यातुमयाकरिमेरैंपधारेलसौछविरेनिविरह

होरैं क्योंकहियेदुयदैनकोंवैनवनाइवनाइ

हौ हहिहोरैं धूंमतलोचनमोदभरेऊघरेजरमेन

चिन्हतिहोरैं गैोलकोंऊरसोलछिलालयला

महावरलोकनिहोरैं

ति परीकरोखरीभयानवेस नागिकेलागीहुगनु

गवेलिरसरेस यहनाइकापेरोढाअधीरा

खंडितानाइकाकोवचननाइकसों याजु

मयाकरिमेरैंपधारेसुनीवडभागिनिकीसुघरीहै

प्रीतमयेपटकोरसोंपोछिपरीकरीमामतिहेरिहरी

हे लागतिहेममनेननुकोंयहिभांमिनिसोभय

मूरिभरीहै वेलिसमेत्रहिवेलिकेरंगकीरेखनि

मेयनिपेऊघरीहै ३८१ पत्तनुपीकयं

तनुत्रधरधरैंमहाउरभाल याजुमिलेसुभलीक

रीभलेवनैहोलाल॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाअधी
रा खंडितानाइकाकोवचननाइकसों॥कवित्त॥पी
कपगीपलकैंछलकैंछविनैननुमैंगुरुनाईधरीहै॥
अंजनुचारुपस्योअधरांनिलिलारमहाउरछाप
परीहै॥लालविनागुनमालहियेंमुसिकांनिछ
नेकप्रभानिभरीहै॥नीकेवनेइहिवांनिकसांगुम
याकैमिलेसुभलीयेकरीहै॥३८५॥दोहा॥जिहिमां
मिनिभूषनरच्योचरनमहाउरभाल॥जहींमनोअं
खियांरगीओवहुअरगलाल॥टीका॥यहनाइका
प्रौढाअधीराखंडितानाइकाकोवचनुनाइकसों॥क
वित्त॥वाहीकेनैंनकोकाजरओठपेलीकोवस्योजि
निपोंछिकैंसोउ॥वाहीकेपाइकोजावकरंगुलिलारम
हाछविदेतहैसोउ॥ऐसोवनाइसिंगारुकस्योजिहिं
हेरहलालविलूनकोउ॥जांनतलालरंगीऊनिहीं
अंखियांअधरानिकेरंगमेंदोउ॥३८६॥दोहा॥वाहीकी
चितचटपटीधरतअटपटेपांइ॥लपटवुझावतविरह
कीकपटभरेउरआइ॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाधीरा
अधीरानाइकाकोवचननाइकसों॥कवि

तव सेकौ हैं तौ विलगु न मांनति हैं सवर संवसकियौ
चौहेव हु नाइकै ॥ ताके भाग जागे जाके से जानि सिजाग
मेरे भोरम यै आये हितु हिये कौ जनाइकै ॥ जो कियतु रा
ही की लगी है चित चरपटी अटपेरे चरन परत डगम
गाइकै ॥ लपटवु जावत हौ विरह हुतासन कौ कपटमे
रे है प्रांन प्यारे हूं तन्याइकै ॥ ३८४ ॥ दोहा ॥ गहकि गांस
औरे गहे रहे अधकहे वैन ॥ देखि खिसौहैं पिय नयनकि
ये रिसौहैं नैन ॥ टीका ॥ यह नाइका षंडिता नाइक सु
रत के चिंन्ह दुराइके आवे आयो यह बात कर न लागी
व तरात मे नाइक के नेन लत जो नैं भये सषीको वच
न सषी सों ॥ कवित्त ॥ आवत प्रांनपति हैं विलोकि
सुधासम नेह कौ डीठि सौं सें रे धाइ कैं आगें क्रै आइ
लिये हिय मै ऊमगे सुष पुंज घनेरे ॥ आधसे वैन कहे
और रहे मुष गांस औ रकौ पकरे ॥ रे लाल के नैन वि
सात विलोकि रिसाइ कै राषत हैं दृग फेरे ॥ ३८५ ॥
तेह तरैरौ त्यौरु करि कत करियत दृग लोल
लीक नहीं यह पीक की श्रुति मनि झलक कपो
ल ॥ टीका ॥ यह नाइका सापराध जांनि नाइ

क्का नेत्रचंचलकरतिहै सुनाइककी सखीनाइका
के चित्तको भ्रमुनिवारनकरतिहै सखीकोवचनु
नाइकासौंजोनाइकासखीसौंकहैतोभूतसुरतगु
प्तापरकिया होइ॥कवित्त॥आजुलखियतिकछू
औरैभांतितेरीगतिआननपैउमगिललाईल
लकतिहै॥भ्रकुटीकुटिलयातिनेहसौंतनेनीने
ईनैननुमैरसकीतरंगछलकतिहै॥कैहैकवि
ञ्चसयहधावौरियहांतोकरिपीकलीकजांनि
तूंजुवेलवलकतिहै॥ललितकपोलपरनीकैं
कैंविलोकिसुकृतिभूखनकोमनिकीजलगज
लकतिहै॥उल्धारोहा॥पावकुसौनैननुलगतु
जावकुलागेभाल॥मुकरहोउगेनेकमेमुकर
विलोकोलाल॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाअधीर
खंडितानाइकाकोवचनुनाइकसौं॥कवित्त॥नी
केरसनीकेवसहैकैरसकेलिकीनीवाहीसंगंधन्नग
मह विरहीरसालो॥ ॥ भानु १

ऐ चिंन्ह ऐ जनु अधर दिये बिनु गुन हियें माल ।।
पावकु सो लगतु मम नेंननु कों करूपा न पा
रे लखो जा वकु ति लकु नाल ।। केसौ आजु रा
जति सार सें ते सर सये आर सम गलयों बिया
रसी लें देख्यौ लाल ।। ३५ ।। दोहा ।। आये आपु न
ली करी मेंटन मान मरोर ।। फूं दूरि कें स्यो यह
देखियतु छल्या छिगुनी यों छोर ।। टीका ।। यह ख
डिता नाइका कौ सखी नाइक सों कहति है ।। कवित्त
।। आपु कृपा करि आये भली करी आजु सुबांनि
कै मोमन मोहे ।। देखत रावरी मोहनी मूरति मन
मरोर धरें कर कोरे ।। काहू छवीली को छोटी छल्ला
यह छोर छिगुनी कै छाजत जो है ।। देखि रिसा
इ गी दूरि करौ वह जानत हों मन मांझ जो है ।।
दोहा ।। लाल लला हि पाय दुरें चोरी सौंह करें न ।। सी
स चढे पनिहें प्रगट कहैं पुकारें नैन ।। टीका ।। य
ह नाइका प्रौढा अधीरा खंडिता नाइका कौ वच
नु नाइक सों ।। कवित्त ।। आये कु ली दे जभातन

सो ॥कवित्त॥ आयेहो मेरें मयाकरि मोहनराज नि
तिमूरति रंगभरी है ॥ पंकजनैनेनी केपानिकी आ
जु हियें नसमेर यभलौ कघरी है ॥ जोनेजगमें विरा
जतियों द्विजराजतिमोमन्निहरि हरीहे ॥ नीर
मेंनीलमनीकोसिंगातनि लाइ दुकला मनोत
पेधरी है ॥३४१॥दोहा॥ नयरमासोहेनई यलसो
हैसबगात ॥ सोहे होतनजेनयेतु मसों हवातघा
त ॥दोहा॥ यहनाइकाप्रोढाअधीरा खंडितानाँ
इकाकौवचनुनाइकसों ॥कवित्त॥ हरिजानि
परीहमहूंपेमयापगधारेइ तेरतिके लिवियेअ
नुमतेसवकेसुखदाइकहोसवहीकोवनेसुख
पुंजदियें ॥ मुकरोजिनियप्रगटेलखियेंअल
गीरटकौ नसरेयुसियें ॥ हगसोंहैनहोतसखी
चनितें यवकाहकोसोहइतौकरियें ॥३४२॥दो
हा ॥ तरुनकोकनवदवरनवरमयेअरुनतिसिजा
गि ॥ वाहीकेअनुरागहगरहेमनोअनुरागि ॥दोहा
यहनाइकाप्रोढाअधीराखंडितानाइकाँवचननाइ
को

सकी जित कहिं पांन प्यारे प्रात प्रीति के पधारे मेरे दै
...कौ विलि। कै सप्रान प्यारे प्रात प्रीति कें पधारे मेरें दे
मैं नमूरति विरहगयो भागिकैं ॥ मेरे गजे वागें रस पगे
रटपटी पागें आरस सुमन अगार है अ लागिकैं ॥ राव
लसत अति लोचन ललित भये कौन नरवरन अ
रुवनि सिजागिकैं ॥ मेरे जांन प्रान पति लाहि प्रांन
प्यारी कैं परम अनुराग मेरे हैं अनुरागिकैं ॥ ३८३॥
दोहा ॥ सो तुसंगु समांन सो यो है जो सबु लोगु ॥ पी
न पीक अधरनु वने काजर नैननु जोगु ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रौढा षंडिता नाइका कौ वचनु नाइक सैं ॥ गोपु
त ॥ ग्रंथनि मैं यह वात प्रमांन यौ चलि आयो मतो सबही
कौ ॥ जैसे कौ तैसो ई जोगु जुरै जव हो तु महासुखदाइक
हीकौ ॥ जो विपरीति विलोकिये संगु कुठौरु तहां रगु ला
गतु फीकौ ॥ पांन की पीक वने पिय ओठनु आंखिनि हैं ल
गै काजर नीकौ ॥ ३८४॥ दोहा ॥ प्रांन प्रिया हिय मैं वसी
नख रेखा ससि भाल ॥ भलो दिखायो आंनि यह हरि
हर रूप रसाल ॥ टीका ॥ यह प्रौढा धीराधीरा षंडि
ता है नाइका कौ वचनु नाइक सैं ॥ क

प्रेमसौं प्रान प्रिया हिलसाउ हिये हियरो हुलसायो
भाल नई अनखेर खवि रजतिसो इम यों कुलसेद
विकासो लोचनराग सुरंजो गुन रंजनु घूमते नेन
तमोगुन पायो प्रीतम प्रात हीत्यों निमलो हरिको
हरकोधीर रपुरिखायो ॥ ५ ॥

दोहा ॥ सांन चले वलिराव रे चतुराई को चाल सन
माह ये यिनविन नेट तग्रन मवद्यावत लाल ॥ लिखा
ग्रह लाइका पोढ ग्रधीरा यंडिता लाइ का कौवचन लाइ
कसौं ॥ कवित्त ॥ सांनचले कछु रावरी ल्यान चलावत
जे चतुराई की चाल ॥ कातीन ख्यद तपीक कपोल घ
रे ग्वतिरंगु मसाऊर भाल ॥ घात इते परसौं हगुपाल
हियें उपजावत क्यौ रिसज्वाल ॥ भाग वडे उहि भां
मिनि भाल हिये उपटी जिहि भेट न माल ॥ ६ ॥
ऐसी ये जांनी पर तिऊ गाउ जरे मांह ॥ मृगनै

नीलपरतिजुहियेवेंनीऊपरीवांह॥टीका॥यहनाइकी
प्रोटाअधीराखंडितानाइकाकोवचननाइकसोनाइकीके
विद्यमानससीसोंकहे॥कवित्त॥काहेकोंकरतचतुरा
ईकेचरित्रलालसांचभरीसूरतिप्रगटदेषियतिहै॥सों
हेंभोरेजिनिकरोनेननेकचिनिसोंहेंकरोसोंहनीसी
सोभाअंगअंगलेषियतिहै॥कहाप्रानप्यारेकुचकुंकु
मकीछापरहीछातीपेउघरियहअवरेषियतिहै॥मृग
नैनीलपटतऊपरीवयेपेवेंनीऊजरेऊंगामेंअरग
टरेषियतिहै॥७७॥दोहा॥नकरुनडरुसवुजगुक
रतुकतवेकाजलजात॥सोंहेंकीजेनेनजोसांचोसोंहें
वात॥टीका॥यहनाइकाप्रोटाधीराअधीरानाइकाकोव
चननाइकसो॥कवित्त॥मोहितोलागतनीकेमनमोह
तुमआयेप्रभातप्रभासरसोंहे॥जोकरियेतोहियेडरियेवि
नुकीयेकितेडरियेडरसों॥क्योंविनुकाजसकोचभरे
ऊरकाहेकोंकीजतुजैनलजोहैं॥जोतुमसांचियेसों
हकरोहरितोइतक्योंनकरोमुषसोंहैं॥७८॥दोहा॥
रसोचकितचहूंघांचितेचितुमेरोमतिभूलि॥सूरऊदेंआ
येदुगनरहेसांझसीफूलि॥टीका॥

धीराखंडिता नाइका कौ वचन सखी सौं है नाइक सौं है
इ [illegible] देखत रावरी मोहनी मूरति मोहि सबै सुधि भूलि
रही है ॥ आजु महा छवि छाजति भोर निकाई सबै अंग न फूलि
रही है ॥ चाहि रही सोच हूं पांच कि सो चितु आंचि रजै मति दु
त्ति रही है ॥ आये हौ सूर उदै तु भये विय नैनन सांझ सी
फूलि रही है ॥ ३९ ॥ [illegible] कत वे काज चलाइयतु च
तुराई की चाल ॥ कहै रीति यह रावरे सब गुन बिनु गुन
माल ॥ [illegible] यह नाइका प्रौढा अधीरा खंडिता नाइ
का कौ वचनु नाइक सौं ॥ [illegible] सौति के धाम विरामु कै
आपु प्रभात इतै पगु धारत है जब ॥ मैन छकौ छवि छैल नरि
आइ अनंद हियै उपजावत है तब ॥ क्यों बिनु काज चला
वत है चतुराई की चाल लला हम सों अब ॥ माल बिना
गुन की उर पै कपटी गुन रावरे देति कहै सब ॥ ४० ॥ [illegible]
डरै न जिन्हें मन सौं दियै यह रावरी कुचाल ॥ विसु सील
गति है बुरी है सो विसी को लाल ॥ [illegible] यह नाइका
प्रौढा अधीरा खंडिता नाइका कौ वचनु नाइक सौं ॥
[illegible] जानति हौं हिय के हित सों उनि ही के बसे सुख
सों निसि न्यासी ॥ भोर कि हूं भ्रम भूलि कै लाल पधारे इ
तै जिहु की मौन कपासी ॥ टीठौ दियै क हौ कैसें दुरै यह

ग्रोरहोतेसुकुचालप्रकासी॥लागतिवौसुविसेविसुसी
उषिसापनकेमुखग्रानतिहांसी॥४०१॥दोहा॥गडेव
डेछविछाकिछकिढिंगुनीछोरछुटैन॥रहेसुरंगरंगि
रंगऊहींनहरीमहरीनैंन॥टीका॥यहमहरीको
वर्नेनुहैंग्ररजौनाइकाकोवचननाइकसोंहोइतौवं
डितोहोइजौनाइककोवचनुसषीसों॥ ॥८॥
॥दो॥ताकीछवीलौढिगुन्नीकेछोरछयेसचिपुंज
निएईनयेहैं॥तापरचारुलसेनहरीमहरीदलवि
द्रुमजौतिलयेहैं॥ताकोमहाछविकेमदछाकिछुटैन
ग्रजौंगडिग्रैसेंगयेहैं॥येवियलोचनवाहीकेरंग
मैंराचिकेमांनोसुरंगभयेहैं॥४०॥दोहा॥ कतसकु
चतनिधरकपिहैंरोरतियांमोरितुमैंन॥कहाकरै
जौजाहिएलगेलगैंहैनैंन॥टीका॥यहनाइकाप्रौ
ढाधीरासंडितानाइकाकोवचननाइकसों॥कोवि
त॥कासप्रानप्यारेग्राजुप्रीतिकैपधारेहौतौतनमनुवारौंक
रौंहुलसिवधाईयो॥नेकनिरषतलेगजाहिजौलगेहैंनैंनतो
कौंतुमकहाकरौनेंजेभींननवाईयो॥कै रष्योजान्योरि
मनवंधौ ग्रमडोरितुम॥ नव रजहूं

कौसकु चकीजैसचैतितै सुषदाजेगलिहै निसकरसु
तेहांपाईये ॥ ४०३ ॥ ... ॥ ग्रनत्वसे निसिकौ रिसुनुअ
हीविसेषि ॥ तऊज्ञजग्राईफुकी ... रैलजो हे देषि
नाइकापोठाधीरोहेसषीकोवचनुसषीसो ॥ ... ॥
ग्रनतेवितईमनमोहनकेलिकलगुवसोहै ॥ ताते हिये ग्रति
लक्षाइरहीग्रतिसारचटाइ नैनौहै ॥ भोरहीं ग्रावतदेषिजु
हिवेकोंभईपुनिकीवेनसवोहै ॥ ग्राईतऊग्रतिलाजहियेहि
वैसवलानुषरैईलजोहै ॥ ४०४ ॥ ... ॥ विलवीलषेषरि
षरीनरीग्रनषवैराग ॥ म्रगनैनीरौननिनजेलाबिवेनि
केदाग ॥ यहनाईकाग्रंन्यसंजोगदुषितास
षीकोवचनुसषीसो ॥ ... ॥ साजिसिंगारहुलासासो
ग्राईहीविलोकिरहीचकिदूरहीकहि ॥ सोगतेकीची
कलीचोरीकोदागुलगोपाटरकोपतिकेपरजंकहि
दाऊजकीसीकपोलधरेकरुरोसजरीलकुरीकरि
वंकहि ॥ सोचसनीविलषैम्रगलोचनिलेतउसास
लग्रानातिग्रंकहि ॥ ४०५ ॥ ... ॥ रहीपकरिपाटीसु
रिसानेरेकौहचितनैन ॥ लषिसपनैतियग्रानर
तजगतहुलगताहियैन ॥ ... ॥ यहनाइकानै

वप्रेमैनाइकुअन्यासक्तदेखौतवजागतहूं नाहींछोडतिअ
पसंभोगदुखितासखीकोवचनसखीसौं॥कवित्त॥दंप
तैनैलिकलोलपगेउरलागेईसोभनैहुपलिकाहीं॥
अैसेमैप्यारीलखेसपनेहरिआनवधूसोंकियेगलवांहीं॥
पारीसोंलागिरहीमगलैनिभरीरिसेनैनकुभौंहनिमां
हीं॥चोपयहेचितपागीप्यारीमहातियजागीतऔहिय
लागतिनांही॥४०॥दोहा॥गस्तोअवरलौलोलिप्योआपे
पैठवसीहि॥डीठिचुराईदुहुंनुकौलखिसकुचौहींडीठि॥
टीका॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुखितासखीकोवचनस
खीसौं॥कवित्त॥आपनीप्यारीअलीकौंपठैपियप्यारे
कौंआपुहींबोलिपठायो॥आगेह्वैआइलीयोहितसौंहिय
राहुलसौंनियरैंजवआयो॥येतैमैंकसुदुहूंनुकीडीठि
लैजौहींलखीउरतेहतचायो॥बोलिकोभारीअबोलो
भैसोजियकासौंकहैंअपनोंडहकायो॥४०॥दोहा॥दु
लापरोसिनिसाथतैंछलुकरिलियोपिछांनि॥पियहिदि
खायोलखिविलखिरिससूचकमुसिक्यांनि॥टीका॥यह
नाइकाअन्यसंभोगदुखितासखीकोवचनसखीसौं॥क
वित्त॥पैठिपरोसिनिनगरप्या ।ारी

कत्नोहै। मानिलियौकछूउरमुसौंवहुभैमनुहारिहल
मन्लोहै। प्रीतमसौंमुसिकाइकहीकविन्तसन्कैंसमुझै
रन्लोहै। नेकइतेलखियैमनमोंहनज्यजुभत्नोहमपायो
न्लोहै। ४०८ नयेविरहवढतीविथाखरीविकल
जियवाल। विलखीदेखिपरोसिन्योंहरखिहंसीतिहि
ल। यहन्नाइकाप्रन्यसंभोगदुख्खिताइकूंतान
रकुयासौंहितुनाहींकरतुतातेंविकलहेदूसरेपरो
सिनिप्रसंन्नोहेदेखीताहीसमेतवखरीविलखीग्र
सन्नाइकुयाकोपरोसिनिसौंरहतुहैसुवाकोविलखी
देखिपरोसिनिप्रसन्नभई। वालमकोहितु
ग्रोनवधूसौंरहैनवाहूघरयेकघरीहै। ताहुवतवौंसुरहा
जियव्याकुलकोंमहरीकलकौंनकरीहै। वाटीविथा
अतिडाढीसीडोलतिगाढीवियोगकीआगपरीहै।
त्योंविलखीमृगनैनिपरीपेरोसिनिकौंलखिमोदभ
रीहै। ४०९ सुरंगमहावरुसौतिपगनिरखिर
हीअनखाइ। पियअंगुरिनुलालीलखेंउठीखरील
गिलाइ। यहन्नाइकाग्रन्यसंभोगदुख्खितास
कौवचनुसखीसौं। पेखिसुरंगमहावरु

सोतिके पांऊनु वाल रही अनमांनी॥ याहि विलोकि विका
इगो मोहनु वांतये अपनें उरग्रानी॥ येते में प्रीतमको चंगु
रीनु लल्लाई विलोकि परी विलखानी॥ प्रान अज्वाल न
सीऊर में मुरुझाति महा रिसमें अकुलानी॥४१०॥ दोहा॥
विधुरयो जावक सोतिपग निरषि हसी गहि गांस॥ सरजर
सैंही लषिलियो आधी हसी ऊसास॥ टीका॥ यह नाइका
अन्यसंभोगदुषिता सषी को वचनु सषी सों॥ कवित॥ वे
लह सीअंकुगांस गरे लषिकै लोमहावर सौतिके पांयनि॥
जांनि येहे अपनें जियमें यह तांनतिनाहि सिंगारके भाइनि॥
येतेमें मोर भरी मुसक्यातिलजां ही विलोकनि रेषीसु भाइ=
नि॥ आधीये हंसी ऊसास भरी अकुलाति भरी विसरी चि=
तचाइनि॥४११॥ दोहा॥ रहि हितु करि प्रीतमु लियो कियो=
जु सोति सिंगारु॥ अपनें कर मोतिनु गुह्यो भयो हरा हरहारु॥
टीका॥ यह नाइका अन्यसंभोगदुषिता याको हारु लेकें=
नाइकनें सोतिको पहरायो सुनाइका सषी सों कहे सषी स
षी सों कहे॥ कवित्त॥ मांगि लियो हितु कै हठिप्यारे नें हारु
सुचारु प्रभानि सों पागेो॥ नाहि लैं लाल चीलानू गयो कहूं
सोतिके धां मत हौं अनुरागेो॥ वारो को री

जो

किसौलषिपाविहियेअनघारउजोगसो आपनेहाथव
नाइगुहेमुकताकोहरहरउरसोपागसो ४७२
पास्योसोससुहागकोइनविनुहीपियनेह अनदेहीअवि
याककेवेअलसोंहीदेह यहनाइकासोतिकोआल
सवलितदेषिअरुरसमसीआंषिदेषिसवीसोंकोउधवनि
कारिकहतिहैअन्यसंभोगदुषितहोइहरषकरिकहैतौमना
वनहोइ सोकरिआंषिऊनीदीकरीअधउतरसोंमु
षवोनुउचास्यो वारहींवारजंभाइकैद्योंहीघरोतनआरसके
ठरठास्यो ऋवीजतावतिहैसुषसेंनजगीयहजामिनिजा
मविचास्यो देषितोप्रीतमवोविनुप्रीतिसुहागकोसोसषि
तौहिपास्यो ४७३ सषिसोंहतिगोपालकेकरगुंज
निकोमाल वाहिरलसतिमनोपियेंदावानलकीज्वाल
यहनाइकाअधीराधीराखंडितानाइकाकोवचनुसवीसों
भागिवेडनिरषोयहवोनिकुंआजुकीहोंवलिजा
ऊघरीकी अैनप्रभालषिलागतिहैकछुमोहितोमैनकीम्र
रतिझीकी देषिरीमोहनकेउरभांवतीमालविराजतिगुं
जनीनीकी पाइंहुतीप्रगटीसुतौवाहिरज्वालमनोवउ
ज्ञानलहीकी ४७४ पिचेमानअपराधहूचलिगेव

डेअचैन॥जुरतडीठिनजिरिसखिसौहसेदुहुनकेनैन॥टीका॥
सहमानमोचननाइकाकेन्नेनतोमानसेविचेनाइकाकेनेनअ
पराधसेविचेहैंपैअचैनतेविनादेखेरसोनजाइयातेंरिसअ
रुखिसौआपुहीतेछोडिकैदोउनुकेनैनहसेसखीकोवचनु
सखीसों॥ दोहा॥मांनुकैमामिनिकियचिरहोदृगराततिकहूंर
रिअंतवसेई॥साहोतमोहनुनारिनताइरहेअरसोचसकोच
गसेई॥कासकैहैविनुदेखेंदुहूनुकेमेनअचैनहियेसरसेई॥
डीठिजुरैरसरोसखिसीविविनेनभिलेसुखुपाइहसेई॥४५॥दो
हा॥ प्रवत्सपतिका॥दोहा॥अजोनआयेसहजरंगविरहदूव
रेगात॥अवहीकहाचलाइयतिललनचलनकीवात॥टीका॥
यहनाइकाप्रवत्सपतिकासखीकोवचनुनाइकसोंनाइकाकोव
चनुनाइकसोंहाइ॥कवित्त॥चलतमैकहूंकान्हकलोतुंमकालि
सोजेहोचरावनगाई॥सोसुनिकैऊहिदोरचसासभरीसवअंग
परीपियराई॥तादिनकीवानवलीकेअंगनिआजुहूलोंनमि
टीदुवराई॥लालनुरहोअनवोलनहाअवहींचरचाचलिवेकी
चलाई॥४९॥ ॥विलवीडभकोसैंचमनुपियलविग
ऐनुवराइ॥पिगहवरआयोगरेंराचीगेरेलगाइ॥टीका॥
नाइकाह
प्रवत्साइका॥प्रियनुपतिका ॥४

नैगन नु वह न्हाइ कैं गरे सौं लगाइ राखी सखी कौ वचनु सखी सौं
पति प्रान पिया विछुरे न कहूं सुख सौं रहै प्रेम पियूष
पीयें हितु मानि वैदेस कौं हौं न विदा हरि आयो पयान कौ
साजु कियें निरखी उमगैं कौं है सनै न कियें विलखी मृगले
चनि सासा लियें न कहीं चलिबे कौ कछू वतियां छतियां
भरि लीनी लगाइ हियें ४९७ ललन चलन सुनि
चुप रही बोली आपु न ईठि राख्यौ गहि गाढें गरे मनों गग
लगली डीठि यह ल्हाइ का प्रवत्स्यत पतिका सखी
कौ वचनु सखी सौं मध्या प्रवत्स्यत पतिका प्यारी
के भवन चलति हितु कहि प्रानपति आयो विदा हौं न परदेस कौं उ
महि कें ललन चलन सुनि रही न बोली दांतिय आनी
न वच न कह्यो कछू कीन्हें चकित सी भई चक चौंधद सौं छाये
चितु आवतु सलिल दोऊ नैननु सौं बहि कें गल गली डीठि
रि देखी हरि सनमुख मेरे जान राख्यौ वेहीं गाढौ गरे गहि कै
ललनु चलनु सुनि पलनु मैं असुवा झलके आइ भ
ई नु सखिन हूं झूठे हूं जमुहाइ यह ल्हाइ का प्रवत्स्य
८ पतिका सखी को वचनु सखी सौं कियौ विदा परि जिया हूं लौं

॥हित॥ बिलतिहौ सजनी गगनमें ब्रषभानकुमारि सरूपसौं
जानौ॥ कौन्हरु कालि कहैं रंगे पयानु सुनौ यह स्यानि जे काहू हेत्रौं
ननबांनौ॥ आंखिनु में अंसुवा जल लैंकै यह भेद कीवात अलीहू न
जानौ॥ यौं मुहु मोरि जंभाइ के कौ करि ऊठमु पोंछि तिनैन सयांनौ॥ ४९
॥दोहा॥ रहिहैं चंचल प्रांन ये कहि कौन की अगोट॥ ललन चलन
कौ चित धरी कल न पलनु की ओट॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा प्रव
त्स्यत पतिका नाइका को वचनु सखी सों॥ कवित्त॥ नैन सुव संगनि
मैं नेह की तरंगनि मैं अंग अंग पागि रहे रंग मैं उमहिहैं॥ असप्रांन
प्यारे तें न छिनौ भरि न्यारे भये औरहीं तेव सभये से सीवांलि गहि
हैं॥ पलनु की और भये कलन लहत क्यों हू जै से लगति होति सो तौ
आवतिनकहिहैं॥ ललन विचारी चित चलन की वात अवकौ
न की अगोट ये चपल प्रांन रहिहैं॥ ५०॥ दोहा॥ चाह भरी अति रस
भरी विरह भरी सव गात॥ कोरि संदेसे दुहुनु के चले पौरि लौं जा
ते॥ टीका॥ यह प्रदेस कौ गवनु दोऊ नु के हित की अधिकाई स
वी सखी सों कहति है न्याइका प्रोषित पतिका॥ कवित्त॥
काज कौं कान्हर कीनौ प्रयान महूरत साधि

दुहूनुकोंजैसोंग्रकुल्लातवियोगनेसूलसकेई चाहभरीक्रस्पै
तिभरीरसरीतिभरीवतिसांभिरलेई पौरिलौंजातदुहूनुकेघे
रतेंग्राल्लीरीकोरिसंदेसेचलेई ४२२ मिलिचलि
लिमिलिमिलिचलतग्रंगलच्च घयोभांनु भयोमहूरथने
रकोपोरीप्रथममिल्लानु यहप्रदेसपयानकोर
यसवीसवीसोंकहतिहे रमनगमनपरदेसवो
विचारचितसाधिसुभलगनगमेसकोमनायोहे सा
सुकेऊरप्रानप्यारोंई कहूनकेसोमंगलहरई गहवरगे
गायोहे चलतमिलतमिलिचलतचलिमिलतचला
चलतमिलतयोंहीवासरवितायोहे भोरकोमहूरतुभ
नहींमेसांझभईपोरिहीमेप्रथममिल्लोंनठहरायोहे ४२
वांमाभांमाकांमिनीकहिवालोप्रांनेस प्यारीव
तल्लजातनहिपावसचलतप्रदेस यहल्लाइक
टप्रवत्स्यतपतिकानाइकाकोवचनुनाइकसों
ग्रायेहैमागनमोपेविदाइतपावसकेघुमडघनगा
कांमिनीभांमिनीवांमेकेवोलतुहु प्यारीकहोमतिन

लौ॥ रंचकहूंनलजातहियैं अहितुकैं गर्व्वेयेदुषदीजतभारो॥ ऐसेमे
छोडिविदेसचलेकरौमेरीकहागतिप्रांनपियारे॥ ४२॥ प्रो॥
तपतिकालसा॥ पियप्रांननुक्षेपाहरूकरतजतनअतिचारु
जाकीदुसहदसापरयोसोतिनृनिहूसंतापु॥ टीका॥ अहनाइका
प्रोषितपतिकासखीसोवचनुसखीसें॥ कवित्त॥ तापतपीवि
रहानलकेविलखीवरनागरिसोंननिहारी॥ आंखिनुहांभैरहै
अंबुअंनिकेप्रांनसबेसुधिग्रांनविसारी॥ सोतिसबेउपचारअ
ंगनिकैंपियप्रांननुकोरषवारी॥ दारुनवाकीदसानिरषेंऊन
हैकैपरयोजियसंकटुभारी॥ ४४॥ दोहा॥ पावकजरतेंमेहजरदा
हजरदुसहविसेषि॥ रहैदेहत्राकेपरसयाहिदृगनिहांदेषि॥ टीका॥
सहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहिनीनाइकाकोवचनुसखीसोंऊ
देवगसोंनाइकाकूसखीसोंकहैतोसंभवै॥ कवित्त॥ धूमभरेधुर
नागहरेअसत्रंमरपूरिमहीअवगाहे॥ देषिरीपावककोजरतेंसद
मेहकीज्वालकरालमहासे॥ वाहिभटूपरसेंहांदहेयहनेननुहीं
निरषेतनुदाहै॥ जोगिरधारीविनावचिवेकोतुहांकरिथाउपा
ऊकहा है॥ ४५॥ दोहा॥ कोहजुवचनवियोगिनीविरहविकल
अकुलाइ॥ क्रियेनकोअंसूवासहितसुचाति॥

यहन्नाइकाप्रोषितपतिकाविरहिनीसखीकोंवचनुसखीसों
प्रानपत्तीविनुवातियकोंइकसाथसंवेदुवग्रांनिपरैं
वाकोंदसालखिपासकेवासीऊसासभरैंगहैंरंगहैंरैं जेरहेवें
नवियोगिंनिनेंग्रकुलाइवियोगवियानिभरैंहैं वेवतियांग्रव
वोलिसुवांसवहींग्रसुवानिसमेतिकरैंसं ४८ दुसहवि
रहदारुनदसारैहैनग्रोरऊपाइ जातजातजैसोंराषियतुप्रेमोकोनां
ऊसुनाइ यहन्नाइकाप्रोषितपतिकाविरहिनीसखीकोंव
चनुसखीसोंदसग्रवस्थाकेभेदमैंव्याभिजानियें प्रांन
पियापरदेसुकियोतियग्रंगग्रनंगतरंगविताये सीरैहैजांनि
जैरैकवहूंऊपचारविचारजितेसवकाये ईठिनिधारयवासि
हिनूमुरजाइरहींनभयेमनभाये ग्रेसेंकहैंजोवचैतोवचैकहैं
गांऊतेमांऊतेमोहनुग्राये ४९ रहोंग्रेचिग्रंनुनल
हैग्रेवधिदुसासनुवीरग्रालीवाटतुविरहजैसोंपंचालीको
चीर यहन्नाइकाप्रोषितपतिकाप्रौढानाइकाकों
चनुसखीसों चेंनुपरेनाहिजीऊरहै द्रिगनेंननु
झरैहैजलुछायो भावेनभोजनुभोनुसुहाइनसाइहियोपरित
पतचायो ग्रेचतुग्रोधिदुसासनुवीरजकोवचुवैतऊग्रंनु
पायो वाहिरकेविकुरैंविरहाग्रवद्रोपतीकेपरज्योंग्रधिकायो

॥ तियहियलियजुलगीचलतपियनषरेखवरो

॥सूखनदेतिनसरसईषोटिषोटिषतषोट॥टीका॥यह

नाइका प्रोषितपतिकासषीकोवचनुसषीसो॥कवित्त॥

आजुनेसंजरमोरसारंगअनंगतरंगउमगिसुहाई॥काहूर

केकरकौनषरेखकहूंतियकेउरमेलगिआई॥पीपरदेसगयं

योजवतेंऊनिनीधनकोधनुपाई॥षेषतषोटिषरोटिषरोटि

नसूखनदेतिवेसरसाई॥४५॥विरहनिवेदनु॥दो॥म

रिवेकोसाहसुककेवडेविरहकीपीर॥दोरतिहेंसमुहेंससि

हिसरसिजसुरभिसमीर॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिका

सषीकोवचनुसषीसो॥कवित्त॥श्रीमनमोहनसोजवतेंवि

छुरीतवतेंनपलोकलपावति॥नीरविनासफरीज्योंवरी

तलफेंसुभईदुवरीअतिनावति॥सारसुकेमरिवेकोसषीसु

उपारिकैआननुजोन्हमेआवति॥

न १५४

तियतनहिलगनिआगि

यह नाइका प्रोषितपतिका विरहिनी सषी कों वचनु सषी सों

प्रान पती विनु बाति यें कों इक साथ सवै दुष त्रांनि परैं

वा को दसा न विपास के वासी ऊसास भरें गहरैं गहरैं हैं जे कहें वें

न वियोगिनी नि नैं अकुलाइ वियोग विथा निभरें है वे बातियां अव

बोलि सुवा सव ही अंसुवा निसमें तिकरें हैं ४२६ दुसहवि

रह दारुन दसा रहै न औरऊ पाइ जात जात ज्यौं राषियतु प्यो कौ नां

ऊ सुनाइ यह नाइका प्रोषितपतिका विरहिनी सषी कों व

चनु सषी सों दस अवस्था के भेद मैं व्याभि जांनियें प्रान

पिया परदेसु कियौ तिय अंग अनंग तरंग वितायें सो रोहै जांनि

जैरे कवहूं उपचार विचार जिते सव क्षाये ईढि निधार ववासि

हि नूपुर जाइ रहीं न भयें मन भायें कैसे करैं जो वचे तो वचे कहै

गां ऊते मां ऊते मोहनु आयें ४२७ रहो अचिअनु नल

है यें वधि दुसासनु वीर आली वाटतु विरह ज्यौं पंचाली को

चीर यह नाइका प्रोषितपतिका प्रौढा नाइका को व

चनु सषी सों ऐंनु परे नहि जी ऊरहे द्रिगनैं नतुमं

जरैहैं जलु हाथै भावेन भोजनु भौनु सुहाइ न हाइ हि यो परितां

पतचायो ऐंचतु ओधि दुसासनु वीर ज को वतु वेंत उ अंतुन

पायो वाहिर कौ विकुरैं विरहा अव द्रुपती के पर ज्यौं अधिकायो

हैरे तेव्रजबालभई निपट विहाल विथा ऊर सरसाति हैं॥
अंत नसताई ताके तनकी तताई है वैब्र पके तरनि हूं की
केरि निसि राति हैं। करति ऊपाइ हाहा इकहि वारवार २
मोहि कहि रति अति निपट अकुलाति हैं। ओढे वसन
यालेजाडे हू की राति मांज साह सुके नेह नौतें सषी टि
गजाति हैं॥ ७७॥ दोहा॥ सुनत पथिक मुह माह निसि
लुवें चलति ऊहि गांम॥ विनु पूछें विनु हीं सुनें जियें वि
चारी नांम॥ टीका॥ यह नाइका प्रोषितपतिका विरस
मै पथिक के मुख की वात सुनि नाइका नें अटकर तें याकी
दसा जांनि सषी कौ वचन सषी सें॥ कवित्त॥ सीतल
मैं हूं की राति मैं लू वैं चलें ऊहि देस कुतासन सांनी॥ आ
पुस मैं ऊत रात वटोही अचांन ककांन परी यह वांनी॥
छांडि दये सव काज विदेसी को वुधि तें हीं घर कों अकुलां
नी॥ प्रांनपियारी की आइ गई सुधि जीवति है तिय मैं य
ह जांनी॥ ७८॥ दोहा॥ मार सु मार करी डरी मरी मरी
हि न मारि॥ सींचि गुलाव घरी घरी वरी वरी हि न वारि॥

यहनाइकाप्रोषितपतिकाउद्वेगदसानाइक
बनुसखीसौंरतरंगसखीसखीहूसौंकहैतौवैने
बालमवियोगतैंविकलअतिप्रानकहूसूजतुन
बनहुसहीकौराउरी औरउपचारकरिमारिमा
मरीजौंहतूहैतौऊसप्यारेकौंमिलाउरी घरीघ
ताउरी भरितिघरीयैमारीमारीकौंडरीयविरहा
निवरीयेअवबाहुरीजिवाउरी
चतिगुलाबकेसलिलतूंकियौकहाचातिहमोहू
नुद्गटिबरुनीनुवटि नहिंकपोलठहरात अंसुव
परिकतियाछिनकछनिकनाइकछपिजात
अहनाइकामध्याप्रोषितपतिकासखीकौवचनुसखी
सौंनाइकहूसौंनिवेदनुकरेतौसंभवै
लनंदलालकेवियोगतैविकयौतैंपलपलविधिवे
सेवासरविरहतेहैं विरहततताईकीवटनिवरनीन
जातियेतेमांनतचैनाकेकुसमसेगातेहैं पतुतैंप्र
गरवटतवरुनीनुहूतेपरतकपोलपेतुरतटरि
जातेहैं सलिलकीबूंदताताीछितिपेपरतिहैसेंक

परिग्रंसुवाद्धनकिद्धपिजातेहैं॥४०॥दोहा॥फिरि
घिदेसुधिद्यारप्योहिहिलिरदईनिरास॥नईनईवहैरोंद
ईऊसासिऊसास॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिका
कीग्रवस्थासखीसखीसौंकहतिहै॥कवित्त॥ग्राली
योगुभग्रेवनमालीकोव्याकुलवालवरीग्रकुलाई॥पां
नकीपुतरीह्वैपरीउपचारविचारकछूनवसाई॥ग्रेसे
वाहिदईसुधिदेसुधिद्यारपियादुखरासिजगाई॥वालि
रेसौंकहाकहियेजिनिप्रेममहरकीपीरनपाई॥४१॥
दोहा॥विरहजरीलखिजींगननुकह्योनऊहिकेवार॥ग्र
रहाउभजिभीतरीवरसतग्राजुग्रंगार॥टीका॥यहन
काप्रोषितपतिकाउरवेगग्रवस्थासखीकोवचनुनाइका
सौंसखीकोवचनुसखीसों॥कवित्त॥विरहविकलग्रंग
लोचनीविवसभईहरिविनुतनमनप्रानतरसतहैं॥प
लपल्लवरतिनधरतिरतीकुधीरग्राधिकग्रनंगदुखद
रसरसतहैं॥जींगननिनिहारिवारवारयोंपुकारिकहो
ग्रालीयेंग्रनोखेउतपातदरसतहैं॥ग्रहेभजिग्रावेगि

भीतरभवननदेखिग्रंवरतैंग्राजुतोअंगारवरसतहैं॥४२॥
इतग्रावतिचलिजातिउतचलीछसातकहाथ॥च
ठीहिंडोरेसैरहैलगीउसासनुसाथ॥ ॥ग्रहन्नाइकाप्रो
षितपतिकाकसताकोग्राधकारसवीकोवचनुसंषीसोंना
इकसोंसवीसवीहसोंकै।तोहोइदसगवस्थानुमैंव्याधि
स्वासनसेलारीसुकमारतानसभवै॥ ॥मोहनला
लतिहोरे वियोगरहीव्रजनागरिचिंककटीसी॥होतिछि
नैछिनग्रोरहीरंगग्रनंगकीवैरनिग्रंगवटीसी॥वातन
ग्राईइतीदुवराईसवीलषिसोचसमूहबैठीसी॥ग्रावतिज
तिछसातकलाथउसासकेसाथहिंडोरैचटीसी॥४३॥
नैकुनकुरसोविरहझरनेहलताकुम्हिलाति॥नितनि
तहोतिहरीहरीषरीझालरतिजाति॥ ॥यहनाइकाप्रो
षितपतिकानाइककोवचनु॥ ॥नंदकेदुलारेल्या
रेभयेजवहीतेंव्रहतातोहेकैंकातीग्रकुलातिहैं॥सुपि
ग्रांकेघरीघरीसूलसेसलजउरप्रांनपरे॥परवस
कछूनवसातिहैं॥दारुनविरहझरजदपिसनेहलता
झुरसीतदपिनेकहूनकुम्हिलातिहैं॥दिननदिनछिन

नऊमगिअधिकहोतिहैरीहरीवरीषरीजारतिनी
हे॥४४॥दोहा॥यैरेऊरऔरैकछूलगोविरहकौलाइ॥प
रिनौरगुलाववैन्नपीकौवातवुजाइ॥टीका॥यहनाइकाप्रो
षितपतिकाअवस्यासषीसषीसौंकहतिहै॥कवित्त॥ये
हरसालविहैअकुलातिकितौऊपचारविचारिथकीरी॥
ानवोलेनवोलेविलोचनुदूवरीहोतिछिनैछिनपीरी॥
ावेहियैकछूऔरअनोषीवियोगहुतासनज्वालनगीरी॥
नीरगुलावकेदूनीवेरपियप्यारेकीवातहिंहोतिहैसीरी॥४५
॥दोहा॥हौंमतिसुषकरिकामनातुमहिमिलनकीलाल॥
ज्वालमुषीसीजरतलषिलगनिअगिनिकीज्वाल॥टी
का॥यहनाइकावैलगनिकौज्वालकीअधिकाईहैसुस
षीनाइकसौंकहतिहै॥कवित्त॥ऊसपानप्यारेलाल
जवहींतेभयेन्यारेतवहींतेप्यारीपलकलनधरतिहै॥
ससकिससकिअतिदीरघऊसाससैतितदाछितल
फिसुधिवुधिविसरतिहै॥

चेउज्वालनिहचो हियेमेंज्वालामुखीकोधरतिहे मिलिवे
कोकामनाहियेमेंधारिइहु मुखीअवसुखसुखनुकोहेमु
सोकरतिहे ४६ नितसंसोहंसोवचनुमनोसुह
हिअनुमानु विरहअगिनिलपटनिसकेजपटनिमीचु
सिचानु यहनाइकाप्रोषितपतिकासखीकोव
चनुसखीसोंजोनाइकसोकहेतोविरहुनिवेदनुहोइ
बिछुरेतिहारेमनमोहनपियारेवालनिपरक
टिवेनकरीमदनसताइके सवहीकेरहतुहियेमेंयहेसं
सोवहहंसोअवलागिकेसेरहेठहराइकें जोनियतु
यहीऊनमानुताकेवचिवेकोआनिपचिहास्येअन
गानितऊपाइकें विखमलपटलखिविरहुतास
नकीजपटनिसकतुसिचानमीचुआइकें ४७
विरहसुकाइदेह नेहुकीयोअतिउरुउहो जेसें
वरसेमेह जेरजवासोजोजमे यहनाइकाप्रो
षितपतिकाविरहकोअससनेहकोअधिकाईसखीसे
करतिहेअरुनाइकुकूअपनीअवस्थाकहतुहेसखी

मोहूसभवै॥कवित्त॥देखो वियोगमैं नेकुसुभाइकरी
ुवरीरसौ मोसुनमासो॥नेहलता उलहाइ उहैहरी
करेहरिसखीनुहूवें परयोसासो॥ग्रावति है जियमें
ऊपमां कवि त्र सकैहै यह देखितमासो॥ज्यों वरसे
पन पावसके सवहू यजिमे जरे आजनवासो॥५८॥
होहा॥विरह विथा दिनपरत हीं तजैसु सतु सव अंग॥
रहि ग्रवलौं धोषो भयो चलाचलो जियसंग॥टीका॥
यह नाइका प्रोषितपतिका नाइकाको वचनु सखी सो
सखीको वचनु नाइकासौं ग्रसखी सखीसौं कहै तासभ
वै॥कवित्त॥जोलौं प्रानन्नाथके समीपरहै तो लौं ग्रंग
ग्रंग सरसानै सुखरसनै फमगिकें॥न्यारे होत प्यारे
के वियोग विथा वाढत हीं नातो करिहा तो लै ग्रंग
ऊगरे भागिकें॥दुखकी निकाई कछू वरनी न जाई
तिमाई ये तो दुखुससो तऊ रसै लोपेम पागिकें॥पेन भ
यो होनो रीझ लौं साथ दीनो जौ अवचलिवे विचा
रौ संग प्राननुके लागिकें॥५८॥दोहा॥

८ कागरहियैंमयोलषाइ नटांकु ।। विरहतच्योऊघस्योसु
ग्रवसैंहडकै सौच्यांकु ।। यहनाइकापोषितप
तिकासषीकोवचनुसषीसोंनाइकाकोवचनुसषी
सोंसंभेव ।। जोलोंसमीपरसोहरितोलगि
मैंग्रपनोमनभायोकस्योई ।। कांऊलसोयहभेदुन
जीयकोजद्यपिहैसवभोंनुभस्योई ।। नेहछतोईहुतो
हियकागरकोंनहूंभांतिनजांनिपस्योई ।। सेंहडकै
सोलिपाऊं ग्रलीविरह गिनितेंग्रवकूं
ऊघस्योई ।। ५० ।। जस्योजुग्रागिवियोगकीव
लौविलोचननीर ।। ग्राठोजांमहियोरहेऊटेनोऊसा
ससमीर ।। यहग्रवस्थाविरहकीनाइकुग्र
चलाकाइकाग्रपनीग्रवस्थासषीसोंकहै ।।
सवहीतैंकठिनसनेहकोलगनियहकिनिसुषुपा
योमनुप्रेमपयुडारिकैं ।। जाकेतनलागेसोईजांनतु
हैभेदुयहवेदनिविषमकोंनुसकतुसम्हारिकैं ।। कै
कोविकसयहज्योरग्रदभुतगतिपजस्योवियोगग्रा
गिवलोडूगवारिकैं ।। तऊदेषोग्राठोजांमऊटेनोईर

हियोदीरघऊसासनुकोप्रवलवियारिवैं॥५१॥सो
॥मेंलविनारीस्रोनुकरिराख्योनिरधारयहा॥ न्हैहरै
नुनिदांन॥न्है वेदुञोवदिन्है॥टीका॥यहलगनिस
वीकोवचनुसषीसोंअंतरंगतसषीकोकहिवोंहेअ
नाइकाअथवानाइकाकुरूपनीअवस्थासषीसोंक
हतौसंभवे॥कवित्त॥कारकोंघोरिघनोघनसार
वषाउपचारनुकैतनुवारो॥मेंलविनारीकलौ
निरधारलैहेवयहभेदुनवेदुविचारो॥जाकोस
रूपुवुभ्योऊरमेकिनिताहिदियाइविथायहटारो॥
ओवदिवेदुन्हैऊपचारन्है पुनिरोगुनिदांन
निहारे॥५२॥दोहा॥कौनसुनैकासोंकहोंसुरतिवि
सारीनाह॥वदावदीज्योंलेतहैयेवदरावदराह॥टीका॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहकीदसअवस्थाभेदमेंचि
तनाइकाकोवचनुसषीसों॥कवित्त॥कासोंकहोंकोनु
यहहैजा। वस वना।

री ॥ येतेपरवरज्यो न मानै क्यों हूं प्रानलेतवरावरी
दरानिपरवरराहरी ॥ अंगुरी तु विकल अंग नगुतनुता
तुरै वेदनिदरतिऊमहतिचितचाहरी ॥ ज्यसप्रानप
...रकी हु साई न सुहाइ कछू वरसतु मैनसु तेस लि
प्रवाहुरी ॥५५३॥ ... ॥ स्यांमसुरतिकी
धिकातकतितरनिजातीस ॥ अंसुवनिकरतितरौंस
कोंयिनुकुवरौं हौं नीर ॥ ... ॥ यह न्याइ कों प्रावि
पतिकारस अवस्थामेरमें स्न ॥ तिसखीकोवचनुसखी
सों ॥ ... ॥ स्यामनभावनके विछुरैं व्रवभानसुता
अतिहीं अकुलानी ॥ भोजनु भैनु सखीन सुहाइ सुख
रनवासरवासरवानी ॥ सूरसुताहि निहारिरहीऊ
हारिकछू हरिकी पहिचानी ॥ ज्यांसुनिकेपरवाहक सा
विनयेकवरौं हौं तरो सकों पानी ॥५५४॥ ... ॥ सोवत
जागतसपनवसरसरिसचैनकुचैन ॥ सुरतिस्यांम
नकीसुरतिविसरैं हूं विसरैन ॥ ... ॥ यह न्याइ
...ति सखी सों कहतिहै दसअवस्थामें
...लिनकी प्रीति...

अतिसंचारीजांनियै॥कवित्त॥कछूनसुहातनिसिद्यो
सनसुहातद्यौंहूकहाकहौंवातपरवसपरेमनकौ॥सो
वतहूजागतहूसपनेहूचितचढिरहेचितवढोवानिव
हैप्रीतिपनकौ॥रसहूमैरिसहूमैचैनहूअचैनहूमैकौ
नमैवगारहूमैवाटहूमैवनकौ॥भूलनिसुरतिनिजत
नहूकौतऊवहभूलतिनवैसेहूसुरतिस्यामघनकौ॥५५
दोहा॥भौयहअैसोईसमोजहांसुखदहुदेत॥चेतचांदनी
चांदनीडारतिकैरअचेत॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपति
कारसअवस्थानुमैउद्वेगनाइकाकोवचनुसखीसों॥
कवित्त॥व्यालभईअवमालतीमालसमीरतैपीरहियैसर
साई॥पावकपुंजसोचंपकुचंदनुचंदकुचंदुलख्योनसु
हाई॥चेतुरहेचितचेतकोचांदनीवेधतुवांननुकोसु
कसाई॥गांनिवन्योअवगैसोसमोदवदेतसवैदुख
...॥५६॥दोहा॥हेहीवौरीविरहवसकैवौरोस
गांऊ॥कहाजानियेकहतहैससिहिसीतकरनांऊ॥
टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइका

धौसौं कुंभजहूंअचयोसुपचयोनयाहीतेंऊ
निजसौतमहूंउरपिविषकंदुसौंसोदरसोध्रुवलनिकौं
कलंकीसैंचढायोसीसईसकहाजोनिहितुकीनौंमति
मंदसौं कैधौंसबहीकीमतिहौंनभईमेरीआलीकैधौं
हौंहींबौरीभईविरहकेदंदसौं देषियतुपावकतेंविषम
विसेषवेषसीतलकहततेरेसेचंदसौं ५५७
औरैभांतिभयेवयेचौसरुचंदनुचंदु पतिविनुअतिपा
रतुविपतिमारतुमारुतमंदु यहनाइकाप्रोषि
तपतिकादसअवस्थामेउभेगेनाइकाकौवचनुसषी
सौं वेसोहितुकरिअबऐसोविसराइनिठुरा
ईताकन्हाईकौनकहतवनतिहै जेईहैंसुषदतेईभयेदुष
दाईअबकहाकहौंमाईआकुलाईअतिमतिहै चंदनसरो
जचंदुचौसरसिंगारचारचंपकहूचंद्रिकाकौंऔरैभईग
तिहै भयौनिरदईमंदमारुतहूमारतुहैप्रानप्यारेप
तिविनुपारतुविपतिहै ५५८ हरिहरिकरिवरि
वारिऊठतिजरिकारिपकौऊपार वाकौजुरुवलि
वेदज्यौंतौरसजाइतौजाइ यहनाइका

वितपकाआधिअवस्थाविरहनिवेदनुसषी
वचनुसषीसों॥कवित्त॥हरिहरिरटतिवट
विषाद्धिबुद्धिनुचरिनरिऊठेवाकेनैंरंजातज
ये॥कारिकरिथकीहैंऊपारसबव्रातीअबकछु
वसाइऊरसोचभारभरियै॥यहोवलिवेदअब
वरेसुरसही वचेतौ वचैंचलिवाकोपीरहरियै॥
ौवोतापुटारियैधर्मुउरधारियैनिवारियैगहरु
करनाकेढारढरियै॥पणीदोहा॥नरीउरीकिट
ौविथाकहासरीचलिचाहि॥रहीकराहिकराहि
अतिअवमुषआहिनआहि॥टीका॥यहलारका
प्रोषितपतिकादसअवस्थाभेदमेजउतासषीको
नचनुसषीसों॥कवित्त॥ऐसीकोंछांडिविदेस
गयोहरिजोकबहूंविछुरीनघरीसों॥हाइवहेत
ाडीहरहीगतियाकीनवेमा॥म

ल वियोग वजागि मरी वे करा रु निच्यौं अवहीं वि
मरी है। पीरहरी कि परी है मरी चलि दे खि अरी क
हा दूरि सरी है ५०। दोहा। मरनु भलौ वरु विर
तें यह विचारु चित जोइ। मरनु मिटै दुख एक कौ
विरह दुहूंदुखु होइ। टीका। यह नाइका प्रोषितप
का नाइका कौ वचनु सखी सौं अरु नाइक कू कौ व
चनु सखी सौं संभवे। कवित्त। नेकहीं के विछुरें स
हो सुख साज भये दुख दाइक भारे। नैननु नीर उर
वरसे तर सें छतिया विनु प्रानपियारे। आली वियो
ग विथा वरिवे तें भलौ मरिवौ मत मान्यो हमारे। ये
क कौ दुखु मेरें मिटि जातु वियोगु सुहातु है दोउ दु
खारे। ५१। विरह निवेदन को दोहा। कर के मीडे कु
सम लौं गई विरह कुंभिलाइ। सदा समीपनि सखि
नि हूं नीठि पिछानी जाइ। टीका। यह नाइका प्रो
षित पतिका सखी कौ वचनु नाइक सौं सखी सखी रू

ोंकोहै कवित्त॥प्यारे नंदलाल तिहारे बिछुरे मोपे
हत वने नजेसी भई वाकी गति है॥ आली जेरही
सवासर समीपतिन्हू पे पीर चाकी वह नोठि हीं
रति है॥ त्रासदे विपास जे वो हांउ नोपा सवानि हूं नु
ते मानभरन्हु तासन वरति है॥ कोमल कुसमु
नो मोंडे नो करवरकारि ऐसे कुभिनो २ मुरजा
गई अति है॥४५॥ दोहा॥ नेक न जानो परति यों
पसो विरह तन छांम॥ उठति दिये लों नांहि हरि
लिये तिहारे नाम॥ टीका॥ यह नाइका प्रोषित
पतिका विरह निवेदनु सखी को वचनु नाइक सों॥
कवित्त॥ लाल तिहारे वियोग ते वाकें विहाति घरी
विधि वासर कोसी॥ छांमु भयो अति हीं तनु वांमको
कांमु दहै सुधि बुद्धि हरी सी॥ सेज में नेक हूं जानि
परै न हिये विये कंचन रेख लिखी सी॥ ८..

सुनैं इकवारहीं नादि उठै द्युति दीपक ही सो ॥४९॥ दो०
जौ वाके तन की दसा देखें या चाहत आपु। तौ बलि
नैं कु बिलोकियै चलि अचकों चुपु चापु ॥ दोहा ॥
यह नाइका प्रोषित पतिका व्याधि अवस्था सखी
वचनु नाइक सौं नाइका लौं चलिबो प्रयोजनु हैं ॥
कवित्त ॥ पाहन सी पुतरी जैसी परी वरसें अंसुवा स
रसैं तन ताव। ज्यौं ज्यौं कौ रे उपचार वैरे त्यौं त्यौं परयौ ह
लोगनु कौं अति पावै। वाकी दसा अब वैसी भई
रि जो अब लौं क्यौं ई चाहत आवै। तौ वह सो चुलतैं
न बलाइ त्यौं यौं अचकों चलियै चुपु चावै ॥४५॥
दोहा ॥ तजतु अठान न हठ पर्यौ सठ मति आठ
जाम भयौ वामु वा वाम कौं रहतु कामु वे कामु
दोहा ॥ यह नाइका प्रोषित पतिका विरह निवेदनु स
खी को वचनु नाइक सौं सखी सखी सौं कहै तौ हू संभ
वै ॥ कवित्त ॥ लालन मन न भावन ति हारे विछुरे तें

साल विरह अगिनि में वरति नेह न नाधैं हो ॥ वे ही को
हुकां सुवांम देखके भरम भूलि रत्यो ॥ वाही वांम सें
विषम वैर वांधे हो ॥ सठमति हठ भरि रयाऊ रप
रेह रिआठे जा भरह तु सरोस सरु सांधै हो ॥ को
जे धी कहा ऊ पाऊ छोड नु न खोट पाऊ ताकि हु
निवे कौ राऊ लाग्यो रही वाधैं हो ॥ ४५ ॥ दोहा ॥
वाल वेलि सूखी सुखद इहि रूखी रुख धांम ॥ फेरि डह
डही कीजिये सुरस सींचि घनस्यांम ॥ टीका ॥ अनु
राग नि वेद नु सखी को वचनु नाइक सें पुरुष मान के
प्रसङ्ग में सम्भवे ॥ कवित्त ॥ हितु करि जाको हरि लीजे
चितु लाल यह कित रेह चित ताहि ये तो दुखी जिये ॥
जानत हो नीके प्रीति रीति को प्रवीनपनु कीजे न गहरु
सुखु दैके सुखु लीजिये ॥ रावरे दुसह इहि रूखे रुख धां
मही सो वाल वेलि सूखी जाहि निर ... जे ॥

प्यारे घन स्याम जग जर नि निवारत हो सींचिवे सुरस प्रे
रि डहडही कीजिये ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ लाल तिहारे विरह की अ
गि नि अनूप अपार ॥ सरसें वरसें नीर हू कारहू मिटै न जार ॥
टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपतिका सखी को वचनु नाइक सों
विरह निवेदनु ॥ कवित्त ॥ कस प्रान प्यारे लाल विछुरे
तिहारे बाल अति ही विकल अमिलिवे को तरसति है सो
रो होति ताते उपचार मोंडें ता तो छिन अकुलाति छाती
पर पीर न सरति है ॥ वाके तन रावरे वियोग की अगिनि ये
सो अदभुत गति सों अपार दरसति है महा जर हू ते जार सो
री नपरति पजरति ज्यों ज्यों नीर की भर ति वरसति है ४७
दोहा ॥ देखति वुरै कपूर लों उपे जाइ जिनि लाल छिन छि
न जाति घरी घरी छीन छवी ली वाल ॥ टीका ॥ यह नाइका
को अनुराग निवेदनु सखी को वचनु नाइक सों विरह नि
वेदनु हू होइ ॥ कवित्त ॥ विछुरे तिहारे लाल विलखी
विकल बाल परी विललाति वेचौ हू धीर न धराति है प्रे

नमानकासभइपरपरजपापर...

वाकोगातुहै॥कालिहिंसुआजुनाहिंआजुहोसुअवनाहि

आतेपरितननुकोजीऊगवकुलातुहै॥ऐसीद्विनछीजनि

बिलाइजिनिजाइवालज्योंकपूरवालोतेंकपूरउडिजातु

होत्रैसो॥दोहा॥हंसिउतारिहियतेंदईतुमजुतिंहिदिनलाल

॥राषतिप्रानकपूरज्योंवहेचुहटनीमाल॥टीका॥

सुरत्रनुरागुनिवेदनुसखीकोवचनुनाइकसों॥कवित्त॥दू

वरीऐसीभईबिछुरेंतियसेजहूमेंनलषीपरेसोतो॥आली

बिलोकिकेमीडतिहाथगयोइकसाथसवेसुखुजोतो॥वीस

बिसेउडिजातकपूरलौंराषतोप्यारीकेप्राननुकेतो॥जो

वहलालतिहारोदयोघुंघुचीकोहराउरमाझनहोतो॥५६०

दोहा॥कहाकहेंवाकीदसाहरिप्राननुकेईस॥विरहज्वा

लजरिबोलखेंमरिवोभयोअसीस॥टीका॥यरनाइका

प्रोषितपतिकासखीकोवचनुनाइकसों॥कवित्त॥प्यार

मनमोहनतिहारेबिछुरेतेंवृषभाननकीकुवारिभईघरी

कलकानहै॥जलबिनुमीनज्योंबिकलतलफतिगति

कविकन्यऐसीहोतिप्रांनवांनहैं॥ज्यौंज्यौंकरिअनुअ
चारुनुकीभीरसोंवैठतिदूनीपीरहैप्रांपिनुहूप्रांनो
विरहकीज्वालनिसोंजरिवेकेलयेवाकोजरिवोवच
नयेंग्रसीसवेसमानहै॥४०॥दोहा॥यहविनसतनगुर
षिवेंजगातवेडोजसुलेहु॥जरीविषमजुज्वाईयेग्रारसुद
रसनुदेहु॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिकाव्याधिअवस
सवीकोवचनुनाइकसों॥कवित्त॥जरीहैविषमयुरागिरीहै
चेतऊरधरीहैचहूंघांव्याधिवृंदनिकीघरियै॥कंचनसेतन
कौंग्रतनुवृथावारतुहैरतनुउच्चारियेजतनुहरिकारियै॥
ग्रैसीगतिदेखैहैतोमरतिपरेखैहुवुवाटग्रोग्रनलेवैना
केनेरजातउरियै॥लीजियैजगतजसुकीजियेधरमु
हरीजियैसुंदरसनुताकोतापुहरियै॥४१॥दोहा॥मैंदे
देयोलयोसुकरछुनतछिनकिगयोनीसावालनुम
रोञ्जरगजाञरकेलगेग्रवीर॥टीका॥यहनाइक
प्रोषितपतिकासवीकोवचनुनाइकसों॥कवित्त॥
कत्यप्रांनप्यारेलालविछुरेंतिहारेंअवरहियोवज
बालकोअनंगदुखदागेपोहै॥कोंवरीनिपटकम

नाइ गई फूलन जिमि दुखुअनफूलभो समूह सुखु भागे गौ है।।
तुम जु पठायो सो मैं दीनों जाइ न्ना हिकौ निलौ नौं अतिरि
सुकरि चितु अनुराग्यो है।। कर परसत ही छुनकि गयो=
नी सअरग जा वाके कर मैं अवी रज्ञेकै न्लागे गौ है।।७२।।
दोहा।। याकी जतन अनेक करि नैकन छोडति गैल ज्ञ
री घरी दुव री सु लगति री चार चुरैलै।। टीका सहनाइ
काकी लगनि ससी को वचनु नाइक सो।। कवित्त।। री
मनि री मन भोइ गई हिय मैं धसि प्रीनतु मांऊ थथ गौ है
हौं करि याको उपाइ सबै हरि जंत्र नि मंत्र नि हू नडगौ है
देहसुघाइ करी दुवरी डरी वावरी ज्यों सुधि वुद्धि भगौ है।।ये
तै मैं नाको न छोडति गैल चुरैलकै ज्ञरावरी चार लगी
है।।७३।। दोहा।। पिय के ध्यान गही गही रही वही ह्वै नार
री।। आपु आपु ही आरसी लखि रीक ति रिझवारी।। टी
का।। ग्रह नाइका की लगनि तन्मय ना ... वच
नु सखी को।। कवित्त।। ने ... मन

नितोग्रंगईयहवांनिनईहै ॥ धांनहींधांनमेंग्राजुव
कूवृषभांनसुताभईकांन्हमईहै ॥ ग्रारसीमेंलपि
ग्रापनीमूरतिग्रापुहींरीझिनिहालभईहै ॥ पूरनप्रे
मकीजोतिजगीग्रेउरग्रांनिसेवेसुधिन्नूलिगई
है ॥ ७४ ॥ पुरुषविरहमाहाराजा ॥ ग्ररेपरैनकरेहियो
जेरखेरपरजार ॥ लावतघोरिगुलावसोंमिलेमिले
घनसार ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइका
कोवचनुसखीसों ॥ कवित्त ॥ काहेकोंतूंघनसारगु
लावमेंघोरिघनोघसिचंदनुलावै ॥ काहेकोंसीयरे
नीरभिजाइकैसीरपखानिसमीरडुलावै ॥ ताहिव
हाजककेंसीपरीपजरीउरग्र्यागिवरीपजरावै ॥ ये
उपचारपरैंनकरेकलजातेंपैरकिनिताहिमि
लावै ॥ ७५ ॥ नाईकाविरहा ॥ रंगरातीरातैंहियेंपीतम
लिखीवनाइ ॥ पातीकातीविरहकीछातीरहीलगाइ ॥
टीका ॥ यहपातीसखीकोवचनुसखीसों ॥ कवित्त ॥
जबतेंवियोगुभयोलालमनभांवनकोतबहींतेंप्या

ीतलफ़तिमुरझाइकैं॥नैंनजलुवरसतिमिलिवे
कौंतरसतिसरसतिमदनमदरवडभाइकैं॥अति
अनुरागसौंवनाइलिवीप्रांनपतिऐसैंमेंअचान
कहींदीनीकांहूजाइकैं॥८॥तेअकुलातिसुनोविर
हकीकातीजांनिरातीपातीरहीतातीदातीसोंल
गाइकै॥४॥दोहा॥कहाभयौतौवीछुटेमोमनतौ
हैसाथ॥उडीजाहुकितहूंगुडीतउउडाइकहाथ॥
९॥यहनाइककीप्रतीनाइकाकों॥क॥वितांजो
कुरतारचीसुसहीविधिओरविचारअकारयहीहै॥
वैरघरांनपुरांनेमुनासवुकोउकहैयहगाथकहीहै
॥सोचपर्‍योतौकहाभयौमोमनुतोंसाथ
॥गुडीकितहूंउडिओरिउडावनहारे
१०॥दोहा॥करलैचूमिचढाइसिरउर
ौरि॥लहिपातीपियकीलखविवांचति
ौरि॥टीका॥ ...

ताहि देषि नाइका की जु दसा भई सु सषी सषी सौं क
ति है ॥ कबित्त ॥ मोहन के बिछुरैं मृगनैनि चकी
सी फिरै उर मैं अकुलाती ॥ प्रीति कै प्रीतम अग्रपुलि
यौ कहूँ ये सौ आई अचान पाती ॥ चूमति चाइ कै नै
ननु लाइ कै सीस चढाइ हिये हुलसाती ॥ बांह नि
भेंटति चोप सौं चाहति वांचि समेटति छ्वावति
छाती ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ कागद पर लिषत न वनत क
तस देत लजात ॥ कहि है सवु तेरौ हियौ मेरे हिय की वा
त ॥ टीका ॥ अपनी नाइक की अथवा नाइका की तो नाइका
पर किया ॥ कवित्त ॥ पाती मैं लिषत कै सें वनति जितौ
चाह सागर कौ सलिलु चुनू मैं कैसें कीजियै ॥ कहत स
देसे उर आवति है लाज अति अधिक अँदेसे कैसें हीं दि
नदिन छीजियै ॥ मनु कैसे मानसु मिलै न कौ मधि
पती जा सौं समुझाइ जौ कौ भेदु कहि दीजियै ॥ याते प्री
ति रीति अवरात मेरे ही की वात आपने हिये तैं नीकी
भांति जांनि लीजियै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ तरकु रसौ ऊपर

गरीकरत्नजलजलछिरकाइ॥पियपातीविनुहींलिषी
ऋचीविरहवलाइ॥टीका॥सहलाइकाप्रोषितपतिकावि
रहकोअधिकाईपत्नीलिषिवेतेंजानीगई॥कवित्त॥
प्यारेकोंसंदेसुलिषिवेकोंवेठीसाहसुकेलिषतनवसो
नमतिविरहमलीनीहें॥ऐसीयेलपेटिऊलिसेपीस
जनीकेघारऊलिजाइतोहींप्रानन्नाघहाथलीनीहें॥तरता
रेपानिकेपरसपरजरीजात्ऊपरतेगरीऐसूवालिजल
भीनीहें॥वोलतहीपातीपियलातीकोंसुरतिकरिछाती
गवरिआईआंषिभरिलीनीहें॥१५०॥दोहा॥विरहविकल
विनुहींलिषीपातीदईपठाइ॥आंकविहूंनीयोंसुचि
तसूंनैवांचतुजाइ॥टीका॥यहलाइकाप्रोषितपति
कापत्रीआईयातेंदोऊनुकोविरहकोअधिकाईते
सूत्यताजानिये॥कवित्त॥विरहमरूरतेंनतनको
तनकसुधिवालअतिव्याकुलअचेतऐसीह्वेग
ई॥लिषिवेकोंलईपातीलिषतवेनेन——वेसि

ग्रलपरि पांनपतिपे पठदइ॥ त्राकौवि
कहलौ ग्रधि लागई कहैं एकसौ दुःखकौ गति ग्रैके पर
है भई॥ चपरीपक्वौंन वहजकु ग्रंकहींनीत वैवा
वि सूंने हियेकै लगाइ छाती सौं लई॥
चलत चलित लौं लैन्च लै सव सुख संग लगाइ॥
ग्रीषम वासर सासिर निसि पौ मो पास वसाइ॥
॥ यह पानीनाइक कौ नाइका कौ वचनु स
षीसौं॥ रैनि दिना रहतेई मिलेर सरंग
ऊमंग नमैं मनु डौरें॥ ग्रैसो सनेह वढाइकै दैखि
रीकै सी करी ग्रौर कौ न्ह पियारें॥ लै गयौ संग लगा
इ सवै सुख देगयौ सो चुरै रैन हौं टारें॥ पूस कौ जा
मिनि जेठ केद्यौ सव साइ गयौ ग्रव पास हमारें॥
॥ गापिनु के ग्रं सुखानि भरि
सरांग्र सो सग्र पार॥ उगार डगर नैद्धै रहौ वगर वग
र कौं वार॥ ॥ यह व्रजकौ विरह निवेदनु उधौ
कौ वचनु स्रीकृस्न कौं सखी कौ वचनु सखी सौं॥

तै॥ श्रीजदुनाथ तिहारे वियोग कहौं न परे ब्रज
को दुरसोहै॥ गोपिनु केदृगयौं वरसें सरसें अंसुवा
नि ते नीर प्रवाहै॥ गैल गली सब पूरिकै भूरि नदीन
ढिहो तिअपार अथाहै॥ देवत धीरज कौ न धरे हरि
वाह गहै विनुको अवगाहै॥४८॥ आगमपतिका
दोहा॥ कियो सयानी सखिनु सौं नहि सयान वह भूल॥
दुरै दुराई फूलज्यों पिय आगम रूल आटे॥ का॥ यह आ
गमो त्सव नाइका सो सवी को वचनु॥ कवित्त॥ ल
लित कपोल आजु मेरे सुलकन लागे आनन पे नई के
कु चोरे अरसनाई री॥ मेतो वूझी सुषमा नि ते कछू रुवाई
ठौ नि धूघर मे टाकि मुषडी ठि क्यो चुराई री॥ काहे ने स
यानु पनु वीस विसे भूले हैं सयानी सषी जनी नि सोव
री जो चतुराई री॥ फूल की सुवासु लौं विकासु पहिले
...५१ ... ७८...

९ आयोमीतविदेसतेंकाहूकहीपुकारि॥सुनिहुलसी
विकसीहसीदोउदुहुंनिनिहारि॥टीका॥नाइकु
उपपतिसौंदोउनुकौनेहहै।ताकेआगमदोउनुकें
हर्षभयोयाहीतेंपरस्परजांनिपरीसखीकोवचनु
सखीसौं॥[illegible]॥कांन्हरकेविछुरैंव्रजवालदु
हीमनहींमनमैंमुरझांनी॥ऊधवकेहेवहराइवेकौंम
नुवेठिरहीमिलिवेपरिठांनी॥सोहनुमीतुविदेस
तेंआयोपुकारिकैंकाहूकहीजववांनी॥सोसुनिदो
उदुहूंनिविलोकिलसीविलसीहुलसीमुसिकां
नी॥५८५॥[illegible]॥मृगनैनीदृगकीफरकउरउछा
हतनफूल॥विनुहींपियआगमउमगपलटनलगी
दुकूल॥टीका॥यहआगमभिस्पत्पतिकास
खीकोवचनसखीसौं॥[illegible]॥वालखरीगुरुकुल
तिहियैंनदलालवियोगविथाउरजागी॥जैसेमैं
आनिकह्योचलिकैंहुलसीदृतियासुघरीगुनुरा
गी॥वांमविलोचनकैफरकैंमृगलोचनिजातिल

रोठ निपागी॥फूलनई विनुहीपियश्रागम चारुदुकू
चुनावनलागी॥४५॥दोहा॥मलिनदेह वेईवस
नमलिनविरहकेरूप॥पियआगमश्रौरेउठीआनन
आपअनूप॥टीका॥यहआगममिस्पत्यतिकासखी
कोवचनुसखीसों॥कवित्त॥लालमनभावनकेवि
कुरेमयंकमुखीग्रतिहीविकलचितुपरयोचिताकूपहै॥
अधिकमदनपीरतीरसीवगातिहियेचारनीलगाति
जैसीग्रीषमकीधूपहै॥कीनौनसिंगारुचारुवेसिये
मलिनदेहवसनमलिनउहीविरहकेरूपहै॥कहेश्र
विकासपियआगमसुनतचटीग्रौरेआपग्राननपे
उमगिअनूपहै॥४६॥दोहा॥देखरोठमेंमिलतपि
यप्रानकेईसु॥प्रावतआवतकौनईविधिकीघरीघरी
सु॥टीका॥श्रागमोत्सावनाइकाकोवचनुसखीसों॥
कवित्त॥आयेविदेसतेप्रानपतीयोंतियाकीसुनेछाती
यासियराई॥जैननुलागिरहीदियसाधमनोजउ

मंगि हियें भरि आई ॥ कह्यो कहै मिलिवे कहे कान्ह सौं पौरि
मैं जौ लौं रह्यौ सुखदाई ॥ आवत आवत को सुघरी विधि
वासर ह्वै ते घरी सरसाई ॥ ४८५ ॥ दोहा ॥ काहि पठई जिय
भावती पिय आवन की बात ॥ फूली आंगन मैं फिरै आं
गन आंग समात ॥ सोरठा ॥ आगमोत्सव सखी को वच
नु सखी सौं हर्ष संचारी ॥ कवित्त ॥ बाल वियोग मलों
न मह्या विसरी सुधि हास विलास ह्वै भूले ॥ येते मैं आवधि
वितीत भई अरु येक कहीं साथ सवै दुख ऊले ॥ आवनु त्यों
मनभावन को सुनि कै ऊमहे सुखपुंज समूले ॥ आं
न मैं हुलसी फिरै सुंदरि आंगन आंग समात न फूले ॥ ४८६
॥ दोहा ॥ नाचि अचांन कहौ ऊठे बिनु पावस वन मोर ॥
जांनति हौं निरति करी यह दिसि नंद किसोर ॥ दोहा ॥
यह आगमोत्सव नाइका को वचनु स खी सौं सखी को वच
नु नाइका सौं ॥ कवित्त ॥ राधा यों विसाखा सों कहति जा
कौ रूप मोहि चारु चित्र पर आवरे व तैं दिखायो री ॥ जा
नियतु वही चित चोरु नंद पूतु धूतु आली रहि कौन न

हूँतेंग्राजुआयोरी॥नरलहिहोतिवहुकालत्रोसु
निवेलिफूलतसुमनुत्रैसोवनुद्धविद्धायोरी॥पि
ऊनङ्गेरूँघनभयेहरषिमननाचिनाचिमोरनु
लाहलुमचायोरी॥४८०॥टीका॥वामवाहुफरक
[illegible]॥वनभूरि॥तोतोहिसोंभेटिहेरा
वेराहिनोदूरि॥टीका॥आगमोत्सवभुजफरकत
हेंनाइकाकोवचनुवामभुजप्रीति॥कवित्त॥को
न्हविसासीविदेसरसोवसिमेनरहोवहुभांतिहिये
हैं॥वामभुजाफरकोतोभलोग्रवहोहूग्रेवेनदैचेप
नकेहैं॥केसेहूंवामनभावकोग्रवजोनारिग्रांखिन
देखनपेहों॥ताविहोंदूरियारहिनोवाहकोंतोहि
सोंगटैग्रलिंगनदैहों॥४८१॥टीका॥विछुरजियस
कोचईहिवोलतनैनेनवैन॥देहउदौरिलगोहियेंकि
यैंनिचोहैंनेन॥टीका॥यहपरदेसतेंग्रागमुरोउनु
पै

दंपतिग्रापुसमैकहतेवलुग्रोटमैयेपलुप्रांनरैना
ग्रायौविदेसवितेबहुवासरनंदलालागतिचैनके
गैना यैतोविछोहुभयैहूंनियरहिलाजतेवोला
वैनवैनेना हाउलगेगलपटाइहियेपनिचौहै
येसकुचौहैसैनेना ॥८८॥ जदपितजेरा
लवलपलकोलगोनवार तउखेडोघरकोमयो
पैडोकोसहजार यहपरदेसतेग्रागमु
ग्रागतपतिकानाइकाकौंग्योत्सुक्यसंचारि
कौनहूकाजकौप्रानपियापरदेस
मोंवहतेवितयौहै राधिकाकीसुधिकै
कसहितिहोकिनमोनकोगोनुठयोहै
दपितेजनुरीनियरोघरतदपिकोसहज
२ भयौहै ज्वडेकोपैंडो नकाटैसोकरेत्रभि
व समूहहोयेऊभयोहै ॥८६॥
मिसहोंमिसत्र्यातपरुसहदईग्रोर

पार॥टीका॥यह जे स्वाकनिष्ठा के भेद मैं सु मैं सखी
कौ वचनु सखी सौं॥कवित्त॥कान्ह सुजान के मो पैंज
रसरीति के भेद कहे नहिं जाही॥आतप कौ मिसु कैं
बहराइ दई संग और जिती वनिता ही॥देखि कहौ व
गोलभई जमुना तट केलि निकुंज जहां हीं॥राधि
का प्यारी कौं लै चल्यो संग कियें अपने तन कौं पर
छांहीं॥४८॥दोहा॥फिर के नाहन बोट दृग कौं रिपि
चकी जल जोर॥रोचन रंग लाली भई विय तिय लो
चन कोर॥टीका॥यह जे स्वाकनिष्ठा कौ भेद अन्य सं
भोग दुखिता है हार सखी कौ वचनु सखी सौं लखिता
है होइ॥कवित्त॥नेह लला ललनां गन मैं जलकेलि
रची रसरीति रलाई॥चूंम कलेर उठू बहु भांति हुरें
भरि अंक करीत रलाई॥लोचन भांवती के फिर के कर
कौ पिचकी जलधार चलाई॥सो तिके लोचन कोरनु
मांझ ...

लाजगहोवेकाजकतघेरिरहे

घरजाहि गोरसुचाहतफिरतहो गोरसचाहत

नाहि यहदंनलीलानाइकाकोवचन

नाइकसो लाजकोनगहे निजुका

जमगुधिरिहेकोहतराइवोलजहतद्यै जैसेहो

गोरसुनचाहतहो गोरसकौ चाहतहो भलीभांति

जांनतिहोंकोन्ह तुम जैसेहो कह्यप्रानप्यारव

जविदिततिहारे गुन मासनकेचोरिवेकौ घरघर

पेसेहो अवइहिवनगेसचलनचलावतहो सो

हेरीलखिहसतलसत मनलेसेहो ४९६

पहलाहारहियेलसेसनको

वेदीभाल राखतिबतखरीखरीघरउरोजनिवाल

यहजातिवरननुनाइकाको वचनुसखीसो

नानारकाहुसौंहोइ पातरोलोकुककठोरस

कुचगोचगोठिलुनाईभरीहे मेचकपातिगरे वडेडगग

ओठनुमेंअनुनाईधूरीहे हारहियेपहलाकोलसेविदु

सन कौ पथुरी की करी है॥ राखति वेनु यरी व्रजनागरि
वनजोति वरी निवरी है॥ ४६॥ दोहा॥ ट्टकौ पोई थोव
चटकौ सो सुखजोति॥ लसति रसोई के वगर जगरमग
दुति होति॥ टीका॥ यह जाति वर्नेनु सखी नाइका के रूप
कौनि काई नाइका सौ निवेदनु करति है॥ रुन दित॥ वेदो
आप रस व्रजनागरि सरसवेष दे खि मन मैं हूलकी सुधि वु
धिडगरी॥ कहू पांन प्यारे कौ हुताई रो सुहाई वैस तैसी दई
विधि लेसके लि सोभा सगरी॥ रमके वदनजोति विदसव
रनधोतो पहिरें लसति साते। रूप गुन अगरी॥ दोरसोप
कासुअतिजगरमगरति हि वगर रसोई के अपार स्त्रोपव
गरी॥ ४८॥ दोहा॥ जदपि नाहि नाही नहीं वदन लगी जक
जाति॥ तदपि भौंह हांसी भरी हांसी यै ठहराति॥ टीका॥ यह
जाति वर्नेनु सखी कौ वचनु सखी सौं नाइका हू सौं सभेद॥ क
वित्त॥ वेदी सिंगार सजें व्रजनारि अचान कमें हरनु आ मै
नहा रहो॥ पानि गहो अवलो किगु के लीअ लोकिकके लिक
लाचित चाहो॥ ६

ननानननमांहीं नदपिहंसीनरी नकुरी निमेंवीसविसे
हरातिहहांसी ४८४ दुगपथकौ हैग्रंथपुलेदहप
कोंहैठार सुरतसुषितसोदेषियतिहुसितमारमेभार
यहजातिवर्ननगर्वतानाइकाकोसोभासषीनाइ
कसोंकहै सषीसषीसोंकहैनाइकसषीसोंकहै
बोलतिवैनहहैंईहहेंलनरीकविग्रांननकौपियरीहग्रा
धपुलेन्नत्रोंसोहेंसेलोचनदेहथकोहेंसेदारसरीह ग
वीकोभारधरैंसुकुमारिजउदुवतोनननारिवरीह नी
कीतउग्रातिलागतिहेमनोकेलिकलोलकेरंगभरीह ५
ज्योंकसतोंचुहरीचालतिज्योंचिहरीत्योंनारि
देविसीगतिसीलेचलतिचातुरकातनहारि
यहजातिवर्ननुनाइककोवचसषीसोंकविह्कोउक्ति
ज्योंकसत्योंहीचलेचुरकोऊघरेंभुजम
लवडोदविभारी चालकलाईकीमेरनिग्रीवकौठो
निजीतेंटरेनहिरारीभौंहउचैतिदेनारिलोच
नेतिक्रिधोंगति रूपकउज्यारी पातुरमानों मने
जमहीपकीचातुरकातनहारिनिहारी ५०१

मुउघारिप्योलषिरहतरसौनगोमिससैंन॥फूरकिप्रौठपुल
कतभयेगयेऊघरिसुरिनैंन॥टीका॥यहजातिवर्ननुप
रिहासमषीकोवचनुसषीसों॥कवित्त॥प्रांनपतिप्यार
तलिरषिप्रगलोचनिदुकूलगौटैंकीनोपोटिरहोमिसुक
रैकैं॥वाटेप्रोचोपचारहैहैंहैरेठिगप्रारेमुषुनिरष्योऊघा
रिभूरिहितुहियेंभरिकैं॥कसप्रांनप्यारेकेविलोकित
मयंकमुषीसैंननैंमैनरहोसुमनुमिसुगयोटरिकैं॥गातु
पुलकितभयेऊधरमुलकेप्रायेलोचनललकिमिले
प्रापुहीऊघरिकैं॥५०२॥दोहा॥नहिन्हाइनहिंजाइघ
रचित्तचहूटैंगोसरतकितीर॥परसिफुरहुरीलेफिरति
विहसतिधसतिननीर॥टीका॥यहजातिवर्ननन्हाइका
परक्रियाक्रियाविदग्धासषीकोंवचनुसषीसों॥कवि
त्त॥न्हाइवेकौंजमुनागईवालतहांवनितानिकौंहेम्र
तिभीरो॥तौंहींप्रचांनकनसकैहैकान्हठपस्योनव
नागरनीरो॥चाइचुभ्योचितुन्हाइसुकोंनुगयोन

सिज्ञानुकपातुसरीरो ॥ अंजुलिलीसभैरंगहिडारतिना
कसकोरिकैहयहसीरो ॥५०३॥ दोहा ॥ मुखपखारिमुखु
रुभिजैसीससजलकरुक्वार ॥ मोरऊंचेघूंटैनितिन
रिसरोवरन्हार ॥ दोहा ॥ यहजातिवर्ननकविकीउ
क्तिहोइसखीकौवचनुनाइकसों ॥ कवित्त ॥ वेठिकौ
रपखारिवैक्यौंननुरुघुभिजेजलकेसनिछैगै ॥ आर
कैकारसोंदुसराइकधोंपुरुखोसीसकोचीरभिजैगै ॥
आरपंकजदोऊपचौंधरिमोरऊंचैकटिवीनलचैगै
यौंव्रजवालसरोवरन्हातिमहाछविसोंघुटुवांनि
तेंनचैगै ॥५०४॥ दोहा ॥ विहसतिसकुचतिसोदियेंकु
चअंचरविवधार ॥ भीजेपटतटकौंचलीन्हाइसरो
वरमांह ॥ दोहा ॥ यहजातिवर्ननकविकीउक्तिस
खीनाइकाकोसोभानाइकसोंदिखाइवेकोंकहतेसं
भवे ॥ कवित्त ॥ देवदिवाकरकौंकरिवंदनुन्हस्व
हैमनहींमेंमनावति ॥ वांहदियेंकुचअंचलवीच
लजाइरहिधैहसिजेननवातें ॥ भीजिदुकूलकेल

टाइमहाह्वविकंचलसेतनढारति॥योंब्रजनौरिरूप
जागरिन्हाइसरोवरतीरकोंग्रावति॥पं०॥दोहा॥
उहधावतिपैडोधिसतिहसतिग्रनागतिरीर॥धस
तेनइंदीवरनयननिकालिंदीकेनीर॥टीका॥हैये
जातिवर्ननलाइकाकीचेष्टासखीसखीसोकहति
है॥कवित्त॥न्हाइवेकोंग्राईग्रतिरीकमेउराईहैयेक
सप्रांनप्यारेकोसरूपुहरसतिहै॥इंदीवरनैंनोंग्रन
गवतिग्रनेककारभांतिपवरकालिंदीकेनसलि
लधसतिहै॥परसिउसोरकारकोरिसिसोभानिधां
नासिकासकोरिमुरमोरिविहसतिहै॥वरनुप
मारेतिहैवाकेदृगढारतिहैगुलफधसतिग्रति
रंगुवरसतिहै॥पं०॥दोहा॥ग्रोठऊंचेहांसीभरे
दृगभौंहनुकीचाल॥मोमनुकहानपीलियोगि
यततमामूरवाल॥टीका॥यहजातिवर्नेनु

कोकोवचनुसमीसो ... मेनिरखोग
जियकोगतिजांनतुकोनुकहजुवियोरीओ
रूपकोरीरमभुभीचितजांनतिहेंहिविमरे
हांसीभरीचयमोंहनु कोद्धवियोठं
ारवियोरी पीवतल्लाल्लतमा केह
नमसनुपीनलियोरी ५७
चिमरभीतिदेऊलमिचिते
इंहूंनुइंहूंनु केचूं मेंचारक
तिवलेनुइंहूंनुके
नुसथीसों ... ग्रा
रकोनोविलासुमह
चाहिचहूंधों वियेजव
देनसचंतरभीतिदुवोऊ
कोतिगुठांन्सों चालकपो
वनुकेच्चतिहेंसुधुमान्सों ५
वनुविचकरऊवैकियलिचोंहे

केपिया लगी विरी मुख देंन॥ टीका॥ यह जाति
वर्नन नायका कौ सामास सखी सखी सों कहति है॥ क
बिता॥ कान्ह कहो अति हेहि तुके तव राधिका के
जिय में यह आई॥ यो वनाइ दुराइ कपोल वि
ये रत नैनन कछु मुसिकाई॥ वीरी वनाइ लई क
र कंज पवै वे कों मंजु भुजा उकसाई॥ योंहित की
सरसाई विलोकि भई मनमोहन के मन भाई॥
दोहा॥ नाक मोरि नाहीं कैके नारि निहोरे लेइ॥ छु
वन ओठ विच आंगुरिनु विरी वदन प्यो देइ॥ टी
का॥ यह जाति वर्नन सखी को वचन सखी सों॥
कवित्त॥ आजु दुहू कौ विलासु अली में दुरे दुरे सो
कहौं नहीं आवतु॥ नंदलला अति हेहि तुके व
षभानकुमारि कों पान खवावतु॥ ओठनु सों विह
अंगुरि छ्वै मुसिक्याइ कै नैनन सों नेन

नासिकामोरिमरोरिकैंभौंहकौरेतियनाहितुमासु
मुपावतु ५१० ||दोहा|| वतरसलालचलालकी
मुरलीधरीलुकाइ ||सौंहकरैभौंहनुहसैदैनकहै
नटिजाइ ||कवित्त|| यहजाकापरकियप्रोढाजाति
वर्ननसखीकोवचनसखीसों ||कवित्त|| आजुव्र
जीवव्रभांजनलीमनमोहनसोंरसवेलिटरीहैवी
तनकेचसकैसुरलीमुरलीहरिकोदवकाइधरीहै
ज्योंज्योंहहारिमांगैंललावहत्योंत्योंकहूंइठलाति
धरीहै दैनुकरैमुकरैहसिभौंहनुसौंहकरैरसभी
रभरीहै ५११ ||सवैया|| गदरानेतनगोरटीऐपनआ
डलिलार हहूठेनदैइठलाइदुगकरतिगवारिसुभा
र ||सवैया|| यहजातिवर्ननलाइकाकीसोभानाइकु
सखीसोंकहतुहै ||कवित्त|| सोभाकेभरतभरीरूपके
सेसांचेंटरीविनुहींसिंगारद्दविनहीनपरतिहै ल
लितलुनाईसमेंगदरानेगातमेंसरसतरुनाईअ
निभरीओरभरतिहै ||कवित्त|| दुरारेवदनपरऐपनकीस
हेआडतेसीयेचिवुकगाडमननकोहरतिहै सह
जसुभाइइठलाइकैंगंवारिगोरीहूठैंनदैचलाइकै
नचाइनकरतिहै ५१२ ||दोहा|| नाकचढैसीवी

रेजितेढवीलीढेल॥फिरिफिरिभूलिवेहेगेहेपो
ककरीलीगैल॥टीका॥यहजातिवर्ननसखीमोवं
नसखीसों॥कवित्त॥सखिजातचलेदोउतीरथ
पंथऊराहनेपाइनुरंगुढेरें॥वहप्यारकीरीझरिझ
वनिप्यारीकोमोपेनक्योंहूबखानिपरें॥ग्रातिना
जुनेढेलढवीलीतियाजितनाकसकोरिकेंसी
वीकरें॥कविकस्तनेरेइहिंचाइपग्योतितजांनि
कैपीतमपांइधरें॥५१३॥दोहा॥जालरंध्रमगअग
नुकोकछुऊजासुसोपाइ॥पीठिदियेंजगत्यारसोडो
ठिझरोखांलाइ॥टीका॥यहजातिवर्ननसखीकोव
चनसखीसों॥कवित्त॥वालकोदेहकोदीपतिभूरि
सुपूरिअराढविढाइरत्नोहे॥जालदरीचिनुतैंकढि
कैंवढिजोतिनुकोसमुदाइरत्नोहे॥त्नालभयोगव
रेठगमूरिसोषाइविकाइरत्नोहे॥पीठिदियें
गत्यांवहडीठिझरोखालगाइरत्नोहे॥५१४॥
हेचनी॥दोहा॥दो ॥ ...
यार ...

टीका। यहजातिवर्नेनसखीकोवचनसखीसे
एइनहीपवनेहितकीगतिऐसीकूंअवं
नलहीहै रोउ भरे अतिचाइभरे निसिदे सरहे
मेहचितहीहै चोरमिहचनीखेलहिं खेलतकोन
हूंभांतिअघातनहींहैं ज्योंहीदुरेंकरसोंलपट
केजोछवितेलपटेंऊरहीहैं ५१५ दुगमि
त हचेंअगलोचनीभरेंऊलटिभुजवाय जोंनिगई
प्रियनाथकेहाथपरसहींहाथ यहजातिव
र्नेनसखीकोवचनसखीसों वैठीहुतीवृ
षभानकुमारिअचांनकआयोतहांगिरधारी प्यारी
केलोचनमीचिलयेऊनिहींभुजलोटिभरेखोअक
वारी पीतमकेकरकेपरसेंऊमगेपाऊरआनदवु
द्धिविचारी याहीतेंवामनभांवनकोपहिंचांनि
हेसीसुविचछ्नप्यारी ५१६ प्रीतमदृ
गमिहचतप्रियापांनिपरससुखुपाइ जानिपिको
निअजानलोंनेकनहोतिजनाइ यह
जातिवर्नेनसखीकोवचनसखीसों
खेलतमेंकहूंपाछिलीघातेंअचांनकहींचलिआये

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
रौसिनिके हुव [illegible]
ई॥सेइपरौसि [illegible]
नन्ह्याई॥पीतमकेजु सदेसहु [illegible]
कैचतुराई॥एतेपै मांनुष सौमुसि [illegible]
टैघरीविनु साई॥५१८॥दोहा॥ चिततर [illegible]
जेवनतु वसिपरौसैकेपास॥हातोफ [illegible]
केटाटी गोटऊ सास॥टीका॥ [illegible]
एगुनाइ केकौ [illegible] नाइको [illegible]
[illegible] नमिलौ जबलैतवलै [illegible]

दिनराति ॥ वासुपरोसपेनासुतउगुरलोगनुकोम
तिसोचककाति ॥ जोतरसेमिलैतेनवेमेयमिला
मनुकीचवल्लीसरसाती ॥ टाटीकोओटउसास
सुनेफटिहै कहजारकहातिहैछाती ॥
ढीठेनोदेवोलतिहैसतिप्रौढवि
लासअप्रौट ॥ त्योंत्यों चलतसुपियनयनद्ध
कयेद्धकीनकौट ॥ यहमदपानसमयसवी
कोवचनसखीसों ॥ आजुवासनीकीवारनी
कोमेविलोकीवहसोभामरनेननुमेअवलौव
सतिहै ॥ ज्योंज्यों वह ढीठेनोदेदेवोलनिसरसैवैन
नागरिनवलीहरिहेरिकैंहसतिहै ॥ कैंहकवि ना
यउरलागिवेकोललकतिप्रौढाकेसेसकल
विलासविलसतिहै ॥ त्योंत्यों द्धकीतियनैनद्ध
कोअयसपीकेनेनपलकनहूंकोगतिभूलीर
रसतिहै ॥ ५२० हसिहसिहेरतिनवलीति
यमदकेमदउमगाति ॥ चलकिवलकिवोलतिवच
नललकिललकिलपटाति ॥ यहमदपान

समयसषीकोवचनसषीसों॥कवित्त॥मोरन-
यनमधुपांनकेनवेलीवालकरतितमासेकछूसो
नरसातिहे॥हसिहसिहेरतिवसेरतिदुकूलवेच
केऊकिपरतिनकाहूतेंसकातिहे॥जोवनकेर
नरीमदकेतरंगभरीवारनीभूऊमंगभरीअति
मदातिहे॥वलकिवलकिवेनवोलतिमयंकमुषी
लाकिलाकिलालकरलपरातिहे॥५२१॥दोहा॥
तिचंदनवेंदीरहीगोरेंमुहनलषाइ॥ज्यौंज्यौंमद
लीचटेत्यौंत्यौंऊपरतिजाइ॥टीका॥यहमदपां
मयनाइकाकीसोभानाइकुवेहेअथवासषीसोंव६
वित्त॥कछुअजुलषीमदपांनसमेंललनाकोप
जियतेनटेरे॥कविकसकेहेवलवेंललवेंमन
मोहनसोंहसिअंकभरे॥दुतिचंदनकीविदुलीको
रहीमिलिगोरेलिलारनजांनिपरे॥अरुनाईचटे
मदकीमुषज्यौंहीत्यौंत्यौंहींत्यौंजोतिघरीऊघरे॥५२२॥
दोहा॥निपरलजीलीनवलतियनहकिवारुनीसे

३। त्यौं त्यौं युति मीठी लगै ज्यौं ज्यौं ढीठ्यौ देइ ॥ दोहा ॥
यह मद पान समो सखी कौ वचन नाइका सौं युथ वास
वीसो ॥ कवित्त ॥ लाज भरी युति हीं नव नागरि जा
कौ सुधाई सुधाई कै गाई ॥ ताहि हँ कौ छवि देखिवे कौ
पिय प्यारे सुराई दै वाल नी प्याई ॥ ज्यौं ज्यौं ऊमंग ऊठै
मद कौ तिय त्यौं त्यौं निसंक ह्वै देति ढिठाई ॥ ढीठ्यौ
ई लगति नीकौ महा वह मानौं भरी वहु भांति मिठाई ॥
॥ दोहा ॥ वा मत मास कौ करि रह्यौ विवस वारुनी सेइ ॥ झु
तिहंसति हंसि हंसि झुकति झुकि झुकि हंसि हंसि दे
॥ टीका ॥ यह मद पान नाइका कौ सखी नाइक सौं
कहति है सखी सखी हूं सौं कहै ॥ कवित्त ॥ वारुनी
विसेइ मन मोहन सौं मानु ठानि विया जु मग को च
लित मास कौ लसति है वार तरुनाई मैं निकाई
विकाई त्यौं त्यौं गोरे मुख पर ओस नाई सरसाति है
वहू वदन पट घूंघट कैं ढांकि लेति कवहूं ऊघारि दे
रगुवर सति है झुकति हंसति हंसति झुकि झुकि
सति हंसि हंसि झुकि झुकि झुकि कै हंसति है ॥ ५२४ ॥

नै

रूपसुधाआसवछक्यौआसवपीयतवैनैंन॥प्या
लेओठपियावदनरसोलगायेनैंन॥टीका॥यह
मदपांनसमयनाइकाकीसाभादेखिनाइकुछवि
रसौसुसषीसषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥वा
रुनीकोवनिआयोसमोकहैनवनैकछुकौं
तिगुभारो॥प्यावतिरंगभरीम्रगनैंनिरसौ
दुतिकोभरिभौंनउज्यारो॥आसवरूपसुधा
कोछक्यौमदुपीवकौभूलिगयोसुधिप्यारो॥
प्यालेसोंओठप्रियामुषनैननलगायेंरसौछवि
कौमतवारो॥५२५॥दोहा॥षलितवचनुअध
षुलितदृगललितस्वे[illegible]दकनजोति॥आनन
दनछविमदछकौसरोछवीलोहोति॥टीका॥
यहमदपांनसमयनाइकाकीसाभासषीसोकह
तिहै॥कवित्त॥नैनकछूउघरेसमुदेअरुवैन

नुमेसिथिलाईरसोलो स्वेदकेवूंद निसैंाजलैके
ग्रन्नद्युति ग्रंजनपे चटकोलो तेसोयरूप
जागरिनागरिसोर तिसोभसनोगरवोलो
सजगीतनजोवनजोतिहकैमदहोतिसरोपे
वोलो ५१६
द्रुमिरसालसोरभसेनैमधुपमाधुवोगंध
रठोरजोरतजपतमोरजोरमधुग्रंथ
यहवसंतरितुसमयजोमानवतीनाइकासों
सखीकहेतोमनाइवोसोहजोनाइकानाइसों
कहेतोस्वयंदूतहोकेसेनाइकहूकोकरिवो
संभवे फूलनिकरसकेचसकेग्रवमोहि
थकेसववेलिजितीवन माधुरीकेमृदुगंधसनेग्र
वांविंदुपरागसोंपागिरहेतन मंजुरसालकेसौर
भसोंमिलिमत्तभयेसुरत्योंनरहेमन ठोरनिठौर
निजोरनिकूमिजुकेमधुपुंजधमुद्धावतकेगन ५२०
फिरिघरकोंजूतनपथिक चलेचकित

नभागि॥ फूल्यो देषि पलास वन समुहास
हृद वागि॥ टीका॥ यह वसंत समये नाइका
वचनु नाइक सों होइ तो प्रवत्स्यतपतिका
सखी को वचन नाइक सों होइ॥ का वेल्यो देखो
तुराज को समाजु वनि वागनि में प्रफुल्लि
सु मनरहे हैं जोति जागि कें॥ कुसम पलास
सिंगार जांनि चहूं ओर चें चुनि सोचि पत च
ार अनुरागि कें॥ आगें तें विलोकि रूखें मैंन
र चित उल्लनूतन पथिक भूले भर मद वागि
॥ परीं उर गेल्ल परदेस को विसारी गेल्ल्यो
ई चल्ले घर को चकित चित भागि कें॥ परत्या
॥ वन वारुन पिक वट परात्न विविर हिनुम
नु मैंन॥ कुहे कुहो का हि कहि ऊठत कारि कारे
राते नैंन॥ टीका॥ यह वसंत समय सखी को व
चन नाइका सों होइ तो मनाइवो न क को वच

न समो सो होइ तो आपनी गरुआ कवित्त मैंन
महीपकौ मानि मतौ द्रुम डारि चढ़े चहूँ ओर निरं
कूत देखत सों फिर होजन कौं करि लोचन काल
कुहे कुसैकूकत । बीस बिसे बनवारि नु मैं वर
पार बसें पिक भूलत तू कत । प्रांनपती बिनु क्यौं
बचिहै गुवदाऊ परें रिपु क्यौं टरि कूकत । पर्ण
दोहा दिसि दिसि कुसमित देखियत उपवन बि
पन समाज । मनो वियोगनि कौं कियौ सरपं
जर रितुराज । टीका यह बसंत समय है सखी
कौ वचन नाइका सौं होइ नाइका सौं होइ तौ प्रव
त्स्यतपतिका कवित्त आयौ है मदनु नृ
तिपालकौ हुकमु पाइ आमिल प्रवल ऐसौ त्र
मकु चो औरै मानु गए तौ रवि कौं अधिक
प्रचंड देखौ सब ही के मन ऊर अनुराग उमगा है
है

नउपवनजिततितञ्चवलोकियतुदिसिदिसि
समसमूहक्षविद्धायौहा॥वेरु बांधिवियमवि
ागिनुकेराकिवेकोंमान्योरितुराजसरपंज
वनायौहा॥५७॥ ... हेत्र्यौरसोंढूगईटरी
ाधिकेनांम॥दूजेकारिडारीसरीवोरीवोरंग्रांम॥
ीका॥यह वसंतसमयनाइकाकीअवस्थासवीन
कसोंकहतिहैसवीसवीरूसोंकेहा॥ ... मोह
सोंविछुरीजवतेंतवतेंनलहीकल्येकघरीहै॥नै
ननुनीरुटरैनिसिवासरव्याकुलवालञ्चचेतभरी
... ऐसीदसापहिलैहीहुतीपुनिञ्चौरभईसुधिञ्चो
... लनैंदेयोवसंतकेमोस
...वारीकरीहै॥५८॥ ...
...नवसतञ्चहिमयूरमगवाघ॥जगतुतपो
... गकियोरीरघराघनिदाघ॥टीका॥यह्यो

सम
समरिंतुसनाइकाकोवचनुनाइकसोंकहै तौप्रवत्स्यतप
गतिकासखीकोवचननाइकासोंनाइकसोंकहै
हैंतौवरसोंनवरहौनदैहै ग्रीष्मरितुकौंयोंहिं
रि सूंडनुकौंघूंघटगहतै हैं जारितुकेउदस
नरहरिन्याइसोरतनतपोवनकीरीतिनिवसतै है
रितुकौंक्हातौतरवैठतहरिनन्याइछांडिचितठा
नुविरोधविसरतै है देखिरितुग्रीषमकौंतौवन
प्रतापुवसुंदरलांगैकरलांगैपैठतवसतै
वैठिरहिअतिसयनवनपैठिसदनतनमें
देखिदुपहरीजेठकीछांहोचाहतिछांह
ग्रीषमरितुनाइकाकोवचनुनाइकसोंस्वयं
सेंहींनाइककोवचननाइकासोंजोनाइककौ
नाइकसोंकहैतौप्रदेसकौनिवारनहोइ
सलिलसुखातजातजलचरज्योंपुन्नातघ
अंगसवजलउठतवारिवारिकैं कौंकौविक्रम

रअनिलसवपावकहोहतेकोनुरैहधीरधरिवैं॥ग्री
षमकेआतपकोभीषमप्रतेपुतकिटिकिनसकातिकं
हूंडोलीडोलेडरिवैं॥सघनविपनतहधांनैंकूपकंज
निमेंदोहोविरमतिकहूंदाहन्यटकरिवैं॥५८३॥दोहा
॥नाहिनयेपावकप्रवलेलुवैंचलतिचहूंपास॥
मानुंविरहवसंतकेंग्रीषमलेतिऊसास॥दोहा
यहग्रीषमसमयनाइकाप्रोषितपतिकानाइकोंको
वचनुसखीसों॥कवित्त॥चंदुकरमंडलतेंमंडिकेंअ
खंडधारवरषतपावकप्रचंडकिधोंयहरी॥कसप्रान
प्यारेकोदुहाईधोंआईवडवानलकोलुवेंनाथवचाति
दुपहरी॥चंदुकरमंडलतैंपावकुनवरखतुलुवैंनघ
लतिजिन्हेंदेखिमतिहहरी॥मेरजानप्रीतमवसंत
कोवियोगभैंयेंग्रीषमविरहिनीऊसासलेतिनहरी
लेचुभकीचलिजातिजित

नपैरैपहिचांन्यौं॥ह्यौसनिसांकौविवेकुसुतोचकई
चकरानिकेवोलतजांन्यौं॥५३॥दोहा॥कुटंग=
कोपतजिरंगरलीकरतिजुरातिजगजोइ॥पाव
सगूटनवातयहवूटनहूंरंगहोइ॥टीका॥यहव
र्षासमयसखीकोवचनुनाइकासेंमनाइवो॥कवि स
त॥पावसआवतहींवगपुंजनिमोरसोंकूकोंमचाइ
दईहै॥चाइभरीवहुभाइभरीमिलिरंगरलीवनिता
निवईहै॥कोपप्रसंगुकुटंगुनिवारिनिहारिघटाऊ
गईजुन्हईहै॥गूटनेहेयहवातगुसांइनिगूटनदेखि
कुरंगभईहै॥५३॥दोहा॥धुरवाहोंहिनअलिउठे
धुवांधरनिचहूंकोद॥जारतआवतजगतकोंपाव
सप्रथमपयोद॥टीका॥यहवरषासमयनाइका
प्रोषितपतिकानाइकाकोवचनसखीसों॥कवि
त॥मेरौकह्योमांनिजियनिहचैंकैमांनिआलीप्रथ

महा पावस केवल ऊपर तैं ॥ सीत लु समीर समिलो
तैसोई सहाइ करि विरही विचारे कहि कैसें उवरत
हैं ॥ जगहि जरावत ये आवत घुमडि घन तारी ता
स वगहु लसो सये न र तैं ॥ चपलान चपल ज
र झाल ज्वाल जिकी तैई धूम धारे घन घुरवा
परत हैं ॥ ५३ ॥ चाहो ॥ काबे ॥ ऊ अचिर जीवी अमर निध
रका फिरो कहाइ ॥ छिनु विछुरें जिन कीन रहिन
पारस आव सिराइ ॥ दोहा ॥ यह वरषा समय स
बी जीव चतुराई कसौ नाइ कासौ नाइ कै को सबै
सौं का विहू कौ ऊ जिन हैं ॥ कवित ॥ घोरि घटा घुमडे
चहुं ओर करें बहु भांति नु सोर विरावौ ॥ भूमि हरे
वह सीत समीर गहैं गति मंद सुगंध सुहावौ ॥
मैं छिन एक वियोग भयो जिनकी गई छूटि न
नो ॥ वे चिर जीवी भये जमकें अ जरा मर क्यौंन
सं कहावे ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ अवतजि नाऊं

ग्रायेसांवनमासु॥वेलुनरहिवौवेमसोकैमऊँस
कौवासु॥टीका॥यह वरषासमयप्रोषितपतिकान
काकोवचनुसवीसों॥कवित्त॥जोलौंमनुरसोंह
तोलौंनऊसासींगाथग्रागयेंविरहदुखसूलनिवोस
हिवौ॥प्यारेनरनंदनकौग्रावनग्रवधिग्रासेतैसैंतैसें
कोजीवग्रवकहाकहिवौ॥चायेसवीसांवनुनग्राये
नभावनुरीग्रवतूंउपाइनुकौछाडिवुधावहिवौ॥कद
वकुसमकीसुवासुकोप्रकासुभयेंवेलुहैनप्रांननुकोधु
नलसैंरहिवौ॥५४०॥दोहा॥तियतरसौंहमुनिकियेन
रिसरसोंहैंनेह॥परवरसोंहैंहेरहेजरवरसोंहैंमेह॥टीका
यहवरषासमयरेकविकीउक्तिग्रनुस्वयंदूतुनाइका
कौवचनुनाइकसों॥कवित्त॥हरिजूपुरमिजलभरेव
दिनीउपवनचहूंग्रोरसोरमकेऊमगिऊरेरहे॥मह महलन
कौलनहलहीछविछाइरहेकु ... कोलाह

छुवैरहे । उमडि घुमडि परसतु सौ गुलमि घनसौं हैं सरसैं
हैं बरसैं हैं जु कि छ्वैरहे । हेरि हेरि मुनि मन तिय परसैं है
होत इत घन वृंद अनुराग के उनेरहे ॥ ५४१ ॥
चालित ललित श्रम स्वेद कन वलित अरुन मुख तें
न । वन विहार थाकी तसनि थोरे थकाये नैंन
यह वन विहार नाइका की सोभा नाइक की आसक्ति सखी स
खी सौं कहति है । सुषमा कलित तस नाई कीउ
राई मांझ उमगि प्रकास झुकनाई के सुहाये हैं । तैसे ई ललि
त श्रम स्वेद कन झलकत जगमगि जोति के समूह सरसा
ये हैं । केवीक मद घिरे हैं अनमेष ह्वै के चलत नवे
हूं पगि छै सै री जह्वाये हैं । विपरीत विहार रस छकी व्रजच
न्द्रा कौ थाकित प्रभा मैं सरसे लोचन थकाये हैं ॥ ५४२ ॥
वृजेंदु नो हठि चटै तास ह्वै वनसकाइ ॥ ६
कोटि हुमचौ मच कलचाकिल चाकि वचि जाइ
हरवासमय हिडोरे की सोभा सखी नाइक सौं कहति है

सीकोवचनुसखीसें॥७॥ विलग्न॥ फूलिवेकोघरसकोल
न्यौहेइनुद्योसनुमेंछांडिसवुठोरजहांघोरठहरातिहै॥
वरजियोज्योंज्योंत्योंत्योंमानतिनडकनन्यारह्वैवेंचटप
तिसकुचीतिनसकातिहै॥गातकीलसुधिसन्हारक
रत्यंचलकीहारविलुलितीपडुरीनुरगुरातिहै॥म
चेदुन्नूयोरवेहिंडोरकोमचककाटि टूटतिसोल
चकिलचकिवचिजातिहै॥४४॥सरदवियोग
॥घनघेराछुटिगोहरखिचलीचहूंदिसिराह्॥कि
योसुचैनोन्याइजगुसरदसूरनरनाह॥६७॥य
सरदसमयराजनीतिप्रसंगकविकीउक्ति॥कवि
॥घनघेराछुटिगयोद्यधिजारोनिटिगयोविसरप
तापुजगमग्योदविद्याईहैं॥कहैंजौविक्रसउरहर
पेनिरखिचलेपथिकचहुंगें ——— ह्वैकेंष्टि

लेहियकमलज्यमलभयेजलथलघटेज्यपद्मलनऊ
हेजनगाइकें॥सरदसुभटसूरनाहकौनिकाईनीतिदे
सैसवजगतुसुवैंनीकीनीजूहूईकौं॥५४॥[illegible]॥चर
नसरोरुहकरचरनदृगदंजननुखचंद॥समैंपाइसुंद
रतारदकाहिनकरतुकनंद॥ [illegible] छंदसरदसमयकवि
कीउक्ति [illegible] सोरठा॥कलनसरसीरुहचरनकरजि
नहिजगतुछिबिसदनगनाइई॥कलापरिपूरनसुधानि
धिवदनतुलसैजाकीसरदमुनाइई॥कविकहुकहतनया
वई॥देखियतअंजननरतकजरारैनैनकैहेविकसे
थैंजीऊसबुपाइई॥सबैसुखपुंजसनीसुंदरसरदआइ
कौनकेनजरमैंअनंदसरसाइई॥५५॥[illegible]
[illegible]॥किधौसबैजगुकामबसजीतेजितेजेहहु॥कुसम
रहीसरधनुसरवगहनगहनदेइ॥[illegible]॥यहसं
तसमयकामोहीपनुत्रयधिकहोतहेसुनाइकवनावानी

कासषीसोकहैजैसैहासषीकोवचनसुभेवैकविकोउ
कहै॥कवित्त॥सिंगीसेमुनिसिद्धईससेसतकतसेकै
कौनेविकलगनैकैसोकाहिकाहि॥मानियतुजाकोनौ
डमैत्रसंडधाकुजीतमहिमंडलकैअजीतौसोजितोक
गहि॥कहैकविन्नसजिनफूलहीकैग्रावुधसौकैसकै
वलीभैरसाहसुइतोकुपाइ॥जीतेजिहितौन्मैलो
कैसोवस्तुमनमथुजगरनुनगरन्नैरैनुसरचांपु
करताहि॥५४॥दोहा॥ज्यौंज्यौंवटतितिभावरीत्यौं
ौंवटतअनंत॥ग्रोकग्रोकसवलोकसुवकोकसो
कहैमंत॥टीका॥यहहैमंतसमयकविकोउकिसु
ग्रोहैसंजोगस्रंगारमैवर्नैविप्रलंभहूमैकोककोप्रसं
गग्रनस्पक्लिहूजांनियैं॥कवित्त॥हिमरितुग्राईभईसा
तसरसाईहेमिमभाजिगईगरमकरेजग्रचलनमैं॥वा
सरकौलघुताविलोकिमुरिजानकोकसूक्ष्मदेहधार
सौतेजुतपनकेतलमैं॥कहैकविन्नसज्यौंज्यौंरजनी

॥ बढ़तिसौंत्यौंउमगतुमोदुअनुरागिनुकेमनमें॥ गो
लअोकलोकलोकवादतअपारसुखसोकैहैवियोगी
कैंबिकौकनुकेगनमें॥५७॥सोरठा॥मिलिबिछुरैहै
तोबिछुरतमरतदंपतिअतिरसलीन॥नूतनविधिहे
मंतसबुजगकेजुराफकीन॥दोहा॥यहहेमंतसमय
सखीकौबचनजुइबासौंहोइतौमानवतीअरुतीव
हकौउहिहोइ॥कबित्त॥देखुयेजेरेसियेंदुहूंनुबी
चुकेप्राननहितकौउमंगनईलईसंगरहतैहैं॥ ग्रीर
सखीजुदेउमिलेहींविहारकरेंकैहैकविकह्यचित
येतिऊमरहतैहैं॥ बिछुरैंनिमेषहूतेजीवेकौभरोसो
नांहिअतिअकुलाइमैंनविपांनसहतैहैं॥ औरयेव
रेयौहिमरितुकौनवलरीझगतमेंसबहीजुराफ
कैरहतैहैं॥५८॥ बिछिरतिहिदुहूनुजीनो॥दोहा॥ अ
नुजातनजांनियतुतेजरहितलखिसियरान॥ घरहि
जमांईलौंबसैरौखरोपूसदिनमान॥दोहा॥ यहहि
सिररितुसमयदेउनुकेहितकौअधिकाईहैसु

त्रञ्जकौलागतिहैसुसवीदिनकौलघुताकहतिसवरह् श्री
दिनकौनिदाकौ॥ कवित्त॥ वांवनदुगदो विभारीवति फ़
मोहीत्यौहीविंयोगिनिकैहियोअकुलातुहै॥ दंपतिऊम वे
गिअनुरागऊझिलतऊरयैकैरतुमिलिहुहै नुकोग
है॥ पूसकोदिवसुलघुमानुभयौअसेजेसेसुरऋष
मेंजमांईसकुचातुहै॥ तेजकौनलैसुरकौसीतलसु
नाऊगहौजानतुनकौउकवजायौकवजातुहै॥५४॥
॥दोहा॥ रहिनसकौसवजगतमेंसिसिरसीतकेत्रास॥
गरमभाजिगढवैभईतियकुचअचलमवास॥ दो
हा॥ यहसिसिरितुकौसमयकविकौउक्तिहोइ॥ क
वित्त॥ ससिरमेंआयोजुरिसीतकोप्रवलुजाकेना
सहियसवहीकपतथहराइकैं॥ नाहिनविहरमौते
निकसतजीसरमगरमचलीहियेंहहराइकैं॥ अं
वरअवनिपौनपांनीतजितूलतकौटिकिनतरां

ॐ सखी भगी भहराइ कै ॥३॥ चैत चैत्र चल्यौ

व नागरी के विकट मवास जाइ रहे ठा

॥दोहा॥ तपन तेज तपतात पति अतु

रसौ तु क्यों हूं न घटै विरह लपटैं तिय ना

स सिर रहि तु नाइ कै बोवचनु नाइ कासौं सखी ह

रि विह कौऊ क्रिसोइ ॥कवित्त॥ मोल विसाल कौ अरु

साल दिनेस को तेज इते पर होउ ॥ राखहु क्वार निहलिखु

मैं तन पावक पुंज भगी ठौ स जोउ ॥ मारू कौ सौ तु विर

तु न क्यों हूं कोर रिकु पाइ करै कि निको उ ॥ जो लगि पी

प्रिया स बु जाइ रहैं लपटाइ न ये के द्वेरो उ ॥५५१॥ दोहा

लगति सु भग सीतल कि रिनि निसि सुघ दिन ज्वर गा

हि ॥ मारू ससी भ्रम सूर त्यौं रह ति चकोरी चाहि ॥ दोहा

यह ससि रसी तु क विकोउ निमु सारे ॥कवित्त॥

रमै सीतल कैरो है ज्ञौ रैरी तिआहि धौं मंडू मै चांदनी

चैन कुम हतो है संपुट सरोज गहै कुमुद विका

लिनइकोतोंतिवाहहरतैं॥मेरीमेरीमुप
वेकिरिनिलगतिगतगतिकोविलासमनवेंदा
हीलहतहैं॥ससिकेऊरेकोसषुमनिसविता
कीओरचैंपसोंचकोरचितवतहैरहतेहैं॥५५२॥
गुवर्नन॥दोहा॥दियोजुपियलषिचषनु
खेलतफागुषियाल॥वाटतहूंअतिपीरसुनक
तुनवनतुगुलाल॥दोहा॥यहहोरीखेलनकोस
यनाइकाकोअनुरागकीअधिकाईसुसषीसषीसों
कहतिहै॥कवित्त॥हरिषेलतफागुवधूगनमध्यस
षासवकेसरिरंगसनैं॥इतचाइभरीवृषभानसुताउ
मगोहरिकेउतमोदमनैं॥जवैनैननुमैतकिगस्यो
ना अपनेकरसौंवहराइघनैं॥अतिवारतिहैजउ
रतेउनहकारतपेनगुलालवनैं॥५५३॥दोहा॥
ठिदियैहीनैकुमुरिकरघूंघटपरटारि॥भरिगुला

को मूठिसी गई मूठसी मारि यह होरी खेल

कौ समय नाइका कौ सो भा नाइका सखी सौं कहतु है

मो पै कहू कहतै न बनै नारि जैसी हंसी बुजन

रि गई है पीठि दियें ही मुरि मनु लै वह फागुन खेलनि

नारि गई है घूंघट कौ पट टारि कै मोहन ऊ सारि कै नैननि

हारि गई है यौं भरि मूठि गुलाल सौं प्यारी अचानक मूठि

सी मारि गई है ५५४ ज्यौं ज्यौं पटु जट कातहं सी

हठी नचावति नैन त्यौं त्यौं निपट उदारहू फगुवा देत

नैन यह नाइका प्रौढा होरी खेल कौ समाजु ना

जु सो भाइ दिखावै है सो भाव प्रौढ है सु सखी सखी सौं कहै है

फागुन खेल कौ समाजु बनि आयौ जैसो जैसो फ

रसना सौं कहत बनै नहैं सांकरी गली मैं नंदलाल कौ प

रि वाल मल भाइ कर तिवराव चित चैन है ज्यौं ज्यौं नह

इ भरी लो चनन चाइ पट जट कि कहत हंसि हंसि दुवै नै

त्यौं त्यौं छिकुलाल जू कौ निपट उदारत उ फगुवा को दै

तउ मानतु मैं नैं न है ५५५ कूट नमूठि जु संग है

लोकलाजकुलचाल॥ल॥ ॥८६॥ ॥ ॥ बनचितु
ऊनगुपाल॥ टीका॥ यह होरी खेलकोसमयसखीसखी
सोंकहतिहै॥ क वित्त॥ होरीकोसमाजुवरसानेकेबा
रयाजुकहाकहोंग्वालीवलिन्नायेनोको ख्यालरी॥र
तिनुवतीगनमेंराधिकाकिसोरीऊतसहितसयानि
वैसोमदनगुपालरी॥क्रूरतमुठीकेसंगकूटतैहैं जो
योवेरगुरजनलोवेलाजलाजकुलचालरी॥केहैं
जविनसहमोहीलागतेहैं हूवतनयेंकेसाभनाऊचि
तलोचनगुपालरी॥५५॥ दोहा॥ ज्योंज्योंजुनिपाप
तिवदनुविहसतिन्नतिसतराइ॥ त्योंत्योंगुलालम्
ठीजुठीजफकावतुप्योजाइ॥ टीका॥ यहहोरीखे
लनाइकाकोचेष्टादेखिनाइकुरीज्योंहैंन्प्रनाइक
जुतिकरतुहैलुकसीसखीसोंकहतिहै॥ क
याजुब्रजदेख्योहोरीखेलकोसमाजु॥ न॰

नैननु मैं रहौ सविहार कै राधा वनमाली कौ विलो

कि अलि सिखयाली सबीम घराक कोरि कगु साल जात

ग रिकै जैसे जैसे प्यारी सुविसुकि फां पतिवदनु विलसं

सति सत राति रिस तौ सो रुसुकारि कै लौ लौं देखि

फ वैवा गवैया कमल प्रांन प्यारे लाल जिकाका

व तुगुलाल मुठी सुठी भरि कै ५५७ रसभि

जहे दोऊ हुनु प्रीति रि करहे टैरैन छवि सौं छिर कत प्रे

मरंग भरि पिचकारी नैन यह दोऊ हुनु कौ प

रस्पर वहो कहुं है सु सखी सखी सौं होरी के ख्याल की

समता दै कै कहति है आजु वृषभांन की कु

वरि मनमोहन नैनन मैं नैनु मैं रास्यो होरी के ख्याल कु

रि कै भरे हित चाइ कोउ चुकात न दाइ टिकि रहे टक ल

इ कोउ जातु नहीं टरि दै भिज्यो वनाइ प्रीति रस मैं प

रस्पर प्रमु अनुराग कै गुलाल रंग भरि कै छवि सव

हैं छिरकत फविसौं छवीले दोऊ नैनन पिचकाई कौ

प्रेम रंग भरि कै ५५८ गिरि कंप कहु कर है

सपसी जिलपटाइ॥ लियो गुलालु मुठी भरी छुटत फुटि
जाइ॥ टीका॥ यह हरी बेलकों समें सषी सषी सों कहति
है जु केसा सिवभाउ कपुहा॥ कवित्त॥ मेरो कहो मानि
कै तले चलिहि विरी कञ्जजु व्रजधूम हो री बेलको अनू
रै केसरि मै सने रसिक रसीले जहा वर वानहां हैं सव सु
नु की लूटि रही है॥ जद्दपि परसपर दो मुष मांडिबे कों ले
आति चाइ सों गुलाल भरि मूठी है॥ कछु कर तें पंकज पसी
जिल पदात कछु कों पैंगिरि जात तौं तेषी लें रति कूटी है॥ ५५०॥
सुन्दर्नेन॥ दोहा॥ रही रुकी क्यों हूं सु चलि आधिक रा
ति पधारि॥ हरति ताप सव द्यौस को उर लगि जगि उरहि विया
रि॥ टीका॥ यह वायु वर्नेन कवि को उक्ति॥ कवित्त॥
कैसी रही रुकि क्यों हूं आवनन पाई जाके विनु मिलें प्रानन्नु
लागति अकुलान्नि है तौ है॥ लोचन चकित जाकों आग
मन विलोकिवे कों चहूं ओर चितवत तौ है तिता तौ है॥ कैसो
ऊ क्यों चलिकैं अचान कहीं आधी राति आइ गई
है आइ जाती है॥ हरति तन पति सवधों॥ ५१॥

ठौकिकसुखसिद्धिसरसातीहै।पद८ ... तुबातस
हमककदकोनतकतत तरबिरमाइ। आवतुरहिनेतेच
ल्योष्यकैमोवरोहैवार ... यहपवनवर्लनकौविकी
ऊति ... बिविमलसलि
लपरसतु
सोरीक्षं हरे
मनुपरागज
केधरेंधरें सुरोभ
सोवरोहीच्यले
नवम स्त्रोकुसम
रहहियवरसिररहे
प्रसंगमैंनाइकाउ
सखीनाइकासोंकहै
कुंजनितेहरहरनिर
सुघरपरागसनीजाहि ... नुकीपांतिदु
कलितमल्लिकाकेजुसमनवीननुतेंनिकसतिसुरभिसो
तसरसातीहै। वरसिरहेकौसीरीआवतिवियारिदेखीपरसि
जारतिवियोगिनुकीछातीहै।पद९ ... रुक्योसांकरे

गकरतुजोभिवजुकिरातु॥मंदमंदमारुततुरगापूंदितु
वतुजातु॥टीका॥यहवायुवर्ननुकविकीउक्ति॥कवि
॥सोहतसिंगारवहुभांतिनुजराऊसाजरंगरंगरंगकुसम
अतिछंगुहै॥करिकाललितभ्रमरावलीलसितिमु
परागटक्योउमगच्छनगुहै॥उपवनतुसांकरेनिकुंज
नेरचतुजोजिसीकरतुजुक्रातुनयौरंगुहै॥पूंरसी
दमंदमलयाचलतैंआवतुपवनकामैरवकौतुर
दोहा॥लपटीपुहपपरागपरसनीस्वेदमकरं
रिनवोटलौसुखदवायुगतिमंद॥टीका॥
कविकीउक्तिनाइकानवोढाकरिकैवर
ननुकीरजअंवरमैंनयातेंसिथलौलप
लसेमकरंदपुहेलगिनेंनदुनें
॥ऊसवैहवहुभांति
भरनावति॥मंदगोंग॥

आरिनु कुंज गली तन आवति ५६४ रचित अंग
थंभावली जरनु दंनु मधुनी के मंद मंद आवतु चल्यो कुंज
कुंज समीक यह वायु वर्ननु कवि की उक्ति
चंद्रनि के सब दस खंड तेई सुनियत गुंजतु आनंद म
यो अलिनु की वृंद है सुमनु समूहनु की धूरि सों धुरै गात म
द जलनु कनि जरतु मकरंद है रंग रंग फूलनु को फूलमैं
पायै तनु जगत विदित पायो विक्रम अग्र मंद है मानत रतो
रि वे कों आवतु सुमांनन स्यो मंद गति पवनु मनोज को गयं
द है ५६५ है जसु धारी धनि कलानिधि
विधी निलगाइ मनो आकास अगस्ति आये के कलोल धार
यह चंद्रोदय वर्ननु सखी को वचनु नाइका सों अगस्ति
याके तलै तें संकेत कें स्थान सूचनु है जाते मिलिवे को अ
धि सूचनु साधारन तें कवि की उक्ति देखि को है
तिया के मयंक को के सौ कला अभ जोति जगी है सो छवि चा
हि चकोरनि को अवली हुलसी हियमोद पगी है यों निरखी

रुनाई लियें ऊपमा ऊविके ऊरमैं ऊमगीहै॥मालहर्यो मञ्ञ

शस्तिके रूपहि देकंकलो पहिलेंई लगीहै॥पद्माद्रो ला॥धनि

हहैं व्रजजहां लयो तज्यो दृगनिदुचंदु॥तुव भागिनि पूरवकै

योग्येह्र पूरवचंद्र॥टीका॥ग्रहचंद्रोदयसषीकोवचनुनाइ
ही

सोंप्रयोजनुनाइकदिवाइवैाचन्द्रजिं रूपमें संभवै॥ न

नेत्रा॥प्रसंगमें॥नकदलालोनिदेखेपरिपूरनचि

निधिसौंहैं [illegible] दुहै ताहि [illegible]

जवदनचोरतिपनिकनकुचिसुंदरताहिसो [illegible]

प्रमंदुहै॥धनियहव्रजजहांनैनेंदृगनि [illegible]

दृगनिको गयो दुचंदुहै॥ पूरवको [illegible]

तुनिरषिचपूरवकै [illegible]

[illegible]

रमाल॥इहिवानि [illegible]

है काा॥यहजीकी [illegible]

रमैं बसे ॥ छवि सों फू छवि सौं सकिरीटि बन्यो र

सालत हियैं वनमाल लसे ॥ कर कंज हि मंजु रली मुरली

छनी कटि चारु प्रभाव रसे ॥ ...स कैं हैं लखि सुंदर मूरति

यों अभिलाष हियैं सरसे ॥ यह नंद किसोर विहार सदा हीं

वां निक मोहिय मांझ वसे ॥ ५ ॥ मोर मुकट कौ चं

दुक निरखौ राजत नंदनंदु ॥ मनु ससि सेखर कौ अवक सकिये

सेवत चंदु ॥ यह श्री कृस्न जू के मुकट की सोभा स

मी कौ वचनु नाइका सों अरु भक्त हू कौ संभवे ॥

ग्रा जुल ख्यो ब्रजराज कुमार सुदेस सिंगार वनें सगरैं हैं

र कौ रीझ कहै न परै अवलोकि विलोचन मोद भरे हैं ॥

स कौ है सिर सोहत मोर किरीट चंद छवि पुंज भरे हैं ॥

नों अकसे ससि सेखर सों हरि सेखर चंद अनेक करे हैं ॥

॥ मकराकृत गोपाल के कुंडल सोहत कान ॥ मनो

धस्यो हिय धर समर डौरो ढौलसत निसान ॥

यह श्री कृस्न जू कौ ध्यान है अरु तत्र नाइका इह रदै मैं व

नपैकीन्नीदयाअपराधीकेहेतुमकोंनऊधास्योकोंनअना
कवंधुभयेप्रभुकोविनुदासभयेतुमतास्यो।ऐसेंईकेसेंप्र
तिकेरोंकविनव्सकोहेहेंपुकारिकैहास्यो॥तूठईतूठेनिसा
फ्रिरोप्रभफूठोईधाकुअनाहकपास्यो॥५७४॥दोहा॥घोरेंई
नरीजैतेंविसराईवहुवांनि॥तुमहूंकांन्हमूनेभयेआजु
कालिकेदांनि॥टीका॥यहभक्तकोवचनुभगवांनसों॥दे
हनाद्वैयतिग्रारतेमेविनतीवहुभांतिकरीकहैनारस
गीन्नी॥कसकपानिधिदीनकेवंधुसुनीअसुनीतुमकारे
केकींनी॥रीकतरंचकहीगुनतेंवरवांनिविसारिमनेतु
भदीनी॥जांनिपरीतुमहूंप्रभजूकलिकालकेदातनिकी
गतिलीनी॥५७५॥दोहा॥मोहितुम्हैंवाठोवहसकोजीत
जदुराज॥अपनेंअपनेंविरदकीदुहूंनिवाहनलाज॥टी
का॥यहभक्तकोवचनुभगवांनसों॥कवित्त॥तुमजेजेता
रेतेतेमोतेनपतितभारमोसोपूरोपापीकोउदूसरोनपैयि
ये॥तुम्हेंवांनिपरीप्रभुअधमउधारिवेकीमेरेंयेकपापहीको
टेकअवरेखियै॥दुहूंनुकोंलाजप्रभुआपनेंविरदकीहपूरी
तम

सोवह सवाटीकौं तुलचि जाइ अब जीतेकौं तुं देषियै ॥५७॥
॥टीका॥ ज्यौं कहौ है त्यौं हौं ऊ गौ है हरि अपनी चाल ॥ इन कौ
अति कठिन है मो तारिवौ गुपाल ॥टीका॥ यह भक्त कौ वच
न अपनौ पापु कहिवे कौ पनु भगवान कौं उधारिवे कौ पनु उ
पावल सौं प्रगट करतु है ॥कवित्त॥ हौं ऊन की गनती मैं न
हौं प्रभु जे तुम तारे ते आपनी गौ हौ ॥ कुसकै है गनतैं न वनै क
छु पापी तिनुकौ परमावधि हौं हौ ॥ हौं नीहै जो कछु हौं नीवै है गति
मेरियै चाल कुचाल तिसौं हौं ॥ वेलतु है प्रभु कै रो उधारिवौ
भूलि लिन कौ जे वृथा है तुयौ हौ ॥५७॥ ॥दोहा॥ कौन भांति रहि है
विरदु अब देषिवौ मुरारि ॥ वौधे मो सौं आनि कै गौधे गौधे तारि
॥टीका॥ यह भक्त कौ वचनु भगवान सौं यह दीन उधारन वि
रदु है सुनि मैं जानि कहतु है ॥कवित्त॥ पतित उधारन कह
तु सुतुकौ उ सो ऊ सांच कू अब वह राइ गौव नाइ कैं ॥ कै है
चिकस जिनि गोरवे भरम भूले है तौ हौं गरुव पापी मन वच
काइ कैं ॥ तातैं आहे पवैरू ये कुगौधु ताते गीधेतु मसौ ईज सुन
यो है जगत वगराइ कै ॥ कौन भांति राषिहै विरदु प्रभु देषि
यैं जू कठिन वनी है अब वौधे मो सौं आइ कै ॥५८॥ ॥दोहा॥
मौहूं दीजै मोष ॥ ज्यौं अनेक अधम नि दियो ॥ जो वांधे हौं तो पुतौ

वांधेंअपनेंगुननि॥ टीका॥ यहभक्तकोवचनुभगवांन
सों किमुक्तिकरो तौवांधिरावोतौ अपनौंकरिराषो॥ क
वि॥ भांतिभांतिआरतकोआरतिनिवारतहौ प्रगटपु
कारतनिगमनगनसाषियें॥ तौतेंक विक्तयसदोनवंधुद
या सिंधजूसों वारवार विनतीपुकारियेंहभाषियें॥ अ
धनअनेक निकोंज्योंहोहीं नोमोषु तुमत्योंहींमोहूंमो
षुदीवोचितअभिलाषियें॥ वांधिवोई जोपैमनमांनोंम
हराजतोजूआपनेंहींगुननुवनाइवांधिराषियें॥ ५४५॥
टीका॥ निजकरनीसकुचेहिकतसकुचावतइहिंचा
ल॥ मोहूंसेनितविमुषत्योंसनमुषरहिगोपाल॥ टी
का॥ यहभक्तकोवचनअपनीविमुषताभगवांन
कौंभक्तनिसोंसनमुषहिवेकोपनुप्रगटकरतु
हो॥ क वित्त॥ जांनिपरेन्नतिहारीप्रभूगतिवेदहू
नीकेंकेभेदनपावें नासंगफिरे नझान्ननिकें
मुनिपोवेंनध्यांनसमाधि ०॥

पन्यो करतूति निहीं सकुच्यो वहुस्यों सकुचावत ॥ सैतु
मसोंनित हीं विमुखेतुम दीनदयालसनंमुखग्रावत
दोहा ॥ नाहरगर जिनाहरगर मे
वोलु सुनायो टेरि ॥ फसी ग्राज मैं वंदि विचरसी सवनु
तनहेरि ॥ ॥ यह द्रोपदी को समयक वि को उक्ति
धारनैतें ग्रामील प्रसंग मैं वंदि मैंरपेच्यपनैपति कैविन
मकोमरासोजां निहसीहे ॥ दोहा ॥ घायुध
ग्रघरसाजें सुभटनु की भीर भारी चास्यो ग्रोरविक
लो येई जातधेरि कैं ॥ नाहरकोगर जगतूर सोंगर जिपी
ताहीसमेपाइकै तेसुनायो वोलुटेरि कैं ॥ वाके ग्रतिविक
मकोभाउजियजांन्यों यरजीतेगो समरु येक येक्के
निवेरिकै ॥ प्रवलच मूके वीच वंदि मैं फसी हेत उ
मगिउद्धारसीसवनुतनहेरि कैं ॥ ९ ॥
दोहा ॥ नहि पावसरिनु राजयह तजित रवरमति भूल
ग्रपतभये क्यों पाइहै क्यों नवदल फूल फूल ॥
यहग्रन्यो क्ति काहू राताके धोवे सूमपे कहू को उचो

तहांकहोयेजगरेकेप्रसंगमैंगढकेप्रसंगहूमैंसंभवे॥कवित्त॥
मघवाकेजलसोऊमगिअधकांनोंवहुपछिनुकोंराख्योतें
वसाइसमुदाइहैं॥छोडिचितभूलवाभरोसेंमतिभूलेग्रव
वैसोतोवलवनोठिनोठिवनिग्राइसे॥पावसनजांनिरि
तुराजकोसमाजुयहयोंहींकेसेंहरितभरिलछिविकाइहै॥
सुनितरवरजोत्योंहीरहेनअपतुतूवतोलोंनवदलफूल
संपतिनपाइहै॥पद॥दोहा॥कोछूटेग्राइहिजालपरिकातु
लंगअकुलातु॥ज्योंज्योंसुरजिझज्योचहनुत्योंत्योंउरग
तुजातु॥टीका॥यहअन्योक्तिसंसारजालअथवाप्रेमजा
लकेवंधनमैंकहिये॥कवित्त॥तवतोनजांन्योंलगिला
लचलुभ्यांनोंचैंअवपरवसपरिकोहपछितातुहै॥क
हैंकविकवसयाकेवंधनकीयहरीतिनेंकअटकतअंग
अंगवधिजातुहै॥रेमयोंतपछेरूकोअछूटेनाइंहिजा
लपरिकाहेकोंतूवावरेकुलंगअकुलातुहै॥ज्योंही
ज्योंहीसुरजिझज्योचहनुत्योंत्योंव

होइथैसोजैसंजनुजानुहै।५८३।[illegible]।३।होइ
गथितूंलघगावैनिसांक।जिहिंपहिरैंजगद
लसातिहसतिसीनाक।[illegible]।यहग्रर्थ्यो।
हूसेपलसोंग्रथवागुनसोंग्रधिकसोहतुहेइ
रिये।[illegible]सुरलिसमेतलाकयाहेसोंवा
वमुलिछुतमुकतिपुरीसोदरसतिहै।कैकवि
मनमेंरलकोंमोहिवेकोंमोहनीकोसिद्धिमानें
भासरसतिहै।तोहिपहिरैंतेजगनयनग्रसतिया
कैविवरसतिमानोनासिकाहसतिहै।ग्रहेलघकौ
निसांकतूंगरवुकीरहै।सेमुकतावेगघसहितलसं
है।५८४।[illegible]।वेसरमैंतोधनितुहींकोपूछैकुलज
ति।पावोकारीतियग्रोरकौरसुलिधरकोदिनराति
यहग्रर्थ्योलिकोजग्रोछेकुलतेभयोलघुम
सुग्ररुवडीग्रोरजाइपहुंच्योसोइतहांकहिये
कौंनविनातुकरैकुलजातिकोजीवनग्र
ईजगमेंगनिहै।सवतैंवडभागीतुहींग्ररुग्राई

ज्यों वनितें हीं लसो कतपूरवका
केमुकतातनि॥ द्योसनिसां तियको।
नुलीकें निसांकें पीवाकौ जिनि॥ ४९५
पाइतसनिकुचउच्चपदुचिरमिठे सवुग
ठौररहिर वैर जुहोमालुद्ध विलाऊ॥
ज्यों तिलघुमानकोंवड ठिकानैंपरुच्यौं तलक
बिना सुद्धिमेवरालघुनामुभई उकतपातिन
नमर्यानें॥ कौनहूंभागिलसो घुघचीनवनाग रिके
कुचउच्च ठिकानै॥ याहीतमोसोसवैजगकोमनुतोहि
गुमानुसरोग्राधिकानें॥ गेरद्धतें रहिजैहे वहीमुव
कालिमारंगवजारविकानें॥ ४९६॥ दोहा॥ नहिप
रागुनहिमधुरमधुनहिविकासुइहिकाल॥ अलीकली
ही सौवध्यो आगेंकोनहवाल॥ टीका॥ सखीनाइकाके
तनमैंअवहींजोवनुआयोनाहींनाइककोआसक्तिप

सखीसु सखीसखींसोंकहतिहै नाहिपरागुन
रामकरंदअरुजैसोंप्रगटीन सुवासुविकासर जानेंभ्रौंगों
चौंद्विहैकरामतिअैसोपग्गअवहीं इकग्रासर फूलीघनी
कुलवारिरसालपैकाहूकोनैकनमानतुतासर तीकर
लीभतिकंजवल्लीपैमलीमडरातोरहैनिसवासर
मोरच्यंद्रकासांमसिरचढिकतकरतिगुमानु
लखिवीपाइनुपरलुटतिसुनियतुराधामानु
यहअन्योक्तिकोकुलधुमानसुबडोठोरपाइगरबुकरैतो
कोमानभंगहोतजानियेंतहांकहिये घनसो
मनेंआपनेसोसेपरासीवनाइकेंचाइकचाइनुसोंधरिहै
जिनियाकोंतूजीमेंगुमानुकरैअवलोसवजोमनलीपरि
हे वाहिकोहकोंमोरकीचंद्रिकाअैसोडिठाइकेठाररहेटि
रिहै वृषभानकुमारिकोमानसमैंतरवानितेरलुटि
वोकरिहै जिनिदिनदेखवकुसमवीइसु
वीतिवहार अवअलिरहीगुलावमेंअपतकटीलीडार
यहअन्योक्तिकोअधनवानुनिर्धनभयोतहांधनकेलो
भीजाचकनकोकहिवोभ्रमरकेप्रसंगकेंगतयौवनहूकों
कहिवोसंभवे जबतेहातउदितरितुराजको
प्रतापुतीवेंकहैंकविकवसजाकोविकमअतिअपार

सुमनरआनु उ
इनिवाटिकानिदेवेहेसुंदरमृदुसरल कुसमभर
पभार॥ उहीं आसलागेपोइ तआवतु चल्योज्यों अलितोव
वितीतभईओसरउहींवसार॥ गंधलुब्धदुतापरागकोनले
सुरसोंभ्रवरहीअपतगुलावकीकटीलीडार॥ पच्छीसेना॥
वरकिवडाईआपनीकतचातुरमतिभूल॥ विनुमधुमधुक
रकैंहियेंगडेनगुडहर फूल॥ टीका॥ यहअन्योक्तिकोउगु
नहींनेहेओरगर्वुअधिककरतुहै तासोंगुडरकेफूलकोप्र
संगकारिसंनेवेकोंदिला॥ कहाजोपायोसहजअ
सनरंगुउमगिललितछविरहीतनछाईहे॥ वहिकि वहवि
चितआपनीवडाईमेंतूकाहेकोंरचतुगरवगोपीनपाईहे॥ ज
हिसुलेवेहीकेचुसवेकोलग्योहे सोक्योंसुमनुसुगंधता
तोपेमडराइहे॥ गुडहरफूलइतरातुक्योंतूंफूलिफूलि
नुमकरंदअल्यो फूलिफूलभाईहे॥ ५॥ दोहा॥ स्वार
रास
का ५ मु
लिर वांचीदिलमारि

नैकोगुनगरवुहसोसेवसंसार॥कुचउचपदलालचरहे
जेरंपरेहूहार॥टीका॥यहश्रन्यो॥कि अतिकूटीहू जोनेंग्र
नादरसोंरहेतहांसौंकहिवोसंभवे॥कवित्त॥कोटीवेऽ
कुलकीपदवीगुनकीगरुवाईनजोमेंधरें॥क्योंनसेवैह
वोईकोरंजगुपांनिपराज़ निहू तेनहरें॥हारजिहारविको
हिञ्रासविधायोहियोपनटेंनटेंरें॥ कुचउरोजनुकोसु
लोभुहेहियघातेंगरेहूपरें॥५६॥दोहा॥अतिअगाधअति
घरोनदीकूपसरवाइ॥सोताकोसागरजहांताकीप्यास
जाइ॥टीका॥यहअपनोकारजुछोटेहूसौंहोइतहांयहक
हिये॥कवित्त॥कूपगभीरसरोवरवापीकितोमहिमेंन
ञातिवषांनी॥छोटीनदीरुवडीसरितानदजोरचनाजग
सैंनैठांनी॥उत्तिममद्धिमकोउजलासयहोउअगाधिवि
औघरोपांनी॥वाकोवडोकविकहसमुद्रहेजाकीच्यव
जिहठौरसिरांनी॥५७॥दोहा॥विषमवृषादिककीतृष
रैहैसेवजुसोधि॥मरुधरपाइमतीरहूमारुकहतपयोधि
टीका॥यहञाह्यो कि अपनोप्रयोजनुकाहूछोटेतेंहि

छिभयोहोइऔरनवडेकैंवहुतसमृद्धिहेंअरुअपनेकांमनाहींआव
तितहांकहियै विषकोतरनितेंचैविषमकरनिसव
सलिलसुकातकहूंगेंडहोरहतेहैं जीवजंतजलथलप्रबलअ
बलसबअकलपकलहोतकलनलहतेहैं आतपकेतायअ
तिप्यासकेसतायेजलसोधतफिरतप्रांनराखिवेचहतेहैं औ
रसमैंपायेकांहूभागतेंमतीरातासोंमारूलोगजलनिधि
माइहीकहतेहैं ५५ प्यासेदुपहरजेठकेजोयेमतीरखु
निधि अमितअपारअगाधजलमारोबूडपयोधि य
हअन्योक्तिअपनोकारजजेसेंतेसेंसिद्धिभयोपाछेंसर्वसंपन्न
मिलेतहांकहियै कोनकांमजगतमेंतासकोवडाई
जोतेंकछूगरजसरेनाहिकोंनकूपनमेंछोटहोतआपनोसक
लहोइकाजतोपैवाकीपरतरऔरकोंनत्रभुवनमें जाकेप्रां
ण निदाघकीत्रबामेंबांमतीरपाइवचैसियराईभई
में ताकेआगेंकहेकोउसागरकीवातऔंडोसलिल
अपारकैसेंआवैवाकेमनमें ५६ कोकाहिसेवेंव
डेनिसोलवेंवडोयोंभूल दोवेरदईगुलावकोउनडारनुये
फूल यहअन्योक्तिकोउप्रवीनमहराजानिजजांनें
औविवेककोंकरेतहांकहियै कोयहवातहैस
वेकछिभूलिवेकांमकरेकरतारनेंजेसे येतोकरीजगकी
रचनापेविचारविनानकरेनहितेसे देवहुकोउउसासें

नसासवडेजुकैंकहू कोमअनेसे॥ दोसयेकटगउर
लावकीफूलसुगंधदयेमदुकेसो॥ प०॥ दोहा॥ दिन
आदरुपाइकेंकरिलैआपुवषान॥ जोलगिकागसरा
धुतोलगितासनमान॥ टीका॥ यहअन्योक्तिकोउदे
दिननुकोवढवारितेंगर्वुकैतहांकहिये॥ कवि
भ्रमरकंठकठोरमहासुरयेकहैलोचनरंगुहैकारो॥
चकहुवतपदिननुमेंअरुभट्टकोसाजुकुचील
रो॥ आदरुपाइदिनादसकोअभिमाननुसोंकछ
चितधारो॥ वाइसजोलोंसराधकोपाषुसु तोलगि
आयुतिहारो॥ प०॥ दोहा॥ मरतुप्यासपिंजरापर्‍यो
सुवासमैकेफेर॥ आदरुदैदैटेरियतुवाइसुवलिकीवे
॥ टीका॥ यहअन्योक्तिभलेमानसकोंदुषुदैजेअरुनी
चकोआदरुहोइतहांकहिये॥ कवित्त॥ देवोसमैकेप्रभाव
कोभाउभयोजगुओगुनहींकोहियोवा॥ वूडिगईगुनव
न्तनुकोप्रगटेअवकूरकुरूप अनेवा॥ प्यासोंमरैपिंज
रामैंपर्‍योचतुरैमृदुवैननुकोजुकहोवा॥ आदरुवैं
ऐलिदेवेकीवेरवुलावतचारकचाइसोंकौवा॥
ईहिंआसाअटक्योरे आल

हैफेरिवसंतरितुइनिडारनिवेफूल [टीका] यहअन्यो
केजहांवकछूजानेपायोहोइतहांवेसियेयासालगायेरहे
हांकहियेकाकधुनि तेयहहोइ विवाहीनरोसेवैयार
[कवित्त] वेइनडारनिफूलनु तेजिनकेरसमैंस
नुकुमुलनिको वीतिवसरगई तिनिकोकुसमावलि
येतचुभेनलियांनो ग्रेहे वसंतवहारतेवेयहवासु
कसोरभहीकोविकानो यासयेहजियमेधरिभोंनकु
नावकेमूलरहेमडरांनो १०० [दोहा] परुपावेमधु
कोकरेसपरपरेईसंग सुखीपरवापरु भिमेयकेतुहे
वेहेंगा [टीका] यहअन्योक्तिजोकोउपराधीनअरुप
रुसीनाहीतहांकहिये [कवित्त] भोजनुकोकरवेनि
करैनकरेंजुअधीनहै काहूकीसेवा पांयनुहीकेवेनेपर
यासविसाहकोजानतुभावतसेवा नीकेंरहेघरनीके
सिंसगपूरवपुंन्यनुकोफलनुलेवा कोनहूनातिनिय
पराईसुखीअवनीपैनुहीहेपरवा १०१ [दोहा] व
रेलैसूंघिसराहिहुसवेरहे गहिभोंनु गंधीअंधगुन
कैकोगवईगाहककोनु [टीका] यह अन्योक्ति कोउ
हुनकेतहांकहिये [कवित्त] राख्योहेउधारितेअ
लिकअतरसीगेजाकेमदुगंधसांमहकिरहोभोंनु
ओडिओडिरायसवहीनेलीनोरे छिवेकोसूंघिसू

नुसरा हिग्रेसौं मोलु सुनैं सव हौंनैं रसिकैं मचाई हूं १
धुग हिव तूं करतु क्यों नगों नु हैं अरे गंधी आंधरे हिये
नये तौ चतुकरि गाहकु गुलाब कौ गवेलनि गांऊ कौ तु
॥८०२॥ दोहा ॥ वेनइ सौं नागर वडे जिनि आदर
तो आव ॥ फूल्यौ अन फूल्यौ भयौ गवई गांऊ गुला
व ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति प्रवीन लोगनु कौ समु
दाय सो इगुन कौ वूझ कौ उनकै तहां कहियै ॥ क
विन ॥ चाइ सौं आदर तेरो करै अरु तोहि सौं राखैं हि
ये अन कूल्यौ ॥ तामद सो रमै कौर सुलै जिनि तैं य
ते मोहु रहे अति लैल्यौ ॥ कि मति तेरौ वटायै घ
नौ रिझवार नवे जिनि कौं तकि भूल्यौ ॥ ऐसे गवा
रनु के वस वास मैं फूलिगुलाव भयौ अन फूल्यौ ॥८०३
दोहा ॥ गंधन तूं हरष्यौ हियैं धरि यकलेहि पुजाइ ॥ सम
झि परै गी सीस परपरत पसुनि के पाइ ॥ टीका ॥ यह अ
न्योक्ति ... नौं आवै तरं

काहिये [illegible] सुनिकोनसखीकैलगा ल्लतिगीतजेको
किनकोंठसुभाइनुसों बहुभांतिनुजेपकरों नवनइमन
वैसेवेसतभाइनुसों अबगोधनतूमद्दुमांनिहियैंबहुभां
पुजाइलैचाइनुसों परिहैसुधितोहिसेवतवहींपसपूजि
हैगोजवधाइनुसों ८०४ [illegible] कोरिफुलेलकोआचवन
मीठौकुसराहि गंधीअंधगुलावकोअतरदिखावतुका
[illegible] यहअबसोंजिमूरखजानिवासौंचतुरईजनावत
सोंकहिये [illegible] नगरकेवगरतेंतेरीकूचीटरसुनि
चौंपसोंबुलाइलोगोंकहैआगेंआऊरे वैठासोंनिच
प्रीतिप्रीतिसोंहुकमुकीनोंसोंधोवेसविस्पातिकोहमीहि
आऊरे आचवनुकरिकैंफुलेलकोकहतमीठौतेंन
सोंजांच्योंसुघराईकोप्रभाऊरे काहूकोंऊघारतगुलाव
कोअतरगंधीकहांगईतेरीचतुराईअववाऊरे ८०७
[illegible] प्रतिविंवतजेसाहिदुतिदीपन
रूपनधाम जवजगजीतनकोंकियोकाइसूहमनु
कोंम [illegible] यहसोराजाकोवर्ननकविकोउक्ति

वनु नाइक सोना। सवी दु सो होइ।
वित्त। राजत दर्पन मंदिर मैं महिमंडन श्री जेसिंघ सवा
ई। तैां प्रतिबिंबनि की अवलीन चहूं ओर लसे अति होंड
विढाई। केधौं अनेक सरूप धरैं रवि राजतु मंडली मं
डि सुहाई। मानहुं जीति वेधो जग तैं रचना वहु भूर
की कामवनाई॥ दो॥ चलत पाइ निगुनी गुनी
मानिक सुतिय माल। भेट भेटे जेसाहि सों भागि न च
हैं सतु भाल॥ टीका॥ यह राजा को दान कवि कीठकि॥
॥ कवित्त॥ दीजत भगाइ के तुरंग रंग रंग निके तुरत भंडार
पहुं पाइ तुसों भरिये॥ कि मति विसाल साल सुवरन
लाल लाल हीरा मुकताहल बकसि ढार ढरिये। गुनी
न गुनी सव को जतनि हाल हाल जाचक की विपति
नेक भांति हरिये। भेट भैऊ विपति सवाई जेसाहि ज
सो तु वड भाग फल भागु करा करिये। दो॥
तिन रनज यसाहि सू पन विलाषन को मोज अ
नेरा घर हू चेल लैं लावन को नोज। सो॥ यरा

भानुरतोग्रहसानुको मुदतन्धुकाऊ

कूरमसवाई जयसिंघ कें अंग जग मगनु हिनसकोसे

जग्यांगयांगमें लाग्योइहनु नितअमरविजेकोचा

संतुकरिवेकोमनुरहतुउमंगमें परदलुलायनुके

अपकोवदनुलखिसवसुखरहिनसवनुरनरंगमें

ग्रामरनजानेसोउलाखेनुलरहतुवसुजाचेंसोअजा

चीहनुमोजवेंपुसंगमें ९० सांमासेनसयांनसु

सवेसाहिवेसाथ वाहुवलीजयसाहिजू फतेतिहारे

हाथ यहराजाकोजयसिद्धिवरननकविकोउ

ते जगमगोहिल्लीछत्रपतिकोप्रतापुनर

खंडमेंअखंडदोवेअरिनुकेमाथेहै तेरईउदंडभुजदंड

केभरोसेंसोउरहतनिसंकअवदातुयहगायैहै सुभट

भाजसामासयनसमाजसुषसेवेसवभांतिनुको

हिजूकेसाथैहै रहतिसवाईजयसिंघमहाराजसदं

अमरविजेकीसिद्धिरावरेईहाथैहै ९१ अनीव

डीअमडीलवैंसुसिवाहकेभटभूप मंगलुकरिमांन्यो

हिवैंमोमुह मंगलरूप यहराजाकोसूरताअ

वीररसु कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सामरेवारे
म
उ मडिअमित दलसइ यदसु भट महा विक्र निधान
गुंगरजे गरूर गेहे निपट निकट आइ विकट कुवेड
साधिव रखत वाने है ॥ सारसी सवाई जैसा हि भूप
ससमै वीररस राख्यो थिर नयो तिहि पानै है ॥ उमगि
उद्धार महा मगलु के मान्यो हिये वदनको रंगु
मंगलसमान है ॥ २३ ॥ दोहा ॥ योंदलकोट वल
कै तैन वजयसिंघ भुवाल ॥ उयआघासुर के परें ज्यों
गाइ गुवाल ॥ टीका ॥ ग्रहराजा की सूरता अरूपरें
कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ ये करसनासों मो पैंकै सकै
परें जेते विक्रम अमित कोन जपति सवाई तें ॥ केस
अघासुरक्रौं ते राख्यो व्रजुर जैसे तैसें हसन गिलीनी
कौं उगिलाई तें ॥ जे जियानि वास्यो दावानल सों
नदुख वलु कें विपति हि रवान को वहाई तें ॥ कालो
चाल्यो काढि दूरि कीन्यो मुरहक म कीरति प्रभा
गुन्यो पेयो कीची उजराई तें ॥ २४ ॥

दुलौ देति असीस सराहि पतिनु राव वाह चुर

बी जयसाहि ... यह राजा को पराक्रम सब पे अपका

र सुकवि को उक्ति ... चायो र तउ मुडि अजीतसि

घ औरंगजेब डाइ रतु संगले विरुप सुभटनु के समाज कौ कौ कवि

न लखि दिल्ली के प्रबल दलनि के से समल साजै समर के

साज कौ जैसे समै वीर विसु मेस के जानवारु रायो

तै डूगौ लाज करि के रन लाज कौ घर घर नुर किनिहि दुलौ

मे मिलि सब देति है असीस जयसाहि महाराज कौ ...

... रवि वंदी कर जोरि ये सुनें स्वामि

वैन भये लौहें सब नु के गति अनवी हैं नैन ...

प्रकास प दस वीरहन समय सबौ को वचन सबौ सौ प

हि बीउ ... गोपव धूनि के बीर चुरा इक

न पे जाइ चटौ हरि जौ है हाथ सो गहि पाइ के वस

कुवी सत राइ के आगति तौ है देव रिवाकर को कर जोरि

प्रनाम करोक ही वात र सौ है यौ सुनिकै सुर सौ है न

ई सब को जानि ये राजु हती अन सौ है। ९९७ ... प

रतिय दोसु पुरान सुनि मुल्ल कहि सौ मुसिकानि कसु

रराधौमिश्रनेमृदुहासमुसिकानि ॥ टीका ॥ य
हासपरसपोरानीतकोपरिहासकविकौउक्ति ॥ ज
विनि ॥ पंडितरसिमाजमेंबैठिकथायोपुरानप्र
गमेंभाषी ॥ जातुनिरपदवीसविसेपरदारसौंजो
रतकोअभिलाषी ॥ सोसुनिकैमुलकौमगलो
वनिजासोंहोंडीठिमिलाइकेराधौ ॥ मधूजूचाहि
विलोकतहांऊमगोमुसिकानिमरूवारराधौ ॥ ५९
टीका ॥ चितपितमारवजोगुगुनिभयोभेदेसुतसो
गु ॥ फिरिहुलस्योजियजोतिगीसमज्योजारजजोगु ॥
टीका ॥ यहहासपरसजोतिगीकोपरिहासकविकौउ
कौव्रविनि ॥ पूतुभयोइव्रजोतिगीकैग्रहसोधनुसो
चितमेंहुलसानो ॥ डीठिपरयोपितघातवजोगुवि
चारिहियेंजतिहींअकुलानो ॥ जारजजोगुलख्यो
नवहीमुलक्योउरमाझिहुलासुसयानो ॥ मूलिग
योदुषुरूलिकउठ्योमुसुआनदपुंजुहियेंअधिको

नौ॥२५॥दोहा॥ बहुभनुलै ग्रहै संकुचै पाँवदे
सखा हिं वै खवपूहरि भेदरसौं रहौं नाह मुसचाहि॥
॥ यह हास पर होस वैरको परिहासु कवि कोकि
॥ विप्रचिनारसा के भेदमें मोह वैर कुतो
रखा रसहौंनौ॥ ॥ नपुंसक कों वह काह धनो भ
लै व हुतै परसौंनौ॥ पायौ पूछ बढावतु है चितव
लि कल्लोलकौ आजत वौंनौ॥ ये वातियां सु निर
वौतियापतिके मुखआदचितैरसिदौंनौ॥२९॥
॥ ऐवर फूलहनै जु सुख ऊठै हरि विय गहु लि
हसौ करति ओमहि हिय लिहु दे हद सौ रिनि भूलि॥
॥ यह नाइका परकिया मुदिता देवर सौं ग्या
न लिहै सु सखी सखीन सौं कहति हैं है पैत्र सहास
संचारी है॥ ॥ खेलमें देवर के करके वे
नहीं फूलनै गेंन वलातन॥ ॥ नदु पुंज ऊमें गित
फूलि ऊठे त्र्यतिको मलगातन॥ हेरह दे सौं रिनिचू
नौ उपचार सवौरे लै है भेदकी वातन॥ ज

जैयकीवतियारसविग्पतियाहसिहरतिनातन॥९१७॥दो
हा॥ओरसेवरुरवीहसतिगावतिभरीकुंहाह॥तुहांवरु
विलबीफिरे क्योंदेवरकेव्यार॥दोहा॥यह्नाइकाप.
रकियागुरजनकोवचनुदेवरसोंप्रीतियहक्संगि॥द
चितहा॥तुहासवसाजैयनेक्रसिंगारवनोठनोकोलेकु
नासउमारे॥गोवेरहसेहरखेवरखेसुषकाइकीसंक
धरेचितनाहे॥भोनमेंमंगलसाजभरेवहुसोई
लखेहेसवजोचितचाहें॥देवरकेइहिव्यारवरुहै
लषीसीतुहीलषियेक्रहिकोरें॥९१८
नारस॥दोहा॥सेमेपलटिपलटेप्रक्र
तजेनिजुचाल॥भोचवकरनक्र
कपूतक्रलिकाल॥दो॥
भवेकलिजुगका

१ रिकरौंविनतीइकसारभयोसिगरैजेगुजोऐ जगतिस

मोपन्तैट प्रकतैसोफिरिक्योंनसुभाऊतजेसवुक्रोऐ

आरतसिंधुदयाकोसमुद्रअनाथकोनाथकहावत

सोऊ हौं भयोदेवेमहानिरदेकालिकालकपूतहि

आवतसोऊ ६९ [illegible] दीरघसासनलेहदुषसु

षसांईहिनभूलि रहई दई क्योंकरतुहैदईदईसुकवूलि

[illegible] यहकरुनारसुभक्तकोवचनुआपनेंमनरे

[illegible] जोतूंदुवुल्हेहतोतूंजिनिअकुलाइलेलेदीर

उसासचितचिंतामेंनडुलिरे सुसुतोलैहैतोसव

भांतिसावधांनरहिसंपतिमगनह्वैकेंहरषिन

लिरे चिरनररहतऐतोदुखसुखहोतजातकस

नामवकोसुरतिनभूलिरे काहेकोंकरतग्रीति

२ तुहैरदईदईदईजोदईसोभलीभांतिसोंकवूलि

दियोसुसीसचढाइलेयाकोभांतिअयेरि

जोपेसुषचारुतलसोताकेदुखहिनकोरि॥टे॥का॥य
हभक्तकोवचनु आपनेमनसो॥कवित्त॥रावितृवा
जोकोविसा(स्वा)सुहियेस्रुतिजाहिसदापरिपूरनटेरै॥रव
तेराउभरेपलयेकेमेजोयहलेपकृपाकरिहेरै॥जोक
कुतोहिदयोजगदीससोसीसचढाइकेक्योनअर्यैरे
जोपेलयोसुषुचारुतुहैअबताकेरहैदुषकोजिनिफे
रे॥२४॥दोहा॥कीजेचितसोईतरेजिहपतितनुके
साथ॥मेरगुनऔगुनगुननुगनोनगोपीनाथ॥२५॥
का॥यहभक्तकोवचनुभगवानसो॥कवित्त॥निग
मपुकारतकेवंधहरिहरितुमसरवरकोसरनइसारो
निहारिये॥असरनहरनदुषदंदनातेकहु अवतेरोव
रवारदाढिकोनसोपुकारिये॥जैसेतुमतारेपतित
तुहैअनेकपुंजकहेकविकव्यासजेसेमोहूकोउधा
रि॥

रिये कीजे चितसोई जामे होइ निरधार प्रभु मेरे गुन
औगुन कछू न उर धारिये ८८ भजन कसो
ना तैं भज्यो भज्यो न येको वार दूर भजन जातें कसो
सो तैं भज्यो गवार यह भक्त को वचन आपने
मनसों मेरी तो सो प्रभु नीच प्रभु नीकी
तैं मन और मतो अग गयो रे मैं कही वा हि भली विधि
सों भजितूं इहि तें भजि दूरि भयो रे जाकी कही आति
हरि भज्यो रहि सो तें भज्यो हितु साजि न गयो रे जस
को है यह स्यानपु तें सबु ये कलौ वार कहत तें वियौ रे
हरि को फिस्यान पै उह्ल लो भफि स्यो सव देस
मनु न भयो कहुं उजरो भय उजरे के सम य
ह भक्त को वचन मन सों जल थल
पक है जन प्रतपाल कहै विघन निना सकज्यों
मर दिने सरे तीनि लोक की ज्यों मूढ तैं न ताको

कोंचीन्होरसविषियनिसोंभीनोंतैलेवांनैगै
सेन्हेसरे॥कोंहैकविक्रसमनन्ह सांच्नतिरात्दि
रसोहरिकोंविसरिगयोफिर्योद्देसदेसरे॥पेंहेहै
नगवनुकीनोंकरजगश्राइलीनोंतूनसेतभड़ै
सिरभयेसेतकेसरे॥६२४॥सोरठा॥मिंसमुंभोंवि
धारग्रहजगुकाचोकाचुसो॥पेकेरूपञ्चपारमोवि
वितलविश्रेजरो॥टीका॥यहसांतरससवंमईक्ष
हेविथे॥कवित्त॥निपटञ्सारदुसदंदकोञ्चगार
रभांतिभस्योभयभ्रमनिकेभारते॥सांचेकोसो
स्मोतांपेसांच्योसोनिहारियतुजोलोंलखियतु
कछुथिरनारहे॥योंनोमनमाजमेंतोसम्
सोविचारकरियहजु॥का

र्थ्यारहै॥ जितितितपूरिरह्यौपूरनपुरिसुवरयेवे
रूपुतहांप्रतिविंवितअपारहै॥ ९५ ॥ टीका ॥ मैत
पाइवैतापसौंराख्यौहियोहमांम॥ मतिकवहूंग्रांचैइहं
पलकुपसीजैस्यांम॥ टीका ॥ यहभक्तकोवचनु॥
॥ कवित्त ॥ गावैगुनसेसुजाकौंध्यावतमहेसुमुनिस
चित
धितसमाधिवहुभांतिमनुलाइकैं॥ ऐसौकोउविधि
मोपैआवतिनवनैजातेवसकर्‍यौत्रिभुवनपतिकौं
रिझाइकैं॥ एकवातउरधारिआपनोहियोमेंकारि
य़ौहैहमांमतिहूंतापसौंतचाइकैं॥ ९७ ॥ १५
कहावतुहैदोनवंधुमातिकहूंपलकुपसीजेह
इवौं॥ ९८ ॥ दोहा ॥ व्रजवासिनुकोंऊचितधनु
तुसचितनकोइ॥ सुचितनआईसुचितईकहो
होइ॥ टीका ॥ यहभक्तकोवचनुप्रयोजनुयह

किधांनसुचितईनाहीं॥कवित्त॥जाकोतनसो
व्रनीरदसोदेखियतिपीतपटदामिनिदमकद्योवे
है॥लोचनललितलसेंरसभेरतामरसकुचित
वकअलिअवलिसुहाई है॥ऐसोव्रजवासिनिको
वितधानुहेतामेंतेंनदोनोंमनुमतिविवपरचाइ
कौंनभांतिसुचिताईजियजोलोंतोलोंनाहिंरूप
निकाईव्रहजियमेंनआई है॥२७॥दो॥लोपके
ईंदूलोंरोपेप्रलैअकाल॥गिरिधारीराखेसवैगोगोप
पाल॥टीका॥यहवीररसग्रोजसजेंजनाक्रचल
रिकेव्रजवासीसवराखे॥कवित्त॥लेकेआवलिनाक
निकोप्पोअतिसुरपतिप्रभुताकेऊमनिलपलमि
ग्रैहै॥ग्राहकरिकदीवारिवार[illegible]
वैंग्रैसेचलनचल्योग्रै है[illegible]
करारघनमानोमस्सप्र[illegible]

मितनं देखे सुवनकर गिरिधरि गोपी ग्वाल गाइ वद्र सबही
च्यायेहैं ॥ टीका ॥ प्रलै करन बरसन लगे जुरि जल
रइके साथ ॥ सुरपति गर्व हस्यौ हरषि गिरिधरि गिरिधारि
थ ॥ टीका ॥ यह वीररस गोवरधनकौ समये हरषि
रटे तेउतलारु सुय्यौ है ॥ नायिका ॥ प्रलै के घुमडि घनश्र
ब्रजमंडलपै मंडिकै अखंड धारलायौ उरत्यति को नि
थि विकल भये गोपी ग्वाल गाइ सब काहूकै हियै मैं रही
धीरजु न रति कौ ॥ ताही समै जसुधा को लालु औसो ह
यो
लुदे खिहरखि हरेयाभ ब्रज की विपति को ॥ पात लौं
ठाइराष्यो गिरिवरु पानिपर दूरि कीनो सरव गरब सु
रपति को ॥ दोहा ॥ भयरस को लक्षण ॥ कहत न देखे
कुवत कुलाति यवकल हडराइ ॥ पंजर गत मंजार टि
म सुकलौं सूकति जाइ ॥ टीका ॥ यह भयरसु देख
कौ ब्रजताल सपीको चचनु सयो सो नारजा खकी
॥ कविता ॥ देखरु चपल चित उरमै कुभाउ धरिक

सोवातयसोंदिनुरातिहै॥कोंक विक्रसयर
मसुसीलवालसकुचिमनहींमेंमनुहोय
लातिहै॥कहिनसकतिकाहूआंनसोंहियेकी
दुकुलतियकुटमकेवलहिडरातिहै॥निप
विलाउकेपेवरूपिजराकोजेसेंजैसेंयहवा
निसिदिनसूवीजातिहै॥६३॥अद्भुतरस॥
हा॥मोहनमूरतिस्यामकोअतिअद्भुतगतिजो
॥वसतिसुचितअंतरतउप्रतिविंवितजगहोइ॥
का॥यहअद्भुतरसभावानकोन्यायकतावर्न
नुभक्तकोवचनु॥कवित्त॥जैसीनअंगरतिहूपुर
मैंद्रविजेसीवानरकिसोरमेंदेषी॥ताहिविलोकि
मनोजकीमूरतिकोवरनेअतिरूपविसेषी॥और
कहाकहेंसुंदरस्यामकीअद्भुतरीतिसरोअवरेषी॥

अंतररासौवसाइहियैंकौतउजगमैंप्रतिबिंबितरे

सौ [illegible] तियकैतकमनैंतौपटौबिनुजि

हिमौहकमांन चलचितवैसौचुकतिनहिंवंक

विलोकनिवांन [illegible] यहअद्भुतरसुसवैकौ

वचनुनाइकासौंनाइककौवचनुनाइकासौंना

इकाकौवचननाइकसौंसवैहूसौंसमैव [illegible]

सौसौंतूंकसंतेप्रतिअद्भुतगतियहतेरीकमनै

तीवरनतनकनतिहै कौंहंकविकल्पयेतौप्रगटवि

लोकियतीभ्रकुटीकमांनजिहिंबिनाहीतननतिहै

तिनमैनैंनकटैडीठिकुटिलकटाछिसरचूकतिन

चलचितवेधकौंहलतिहै तेरीयाविलोकनि

कीनिरापिअनोबीरीतिमेरीमतिप्रतिहितकौं

तिगसनतिहै [illegible] दृगउरझतटूटतकु

टमजुरतिचतुरचितप्रीति परतिगांठिदुरजनहियें

नइयहरीति॥ दो॰का॥ यह अद्भुत ...
इकश्रयवानाइकाकोवचनुसखीसों॥ कवि॰-ते॥
गीरहैमननैमेदिषसाधदईयहरीतिनईद्दुहुंघाती॥
ोचनप्रीतमकीछविसोंउरमैसबुटूटैछुटैबु
ोनातो॥कसकैरतिचोंपवेचाइजुरेहियके
नसहेतुनहांतो॥वेरिनुकौंउरमेपरेगांठिजुनै
वोलिहस्योसनेहकोनातो॥८३॥दो॰सो॰॥तोल
धिमोमनजोलह्योसोगतिकहीनजाति॥ठोडी
डगडोतअडडोरहेदिनराति॥दो॰का॥य
अद्भुतरसैहेद्रष्यानुरागनाइकाकोवचनुना
कासों॥कवि॰॥तेरेंतनराजेवृषभानकी
कुवारिजेसीजेसोछविपुंजतिहूपुरमैनहुहै॥

तामैं ग्रौर ग्रद्भुत रीति ग्रवरे बीताहि सुमिर
मिति ग्रचिरजु कह्यतु है। यक्कारसनासौं
कैहूं तवैनै नक्यौ हूं ताहि लखि मैरौ मनु जागौ
हो
लहतु है। तदपि ग्रगम गौंडौ कैडौ गाडौ गडैराम
नुतौ है बौ च्यौ ठौ जानि कौ ग्रौइ रहतु है छ
याकनुरागो चित्तकी गति समुझै
कोइ ज्यौं ज्यौं हूँ है स्यामरंग त्यौं त्यौं उज्जल
यह ग्रद्भुत रसमतकौ वचनु कौ
नाहूं काकौ वचनु समौ सो होइ तउ सनैं
मि
कैनहुँ माजरहि सुत्रि कै वहनैं
सौरकौउ हितु लाई। प्रांननि मैं तउ सौ
कविताम सकै है सुधि ग्रान न्हहु लाई। य

फोचितकी कछु यद्भुत रीति कहीन हि जाइ॥
डैारहै रंगसांम मैं ज्यों हो ज्यों त्यों त्यों गरै इ
तिऊज्जलताई॥२०॥ सोतरसो॥दोहा॥ज
नकारि मुहतर रहरि परयो इहि धरहरि चितु लाउ॥वि
षय त्रसा परहरि ज्यों नरहरि के गुन गाउ॥२१॥
प्रहसांतरसु भक्त को वचन मन सों भय संचारी॥
वेलो॥ दस हूं दिसानु मा ऊर्ध्वा पिर सो जा को धाकु के
होवाके विक्रम को कहां लों प्रभाउ करौ॥ तिनु का नैतो
रे तिहूं लोक के सकल वलीको ऊपैं नवच्यो वहु किये
हूं ऊपाऊ रे॥ ऐसे कालकारि कैं परयो तूं मुहतरहरि के स
कै ह्यह धरहरि चित लाऊ रे॥ हारि मानि विषय त्रसानि
परहरि मन नरहरि देवै के समझि गुन गाऊ रे॥२२॥ पु
रस्सो॥ दोहा॥ दूरि भजत प्रभु पीठि दै गुन विस्ता
रन काल [illegible]

॥दोहा॥ यहभेत्तकोवचनु जवयाकोंगुनाभिम
तवयातें प्रभु दूरि हैं अस निरगुनतायै है तहींतहे
रहैं यह रीति कलिकाल कै राजानि कौ कहै.
वै॥कवित्त॥ जैसवकै वाविवेक सो रीति प्रभू अरु
गनिवारन सोऊ॥ पीछैदै दूरि रहैं दूरि भेजे गुन
स्तारकै जव कोऊ॥ लोकैही कैयों न लहै गुनमुत्त
साचैकै वारिपचै मति कोऊ॥ निर्गुनता प्रगटे
गुचति है लिवैटै प्रगटै तव दोऊ॥८७॥ ॥दोहा॥
ग्रनेक ग्यो गुन भरी चाहै याखिल्लाइ॥ जोपतिसंप
ू विना जदुपति राखै जाइ॥ ॥दोहा॥ यहपरस्ताव
संप्रति विना है रहति यह अंगि॥कवित्त॥ ओगु
जमरी अति चंचल याहि कै है जियकों विव
नंदकिसोर कृपा करिकैं वह संपति हू विनु जोप
भोया विनु काजु कछू न सरै सवु कोऊ ये हैं
सोभा॥ जांनिये है चित चाहत याहि उ

भवपारावार
कृताक्रतपायौ॥कवित्त॥१॥भवपारावार
उल्लंघिपारकोजाइ॥तियह विद्यायाग्राहिनी
हवीचहीआइ॥टीका॥यहपरस्ताविक संसार
पारकै वेकों ऐकारवीचवरोधहै॥ज्ञानवैराग्य लो
मोहवासनाभयानक॥कवरजलअसुरमनोजजा
लोविकमुभरतुहै॥ऐसोभवसागरूअपारविकरा
महाकैहैकविकवसकोउल्लंघिनिवहतुहै॥साहस
केयेमेधरिजतनअनेककरिसवकोउयाहित
रियारमेचहतुहै॥तरनोकोहविद्यायाग्राहिनी
विकटगहिरावतिप्रवलतातेवीचहीरहतुहै॥५॥
दोहा॥जगतुजनायोजिहिसकलसोहरिजान्योनाहि॥
ज्योंआंखिनुजगदेखियेआंखिनदेखीजाहि॥टीका॥
यहसांतरसभक्तकोवचनुनिर्वेदस्थाईभाव॥नाहि॥
ताहितजिकैभ्रमभूल्योभटकतुवारजातेंलहिय

तु सब वसु बनु को गो तु है। मानि बनसचि हरि भजनी पि
यू बकुंडलो जानि वृजि विषय विसम विषमो तु है जि
नि सब जगत जन्माये भली भांति वहै प्रभु पेन जा
न्यो है सो मोह को ऊरो तु है। देखो जिनि गोविनु है
सब दरसायो ति निच्यो विनु को काहू भांति देखिवो
न होतु है। ९४० कोऊ कोरिक संग्रहै कोऊ लाष
हजार। मो संपति जदुपति सदां विपति विदारनहार
यह सांत रसु भक्त को वचनु संग्रै
कोऊ करोरिक रोस भरै कोऊ लष्षि के लष्षि भंडार को
ऊ हजार कां जोरि धरो वहु भांति लसै मन में सदु भारे
कृपानिधि दीन को वंधु सुर द्रुम दानि प्रताप उज्या
रे संपति मेरें वहो जु दुपत्ति विपत्ति सदां जु विदारन
हारे। ९४१ जातु जात वितु होतु है ज्यौं चित में
संतोषु होत होत जो होइ तो होइ घरी मैं मोषु सुरतवे
यह परस्ताविक कवि को उक्ति

न्तसमैंजैसोयाकोमनुसवठोरतैंसमिटिरहेग्यांनहीं
ोटेकेमेंयेसोमनुसदाजौपरेहैयेकरसतोपैकाहेको
वमतुफिरैचौरासीअनेकमेंकहैवविकासजैसोहो
तहोतहोइतौपैहोइअनायासहीमुकतिघरीयेकमें॥
दोहा॥यहवरियानहीऔरकोतूकरियावहसोधि॥पां
हननावचढाइजिहिंकीनेपारपयोधि॥२॥टीका॥यह
सांतरसुभक्तकोवचनुआपनेमनसे॥कवित्त॥
सागरअपारभोरभारीविकरालगारजदपिपहा
रहूतेंदीरघलहरिहै॥रेमनडराइकेतरांइहैमतिवा
रवारवावरेतऊनतेरोकछूवैविगरिहै॥वाधोजिनि
सिंधुजोहैदीननुकोवंधुजिनसैनपतिकुंजरकौकीनो
घरहरिहै॥राममहाराजधरैविरदकीलाजसोईसा
जिवैंजिहाजकौंनिवाहिपारकरिहै॥४३॥दोहा॥प
रवारीमालापकरिऔरनकछूउपाउ॥तरिसंसार
पयोधिकोंहरिनावैंकरिनाउ॥१॥टीका॥यहसांतर
सुभक्तकोवचनुमनसे॥कवित्त॥जहांकामक्रोधम

संपतिकेजातजातजैसोयाकोचतुरहुतो
आवतुहैसमझिसंतोषकेविवेकोंमें॥३

द्धामनतिमंगलहैंसूजतुनक्यों हूं पारपरिवेकोद
जेहौं सोतुमस्यौसलिल्लहरितामेंकोमको
हैन्सो विकरालमारीभौरत्तुकोनाजेहक्नसक
हैपस्योत्तू विकारमेवसागरमेगयवकछू गौरनउ
पाऊंचितलाऊंहं मेरोवकै ऐमानियाहिसुबहोत
रै गोपतवारोनारिमारमहत्नोवेंकरिनाऊंरधा
हरिकोसतुतुमसोंयहै विनतीवारहजारजि
हिं तिहिभांतिउस्योरहौंपस्योरहौं दरबार
यहसंतरसुभक्तकोवचनुभगवानसों
हौसतुकोनगैरदयानिधितेरोईयेकु भरोसोगे
है वेदपुरानतुकीनु निसा विहियैंधारीयासहु
सत्कहैहौं दीनउधारनवारहौं वारयेहविनतीव
जोरिकहैहौं जैसेंहूतैसेंउस्योउपस्योदरबार
मनमोहनसें
रितिहारेरसहौं ८५
कारितूंघनस्यामसम्हारि कुंजविहारीसोंनि
यहभक्तकोव
गिरधारीउरधारि
नसोंब्रह्मानवतीनाइ कासोंसबीकोवचन

मैसे।। कवित्त।। मेरो कैसो मानि मन मोहन
।मोहु करि सुंदर वरन घन स्याम को सम्हारिलै।।
ज वन कुंज के विहारी सो विहार करि गिरवर
धारी सुखकारी कर धारिलै।। भूलि हू कै चित त्र
वृथा वार मेर चावै मति यौ है कविचंद्र यह सु
मति विचारिलै।। थिर न रहतु यह जोवनु न तनु
तनु जानि व्रजजीवनि सो चोप तुरघा रिलै ९५
दोहा।। जपमाला छापै तिलक सरैन येकौ का
मु।। मन काचै नाचै वृथा साचै राचै रामु।। दो
हा।। यह परस्ताविक जोलौं मन मै कपट है तो
लौं उपर को स्वांग का मन नाहीं चावतु।। कवित्त।।
दै के मनोहर माल बनाइ कै माल धरो कर मै किनि
सो लै।। छाप निसो तनु मंडित कै उर ध्यानु लगा
इ रहो किनि कौ लौ।। नाचतु नाच वृथा कवित्त

कवचाइहिरतैनंनरि नैलैं कानुकहूईहिने
सैरलहिलोचरयोमननाहिनैनासैं ५७ [illegible]
चयनैन्यपैननल लगेवाहिमचाबुतलोर जैसैंना
कौल्लहबोहुहैकनेदहिनोर [illegible] सुरूनकेवा
चनचहलनवैकोचुभि [illegible] येकगोजरनजूंहथहि
होत [illegible] जो नेचयपैनेचुपैननालगि
नैर्हवचवाहुबुगोनरनैसबकौ बहसेइहैनंहको
नैरचुसानचुहैरेजुचरारचरनैं बरनैननिंगकिंकि
नैरहवहनचुद्मालिनमातुहैस्तानरमै जिपुस्त
चनैकाहुकेनिवालकेरापरियाइमिलैननलाल
हैनै ५६ [illegible] पाइलपोइलनौरहैलैनेहुनै
लिकलाल नेउरहुकौमालिहैवेहीमानिनि
मान [illegible] यहहुन्योहि नौहैत्रहधनुकैहै
इहनैचाहैठारर्हैगोह्हुहमहैलैमालसुहहनि
रमचुहैतलक्रूचेइहोररहैगो [illegible] जो

हिठोरकेलाइकैरै तिहिंकोवसवासुतिहोथलैक्ष॥
है॥ देवोनिहारसिंगारकेभेदमेंदेवियेवातप्रत
च्चयेहैहै॥ जदपिलालअमोललगेपेतउपाइल
पाइनुहीलगिरहै॥ हैवरभोउरकोविदुलीतउ
भामिनिभालहीपैदः पैरै॥ ५४ ॥ देहा॥ अ
ओतस्योनाईरसोश्रुतिसेअतइकरंग॥ नाकवासुवे
सरिलसेवसिमुकतनिकेसंग॥ ५ ॥ यहप्रस्ता
विकभक्तकोवचनुप्रयोजनुयहइकरंगश्रुतिसेवनु
रसोसुतस्योना होअसवेसरिजुनाकचेसमानहोति
न नाकवासुपायोकाकुध्वनिकेरततेवेरकोदोखुदू
रिहोतुहेश्रुतिकानहंकहियेतोसभैवे॥ कविहृता॥ संग
लग्योयेकरंगश्रुतिहोको सेवनुभरोसोधारिधारिजियअे
सोनेहुनसोरि॥ कोरिकविकहयतासोसबुकोउकहतु
है अजहूलेंतस्योनाहीतस्योनाहीरसोहै॥ प्रेमकेप्र
भावकीरहलेअधिकाईजाकेचितआइतिन्हीपरमप

दुगहौहै निमलसुढारमुकता निसंगवसिलसिन
ककौनिवासु देषीवेसरिहृगस्तौहै ।।६५०।। दोहा ।। क
निग्रारेदीरघनयनकि तीनतरु निसमान वरषि
तवनिग्रौरैकछू जिहिंवसहोतसुजांन ।। टीका ।।
यहप्रस्ताविकग्रन्योक्ति हूवनैनकविकोउक्तिन
षीकोवचनुनाइकासौं ।। कवित्त ।। जगतमैसवसौं
करतसवप्रीतिग्रैपे प्रीतिरीतिजानतजेप्रीतिकै
निधानहैं करतुसिंगारुरचिपचिसवुकोउपैसि
गारकौरिवेकोभेदभाऊमैविलीनहैं ।। ग्रनिग्रारे
जवारेदीरघदृगनिवारीकेतीनतरुनिमहिमेउ
लमैग्रानहैं प्रेमभरीवलचितवनिकछू ग्रौरहै
हैहोतवसजाहिनिरषतहीं सुजांनहैं ।।६५१।। दोहा
जोचाहेचटकनघटैमैलोहोइनमित्त ।। रजरा
जसुवाइतौनेहचीकनेचित्त ।। टीका ।। यहप्रस्तावि
मित्रतामेंरजोगुनलागेसुदूरहै मित्रकोवचनु
मित्र ।। जगतमेंमहगीहेसवहीतैप्रीतियेकसौं

विनुकोऊ ताकोलेसकूनदरसे॥यहीहैजतनु
कविकसयाकेपालिवेकोमानेमतिदायुजो।
तेआदिनिहूदरसे॥जोमेनहचोकनेहियेकोय
केसराखोचातुचटकऊजराईअतिसरसे॥
पोपकाहूभांयाहिमेलोमतिकोरमोतयेसेराखि
सैरजराजसुन्नपरसे॥१५२॥ ॥जोसिर
रेमहिमामहीनहियतिराजाराइ॥प्रगटतज
आपनोयेसुमुकटुपहिरीयतुपाइ॥टीका
अन्पोतिजोमाकोमानसुहेभलेहूरत्नाइक
निरादरसोराखेतसंकहिये॥ ॥जो
भांतिजवाहरलेबहुभांतिरच्योअतिहोढवि
जाकोजगमगहोतिप्रभामतिजाइलेवे
कोल्लचाई॥जाइधरेंसिरभूपनुकोमाहि

कहतु है ॥ मोपै कह्यौ है तैन वृनै चित चा
जैसी विहारि गई है ॥ मैं जव तै निरखौ तव तै ऊरमैं न
साइक मारि गई है ॥ पास जऊ पति रहल गै पात ऊरो
सनेह की पारि गई है ॥ नौ चौ ये ग्रांखिनु सौं इहि ग्रो
नो बी चितौनि निहारि गई है ॥ ५५ ॥ तौ लगि
यासदनै मैं हरि ग्रावे किहि वाट ॥ विकट जटे जौ लौ नि
रखु टै न कपट कपाट ॥ यह सांत रसु भक्त कौ व
सुमनसौं ॥ सरल सुभाऊ गहि संतनु के सं
हि संग हि परमु लागि भक्ति के घाट ग्रौर ॥ छोड़ि ग्रोट
नेगाइ करुनामय के ये ह समुझाइ तो सौं कहतु निर
कै है का विकल तुहां देखि यौं विचारि मन मंदिर में
तौ लौं ग्रावै किहि वारि रे ॥ जटे है विकट वृथा वाद
जंजीरनु सौं जौ लौं खुटे ना हि कपट कपाट रे